दैनिक

जयपुर,सीकर, झुंझुनूं, चुरू,नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित

जयपुर टाइम्स

नई सोच नई रफ्तार

वर्ष : 10 अंक : 127 ■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19 जयपुर, शुक्रवार 30 मई, 2025 ■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162 ■ मूल्य : 2 रुपए ■ पृष्ठ : 8+2

महाराणा प्रताप जयंती पर प्रतिमा अनावरण समारोह

स्वाभिमान और शौर्य की अमिट मिसाल है मेवाड़ की धरा : सीएम भजनलाल

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि मेवाड़ शक्ति, भक्ति, त्याग और तपस्या की भूमि है। मेवाड़ की धरा स्वाभिमान और शौर्य की एक अमिट मिसाल है। इस भूमि पर आकर अत्यंत गर्व की अनुभूति होती है। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप हमारे लिए प्रेरणापुंज है, जिन्होंने सदैव सत्य, धर्म और राष्ट्रहित के मार्ग पर चलना सिखाया है। नई पीढ़ी में ऐसे आदर्शों व संस्कारों का संचार होना चाहिए। शर्मा ने गुरूवार को चित्तौड़गढ़ के भूपालसागर में वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप जयंती के अवसर पर मूर्ति अनावरण समारोह को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि मेवाड़ की इस गौरवशाली धरा की महान विभूतियों वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप, अद्वितीय बलिदान की प्रतिमूर्ति मां पन्नाधाय और वीर योद्धा राणा पूंजा की प्रतिमाओं के अनावरण का यह अवसर इस दिन को स्वर्णाक्षरों में अंकित करता है। मुख्यमंत्री ने वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप को नमन करते हुए कहा कि महाराणा प्रताप पराक्रमी व स्वाभिमानी थे और उन्होंने कभी किसी की अधीनता स्वीकार नहीं की। उनका नाम सुनते ही धमनियों में शौर्य और पराक्रम का रक्त प्रवाहित होने लगता है, मस्तक गर्व और स्वाभिमान से ऊंचा हो उठता है।

मेवाड़ ने त्याग, साहस और राष्ट्रभक्ति से इतिहास को गौरवशाली बनाया

मुख्यमंत्री ने कहा कि मेवाड़ की धरा महाराणा प्रताप के साथ ही मां पन्नाधाय व राणा पूंजा की धरती है, जिन्होंने दुनिया को कर्तव्यनिष्ठा, शौर्य और अनूठे बलिदान का परिचय दिया। आज का यह दिन भी हमें त्याग, साहस और राष्ट्रभक्ति से हमारी सभ्यता को गौरवशाली बनाने वाले वीरों की याद दिलाता है।

महाराणा प्रताप टूरिस्ट सर्किट विकसित कर रही राज्य सरकार

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार महाराणा प्रताप के संदेश को पूरी दुनिया में पहुंचाने के लिए महाराणा प्रताप के जीवन से जुड़े विभिन्न स्थलों चावंड, हल्दीघाटी, गोगुंदा, कुंभलगढ़, दिवेर व उदयपुर आदि को सम्मिलित करते हुए महाराणा प्रताप टूरिस्ट सर्किट विकसित कर रही है ताकि पर्यटक महाराणा प्रताप की शूरवीरता की गाथा अपने साथ लेकर जाए। साथ ही हमारी सरकार प्रदेश में कोच और खेल विशेषज्ञ तैयार करने के लिए महाराणा प्रताप खेल विश्वविद्यालय की स्थापना कर रही है। शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मजबूत और कुशल नेतृत्व में देश राष्ट्रीय गौरव के नए शिखर को छू रहा है। हर वैश्विक मंच पर भारत की प्रतिष्ठा स्थापित होने के साथ ही आत्मनिर्भर भारत को हर क्षेत्र में नई पहचान मिल रही है। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर प्रधानमंत्री की संकल्पशक्ति, अपने नागरिकों की सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है। पूरी दुनिया ने देखा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में नए भारत की सैन्य ताकत ने पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों को मिट्टी में मिला दिया।

जल संचयन व जल उपलब्धता के लिए कार्य कर रही राज्य सरकार

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने पिछले डेढ़ वर्षों में जल उपलब्धता के लिए काम किया है। हमारी सरकार ने पूर्वी राजस्थान के लिए राम जल सेतु लिंक परियोजना (संशोधित पीकेसी), शेखावाटी के लिए यमुना जल समझौता और दक्षिणी राजस्थान के लिए देवास परियोजना को मूर्त रूप देने की दिशा में कार्य किया। हमारी सरकार वर्ष 2027 तक किसानों को दिन में बिजली उपलब्ध करवाने के लक्ष्य के साथ कार्य कर रही है। इसके साथ ही कर्मभूमि से मातृभूमि अभियान में प्रवासी राजस्थानियों के सहयोग से जल संचयन की दिशा में कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने युवा, महिला, गरीब व किसान के रूप में चार जातियों का उल्लेख किया हैं। हमारी सरकार युवाओं को रोजगार देकर उनके सपनों को पूरा कर रही हैं। हमारी सरकार ने अब तक लगभग 67 हजार युवाओं को सरकारी नौकरियों में नियुक्ति दे दी है।

राजनाथ की दो टूकः पाक अधिकृत कश्मीर भी एक दिन होगा हमारा

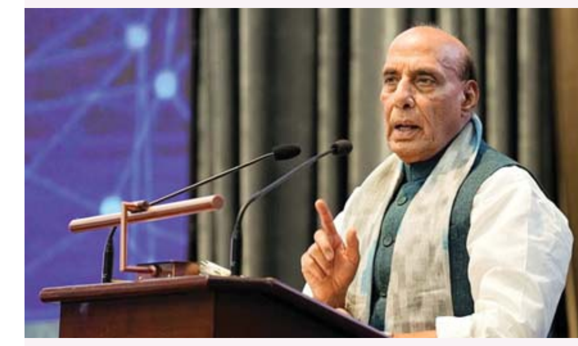

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने साफ-साफ कहा कि पाकिस्तान के कब्जे वाला जम्मू-कश्मीर एक दिन हमारा होकर ही रहेगा। पाकिस्तान से सिर्फ आतंकवाद और पीओके के मुद्दे पर ही होगी। पीओके के लोग हमारे अपने ही है। पीओके एक दिन खुद कहेगा कि हम भारत का हिस्सा है। रही बात आतंकवाद की तो अब भारत इसे कतई बर्दाश्त नहीं करेगा। हर साजिश का मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। रक्षा मंत्री ने कहा कि आपने देखा कि कैसे हमने पहले आतंकी ठिकानों को नष्ट किया और फिर दुश्मन के सैन्य ठिकानों और एयरबेसों को। 'करने को हम कुछ और भी कर सकते थे', लेकिन हमने दुनिया के सामने शक्ति और संयम के समन्वय का एक बेहतरीन उदाहरण पेश किया।' राजनाथ सिंह भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) के वार्षिक व्यापार शिखर सम्मेलन-2025 में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि पूरी दुनिया में अनिश्चितता का माहौल है। हर जगह संघर्ष चल रहा है। इसका मुख्य कारण भरोसे की कमी है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि 'ऑपरेशन सिंदूर में पूरे देश के लोगों ने मेक इन इंडिया अभियान की सफलता को देखा, समझा और महसूस किया है। आज यह साबित हो गया है कि मेक इन इंडिया भारत की सुरक्षा और समृद्धि दोनों के लिए महत्वपूर्ण है। मेक इन इंडिया भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा का एक अनिवार्य घटक है। अगर हमारे पास यह क्षमता नहीं होती, तो भारत की सेनाएं निचले पाकिस्तान से लेकर पीओके तक आतंकवाद के खिलाफ इतनी प्रभावी कार्रवाई नहीं कर पातीं...' राजनाथ सिंह ने कहा कि 'आतंकवाद का कारोबार चलाना लागत प्रभावी नहीं है। आज पाकिस्तान को एहसास हो गया है कि उसे इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। हमने आतंकवाद के खिलाफ भारत की रणनीति और प्रतिक्रिया दोनों को नया स्वरूप दिया है। हमने पाकिस्तान के साथ अपने संबंधों और बातचीत के दायरे को नए सिरे से निर्धारित किया है। अब जब भी बातचीत होगी, तो वह सिर्फ आतंकवाद और पीओके पर होगी। मेरा मानना है कि पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) के लोग हमारे अपने हैं, हमारे परिवार का हिस्सा हैं।

राज्यपाल ने विदेशियों पर लगाया तथ्यों से छेड़छाड़ का आरोप

जोधाबाई से नहीं, दासी की बेटी से हुई थी अकबर की शादीः बागड़े

जयपुर टाइम्स

उदयपुर(निसं.)।। राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागडे ने बुधवार को उदयपुर स्थित कुम्भा सभागार में महाराणा प्रताप जयंती के अवसर पर आयोजित संगोष्ठी में इतिहास को लेकर बड़ा बयान दिया। उन्होंने कहा कि भारत का प्रारंभिक इतिहास विदेशियों की ओर से लिखा गया, जिसमें कई झूठे तथ्य शामिल हैं। राज्यपाल ने अकबरनामा का हवाला देते हुए कहा कि उसमें अकबर ने अपनी शादी का कोई उल्लेख नहीं किया है। राज्यपाल बागडे ने आमेर की राजकुमारी जोधा बाई और अकबर के विवाह को भी झूठा बताया। उन्होंने कहा कि राजा भारमल ने अकबर का विवाह एक दासी की बेटी से कराया था, न कि राजकुमारी से। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह जानकारी उन्होंने सुनी है, स्वयं पढ़ी नहीं है। कार्यक्रम में उन्होंने यह भी कहा कि अकबर के आत्मचरित में न तो जोधा से विवाह का उल्लेख है और न ही महाराणा प्रताप की ओर से अकबर को संधि-पत्र लिखने का कोई प्रमाण है। उन्होंने इतिहास की किताबों में अकबर की तुलना में महाराणा प्रताप को कम महत्व दिए जाने पर चिंता व्यक्त की। महाराणा प्रताप ने कभी आत्मसम्मान से समझौता नहीं किया। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से अब इतिहास को संतुलित रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है, ताकि नई पीढ़ी अपने गौरवशाली अतीत से परिचित हो सके।

पाक की अक्ल ठिकाने आई, भारत से मुंह की खाई

ऑपरेशन सिंदूर ने कर दिया पाकिस्तान के घमंड को चूरः पीएम मोदी

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी)। सिक्किम की जनता को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहलगाम आंतकी हमले और ऑपरेशन सिंदूर का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान को समझ में आ गया है कि वह भारत से मुकाबला नहीं कर सकता। 'ऑपरेशन सिंदूर' में उसने देख लिया है कि भारत क्या कर सकता है। दरअसल, पीएम मोदी सिक्किम के 50 साल पूरे होने पर वहां की पर्यटन विविधता की तारीफ कर रहे थे। इसी दौरान उन्होंने पहलगाम का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि सिक्किम के आप सभी लोग पर्यटन की ताकत को भलीभांति जानते हैं, समझते हैं। पर्यटन सिर्फ मनोरंजन नहीं है, ये विविधता का जश्न है, लेकिन आतंकियों में जो कुछ पहलगाम में किया। वो सिर्फ भारतीयों पर हमला नहीं था। वो मानवता की आत्मा पर हमला था, भाईचारे की भावना पर हमला था। पीएम मोदी ने कहा कि आतंकियों ने हमारे अनेक परिवारों की खुशियों को छीन लिया। उन्होंने हम भारतीयों को बांटने की भी साजिश रची। आज पूरी दुनिया देख रही है कि भारत आज पहले से कहीं ज्यादा एकजुट है। हमने एकजुट होकर आतंकियों और उनके सरपरस्तों को साफ संदेश दिया। हमने आतंकियों को 'ऑपरेशन सिंदूर' से करारा जवाब दिया।' उन्होंने का कि आतंकी अड्डे तबाह होने से बौखलाकर पाकिस्तान ने हमारे नागरिकों और सैनिकों पर हमले की कोशिश की, लेकिन उसमें भी पाकिस्तान की पोल ही खुल गई। हमने उनके कई एयरबेस तबाह करके दिखा दिया कि भारत कब क्या कर सकता है। कितनी तेजी से कर सकता है, कितना सटीक कर सकता है। काबिले गौर है कि भारत ने 7 मई को 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत आतंकियों के ठिकानों पर सटीक हमले किए थे। यह कार्रवाई 22 अप्रैल को पाहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के जवाब में की गई थी। इसके बाद पाकिस्तान ने 8, 9 और 10 मई को भारतीय सैन्य ठिकानों पर हमले की कोशिश की, जिनका भारतीय सेना ने करारा जवाब दिया। इस जवाबी कार्रवाई में पाकिस्तान के कई सैन्य ठिकानों को नुकसान पहुंचा, जिनमें एयर बेस, रडार साइट्स, और कमांड सेंटर शामिल हैं। इससे घबराए पाकिस्तान ने 10 मई को भारत के सामने सीजफायर का प्रस्ताव रखा, जिसे दोनों देशों ने आपसी चर्चा के बाद लागू कर लिया।

नड्डा के दौरे के बाद मदन कर सकते हैं ऐलान

राजस्थान भाजपा संगठन की बनेगी अब नई टीम, जल्द घोषणा संभव

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। प्रदेश भाजपा में जल्द आमूलचूल परिवर्तन देखने को मिल सकता है। नए कार्यकर्ताओं को जगह देने की कवायद शुरू कर दी गई है। अब जल्द ही नई ऊर्जावान टीम बनने वाली है। पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ के अध्यक्ष बनने के बाद से प्रदेश संगठन में अभी तक कोई बदलाव नहीं किया गया है। राठौड़ से पहले पूर्व प्रदेशाध्यक्ष रहे सीपी जोशी की ओर से बनाई गई टीम अभी तक कार्यरत है। नए प्रदेशाध्यक्ष अब नई टीम बनाने वाले हैं। भाजपा पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा जयपुर दौरे पर आने वाले हैं। वे प्रदेश संगठन के पदाधिकारियों से मुलाकात भी करेंगे। नड्डा से चर्चा के बाद मदन राठौड़ अपनी नई टीम का ऐलान कर सकते हैं। वर्ष 2024 में हुए लोकसभा चुनाव के बाद पार्टी के राष्ट्रीय नेतृत्व ने सीपी जोशी के स्थान पर मदन राठौड़ को प्रदेशाध्यक्ष पद पर नियुक्ति के आदेश दिए थे। अगस्त 2024 में प्रदेशाध्यक्ष बनाए जाने के बाद से अब तक मदन राठौड़ अपनी नई टीम का ऐलान नहीं कर सके। वे पूर्व अध्यक्ष सीपी जोशी की टीम के साथ ही कार्य करते रहे। फरवरी 2025 में मदन राठौड़ को निर्विरोध अध्यक्ष भी चुन लिया गया। इससे पहले जिलों में नियुक्तियां दे दी गई लेकिन प्रदेश संगठन की नई टीम नहीं बनी। राठौड़ की टीम के कई युवा कार्यकर्ता पिछले 10 महीने से संगठन में स्थान पाने का इंतजार कर रहे हैं। अब दस महीने बाद नई टीम बनाए जाने की संभावना है। प्रदेश संगठन की टीम में अब ऊर्जावान कार्यकर्ताओं की तलाश की जा रही है। संगठन में ऐसे पदाधिकारी लिए जाएंगे जो पार्टी का नेतृत्व संभालने की क्षमता रखते हों। बताया जा रहा है कि प्रदेश संगठन में 40 से 45 पदाधिकारियों को मौका दिया जाएगा। वर्तमान में भाजपा के प्रदेश संगठन में कुल 33 पदाधिकारी हैं जिनमें 10 उपाध्यक्ष, 5 महामंत्री, 4 प्रवक्ता, 13 मंत्री और कोषाध्यक्ष शामिल हैं। राठौड़ इस टीम को और बड़ा बनाएंगे। प्रदेश संगठन में पदाधिकारियों की कुल संख्या 40 से 45 तक करने की कवायद चल रही है। प्रदेश संगठन में एक्टिव नेताओं को मौका दिया जाएगा। इसके लिए करीब 200 नेताओं के बायोडाटा प्रदेश नेतृत्व के पास पहुंचे हैं। उन बायोडाटा पर मंथन किया जा रहा है। प्रदेश संगठन में 50 फीसदी पदों पर युवा नेताओं को भी अवसर मिलने की चर्चाएं हैं। जो नेता पिछले कई वर्षों से पार्टी में सक्रिय रहे हैं। उन्हें अब प्रदेश संगठन में काम करने का मौका मिल सकता है। 31 मई को पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जयपुर दौरे पर आने वाले हैं।

उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने पर्यटन अधिकारियों को दिए निर्देश

राजस्थान की बावड़ियों व शेखावाटी की हवेलियों के संरक्षण का होगा कामः दिया कुमारी

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। प्रदेश की भजनलाल सरकर राजस्थान की ऐतिहासिक बावड़ियों व शेखावाटी की हवेलियों का संरक्षण करने के जल्द कार्य योजना बनाकर संरक्षण व जीर्णोद्वार का काम शुरू करेगी। उपमुख्यमंत्री व पर्यटन मंत्री दिया कुमारी की अध्यक्षता में शेखावाटी की हवेलियों के संरक्षण व जीर्णोद्धार के संबंध में गुरुवार को शासन सचिवालय स्थित उपमुख्यमंत्री कार्यालय के सभागार में बैठक आयोजित की गई। बैठक में प्रमुख शासन सचिव स्वायत्त शासन राजेश कुमार यादव, पर्यटन विभाग के अतिरिक्त निदेशक आनंद त्रिपाठी, पुरातत्व व संग्रहालय विभाग निदेशक पंकज धरेन्द्र, पर्यटन विभाग के संयुक्त निदेशक (विकास) राजेश शर्मा उपस्थित रहें। वहीं बैठक में झुंझुनू, चूरू और सीकर जिला कलेक्टर भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े। इसके साथ ही वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से इस क्षेत्र में कार्य कर रही विषय विशेषज्ञ भी जुड़ी। उपमुख्यमंत्री ने इस अवसर पर निर्देश दिए कि शेखावाटी की हवेलियों के संरक्षण व जीर्णोद्धार के लिए बायलॉज में भी परिवर्तन किया जाना हो तो वह भी किया जाए। दिया कुमारी ने निर्देश दिए कि झुंझुनू जिले में 267 हवेलियों, सीकर जिले में 268 हवेलियों और चूरू जिले में जो 113 हवेलियों की पहचान की गई है का एक सम्पूर्ण दस्तावेज तैयार किया जाए। उन्होंने कहा कि उक्त हवेलियों के वास्तविक स्वामित्व के समस्त तथ्य जुटा कर सीकर, झूंझनू और चूरू जिलों के कलेक्टर एक फाइनल दस्तावेज तैयार करें। इसमें हवेलियों की वर्तमान स्थ्तति के फोटोंज भी संलग्न किए जाए। इसके साथ ही इन हवेलियों पर किसी भी तरह का कोई अतिक्रमण न हो इसके लिए तीनों जिला कलेक्टर विजिलेन्ट रहें। इसी तरह उपमुख्यमंत्री व पर्यटन मंत्री दिया कुमारी ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मंशा अनुसार राजस्थान की बावड़ियों के संरक्षण का काम किया जाएगा। इसके लिए उन्होंने पर्यटन विभाग और पुरातत्व व संग्रहालय विभाग के अधिकारियों को एक कार्य योजना बनाकर प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि राज्य की बावड़ियों को पूर्ण संचालन हो सके इसके लिए कार्य किया जाए। उन्होने निर्देश दिए कि बावड़ियों के पुनरुद्धार के साथ साथ इनके पानी के आगमन मार्गों को भी ठीक किया जाए। बावड़ियों का कचरा हटाने और डिसिल्टिंग को भी योजना में शामिल किया जाए। उपमुख्यमंत्री व पर्यटन मंत्री दिया कुमारी ने उनकी अध्यक्षता में राज्य की बावड़ियों के संरक्षण व संवर्द्धन के संबंध में गुरुवार को शासन सचिवालय स्थित उपमुख्यमंत्री कार्यालय के सभागार में बैठक में उक्त निर्देश दिए। दिया कुमारी ने बैठक में ह्यड्डह्यष्द्ध में स्वीकृत कार्यों के प्रगति की समीक्षा करते हुए कहा कि समस्त कार्य निर्धारित समय सीमा में पूर्ण किए जाए। उन्होंने कहा कि हेरिटेज प्रकृति के कामों को हेरिटेज कंसलटेंट के मार्गदर्शन में ही कराया जाना चाहिए। बैठक में अतिरिक्त निदेशक पर्यटन आनंद त्रिपाठी, पुरातत्व व संग्रहालय विभाग निदेशक पंकज धरेन्द्र, संयुक्त निदेशक पर्यटन (विकास) राजेश शर्मा उपस्थित रहें।

महाराणा प्रताप समाज के आदर्श हैं-जावली

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। घुमंतू जाति उत्थान अलवर इकाई व मनन सेवा संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में गुरुवार को महाराणा प्रताप की 485वीं जयंती के अवसर पर अलवर नगर में तीन घुमंतू बस्तियां लोहा मंडी लूहार बस्ती, अग्रसेन सर्किल लूहार बस्ती एवं सूर्य नगर लूहार बस्ती में प्रताप जयंती का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सामाजिक कार्यकर्ता अश्वनी जावली ने बताया कि महाराणा प्रताप समाज के आदर्श हैं और हम सबको उनके पद चिन्ह पर चलकर उनसे सीख लेनी चाहिए साथ ही हम सब को अपने घर मे चित्र लगाना चाहिए और अपने बच्चों को महाराणा प्रताप के जीवन के बारे मे बताना चाहिए। शिव राम पटवारी ने अपने विचार रखे। इससे पहले लोहार समाज के प्रबुद्ध जनों से महाराणा प्रताप के चित्र पर पुष्प अर्पित करवाए गए और अतिथियों द्वारा लोहार समाज के प्रबुद्ध जनों को माला पहनकर स्वागत किया गया। साथ ही महाराणा प्रताप के जीवन के बारे में बताया गया इन सभी तीनों बस्तियों में महाराणा प्रताप का चित्र भी बस्ती वालों को ही प्रदान किया गया। वहीं मदन, राजेश लुहार, रोहन लोहार एवं रमेश गुप्ता जिला संयोजक उपस्थित रहे।

किसानों को दी जानकारी

विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत कार्यक्रम हुआ आयोजित

जयपुर टाइम्स

राजगढ(निसं.) पंचायत समिति के समीपवर्ती ग्राम पंचायत नयागांव बोलका में विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के माध्यम से कृषि वैज्ञानिक एवं कृषि विभाग के अधिकारियों ने कृषकों को प्राकृतिक खेती, उन्नत किस्म एवं फसलों के कीट एवं बीमारियों तथा उद्यान एवं कृषि विभाग की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। जिसमें उपनिदेशक (उद्यान) अलवर के एल मीना, नौगांवा कृषि विज्ञान एवं कृषि अनुसंधान केन्द्र से कृषि वैज्ञानिक डॉ सुरेश कुमार लोहरा, डॉ पूनम, डॉ गणेश कुमार कोली, डॉ मुकेश कुमार सहायक कृषि अधिकारी एवं कृषि पर्यवेक्षक मनोज कुमार, बंशीलाल चौधरी, प्रियंका मीणा, रिंकी एवं हिंदुस्तान स्काउट एंड गाइड जिला मुख्यालय कृष्ण अवतार शर्मा श्रीचंदपुरा तथा 200 कृषकों ने भाग लिया।

लोक परिवहन में परिचालक नही दे रहे टिकट

टिकट मांगने पर हो जाते है झगड़े पर उतारू

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। शहर में लोक परिवहन बस सर्विस नियमो को ताक पर रख चल रहे है यात्रियों को बिना टिकट दिए राशि वसूल रहे है यह लोक परिवहन बस वाले यात्रियों से सुविधा अनुसार कम या ज्यादा किराया ले रहे है। ये तो भविष्य के गर्भ में है लेकिन बिना टिकट यात्रा का नुकसान कही नही कही यात्रियों को उठाना पड़ता है वही यदि हादसा होता हैं तो इंश्योरेंस के भी लाले पड़ सकते है वही परिवहन विभाग भी इनकी जांच नही कर रहा है। वही प्रायः देखा गया है कि टिकट मंगाने पर परिचालक या तो मना कर देता है या झगड़े पर उतारू हो जाते है बिना टिकट यात्रा जो कि यात्रियों के लिए सफर को हानिकारक बना रहा है। विभाग इन पर कार्रवाई करे तो यात्रियों को सुगम सुविधा का लाभ मिल सकेगा।

महाराणा प्रताप वीरता, पराक्रम व देशभक्ति की मिसाल- मंत्री शर्मा

वन राज्यमंत्री ने महाराणा प्रताप की प्रतिमा पर माल्यापर्ण कर श्रद्धांसुमन अर्पित किए

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। पर्यावरण एवं वन राज्यमंत्री संजय शर्मा ने गुरुवार को वीर शिरोमणी महाराणा प्रताप की जयन्ती के उपलक्ष्य में मोती डूंगरी स्थित महाराणा प्रताप की प्रतिमा पर क्रेन की सहायता से पुष्पमाला पहनाकर श्रद्धांसुमन अर्पित किए। वन राज्यमंत्री शर्मा ने वीर शिरोमणी महाराणा प्रताप को स्मरण करते हुए कहा कि शौर्य, त्याग, पराक्रम, देशभक्ति और प्रढ प्रण की पहचान महाराणा प्रताप का जीवन और उनके वीरता से भरे इतिहास को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र के प्रेरणा स्रोत मातृभूमि भक्त महान योद्धा महाराणा प्रताप राष्ट्र की अस्मिता के प्रतीक हैं। वीर प्रसूता भूमि राजस्थान के शूरवीरों की पंक्ति में उनका नाम स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। इस दौरान बडी संख्या में उपस्थित लोगों ने महाराणा अमर रहे के गगनचुंभी जयकारे लगाए। इसके पश्चात वन राज्यमंत्री ने अपनी नियमित पौधा लगाने के संकल्प के तहत मोती डूंगरी पार्क में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने 19 मई को मोती डूंगरी स्थित पार्क में वीर शिरोमणी महाराणा प्रताप की प्रतिमा का अनावरण किया। लगभग 50 लाख रूपये की लागत से बनी यह प्रतिमा पंचधातु से निर्मित है। इस प्रतिमा की उंचाई साढ़े 12 फीट और वजन 2 हजार 200 किलोग्राम है। प्रतिमा की स्थापना के बाद यह स्थल अलवरवासियों के लिए एक नया ऐतिहासिक और सांस्कृतिक केंद्र बन गया है। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष अशोक गुप्ता, संजय नरुका, जीतेन्द्र राठौड़, गोरधन सिंह सिसोदिया, प्रमोद विजय, अरुण जैन, डॉ. के के शर्मा, महेश निहालवानी, जीतू सैनी, सुरेश मेहता, लोचन यादव, घनश्याम सोनी, विष्णु शंकर, रवि जैन, संध्या मीणा, सूरजबान गौड़, दीपक तंवर, आशुतोष शर्मा, रविराज चौहान, प्रकाश अड़चीवल, उम्मेद सिंह चौहान, नरेंद्र नरूका, संजीव अग्रवाल, विजय राजपूत, ममता कंवर, श्याम यादव, ओमप्रकाश शर्मा सहित प्रबुद्ध व्यक्ति एवं बडी संख्या में आमजन मौजूद रहे।

जिले में विकसित कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम का हुआ शुभारंभ

जिले भर में 12 जून तक आयोजित शिविरों में कृषकों को किया जाएगा खेती की नवीन तकनीकी व विभागीय योजनाओं के प्रति जागरूक

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के निर्देशानुसार राजगढ़ ब्लॉक की ग्राम पंचायत अलेई व नयागांव गोलका एवं ग्राम पंचायत नाथलवाडा के अटल सेवा केंद्र में विकसित कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम के शिविर आयोजित हुए। कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक पी.सी मीणा ने बताया कि शिविरों में कृषि विज्ञान केंद्र नौगांवा के कृषि वैज्ञानिकों ने कृषकों को फसल उत्पादन की नवीन तकनीकी, कृषि विभाग व उद्यान विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा कृषक हित में संचालित विभागीय योजनाओं, कृषि उत्पादकता के मूल मंत्र, मृदा स्वास्थ्य एवं पोषक तत्व प्रबंधन, खरीफ फसलों की प्रमुख किस्मों, बीजोपचार एवं कीट रोग नियंत्रण के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि जिले की 45 ग्राम पंचायतों में 12 जून तक विकसित कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम के शिविर आयोजित किए जाएंगे। आज यहां होंगे शिविर आयोजित उन्होंने बताया कि 30 मई को मालाखेडा ब्लॉक की ग्राम पंचायत दादर व कैरवाडा के अटल सेवा केंद्र में प्रात 8 बजे से प्रात 11 बजे तक तथा ब्लॉक उमरैण की ग्राम पंचायत पलखडी के अटल सेवा केंद्र में सांय 4 बजे से सांय 7 बजे तक शिविर आयोजित होंगे। इस दौरान कृषि वैज्ञानिक डॉ. सुभाष चंद यादव, पशुपालन विभाग से डॉ. मोहनलाल मीणा सहित इफको के क्षेत्रीय अधिकारी, कृषि अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिक, कृषि व उद्यान विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी तथा बडी संख्या में कृषक मौजूद रहे।

कार्यशाला में आजीविका की गतिविधियों के बारे में दी जानकारी

जयपुर टाइम्स

राजगढ़(निसं.) भारत माता कलस्टर फेडरेशन की ओर से कार्यशाला का आयोजन किया गया। भारत माता सीएलएफ मेनेजर सुधा शर्मा ने बताया कि ग्रामीण विकास मंत्रालय भारत सरकार की संयुक्त स्मृति सरण, पूर्व संयुक्त सचिव चरणजीत सिंह, जिला परियोजना प्रबंधक रेखा रानी व्यास ने भारत माता सीएलएफ के कार्यालय का निरीक्षण किया। इसके उपरांत टहला बाईपास स्थित एक निजी गार्डन में राष्ट्रीय मिशन सहयोग की कार्यशाला आयोजित हुई। कार्यशाला में सीएलएफ की आजीविका गतिविधियों, सामाजिक बैंक सहित अन्य प्रमुख कार्य क्षेत्रों पर विस्तृत चर्चा की गई। उन्होंने बताया कि भारत माता सीएलएफ को राष्ट्रीय मिशन सहयोगी के रूप में शामिल होने दिशा में कार्ययोजना तैयार की गई। कार्यशाला के दौरान राष्ट्रीय इमर्शन साइट के निर्माण की दिशा में आवश्यक कदमों पर विशेष जोर दिया गया। उपस्थित सभी सदस्यों ने भारत माता सीएलएफ को राष्ट्रीय मिशन सहायक बनने पर बधाई दी गई। कार्यक्रम का समापन सामुहिक संकल्प के साथ हुआ कि भारत माता सीएलएफ को राष्ट्रीय स्तर पर अपनी गतिविधियों और नवाचारों को साझा कर ग्रामीण विकास की दिशा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इस दौरान जिला प्रबंधक अविनाश प्रकाश, सोनम शेखावत, तमा मित्रा, रमेश मीना, सलोनी गुप्ता, ब्लॉक परियोजना राजगढ़ प्रबंधक हिमांशु शर्मा, ब्लॉक परियोजना प्रबंधक रैणी आयुष शर्मा, एसआरपी सीमा कालरा, पीएम आईएस विनित वशिष्ठ , सीईओ ताराचंद सैनी आदि उपस्थित रहे।

10 वी परीक्षा परिणाम, जय दुर्गा विद्यालय ने लहराया सफलता का परचम

सृष्टि भंडारी	नंदनी जाटव	नैना गुप्ता	रिना मीना	कुनाल विजय
98.5	98.33	97.83	97.5	97.5

केशव मीना	कृष्ण साहू	आरची शर्मा	राजशी सैनी	कनक कुमार
97.17	97.17	97	96.33	96

पायल सैनी	लक्ष्मी मीना	नायरा गुप्ता	अमित वर्मा	भावेश मीना
95.83	95.33	95.33	95.33	95

जयपुर टाइम्स

राजगढ़(निसं.) कस्बे के पोस्ट आफिस के पास स्थित जय दुर्गा सीनियर सेकेंडरी स्कूल ने एक बार फिर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर द्वारा जारी दसवीं बोर्ड परीक्षा परिणाम में शत प्रतिशत परिणाम देकर सफलता का परचम लहराया। विद्यालय के निदेशक मनोज कुमार सैनी ने बताया कि विद्यालय की छात्रा सृष्टि भंडारी ने 98.50 प्रतिशत अंक प्राप्त कर ब्लॉक राजगढ़ सहित विद्यालय व अपने परिवार का नाम रोशन किया। उन्होंने बताया कि विद्यालय के छात्रा नंदनी जाटव ने 98.33 प्रतिशत, नैना गुप्ता 97.83 प्रतिशत, रिना मीना ने 97.50 प्रतिशत, कुनाल विजय 97.50, केशव सिंह मीना ने 97.17 प्रतिशत, कृष्ण साहू ने 97.17 प्रतिशत, अरची शर्मा ने 97 प्रतिशत, राजश्री सैनी ने 96.33 प्रतिशत, कनक कुमार टोंक ने 96 प्रतिशत, पायल सैनी ने 95.83 प्रतिशत, लक्ष्मी मीना ने 95.33 प्रतिशत, नायरा गुप्ता ने 95.33 प्रतिशत, अमित कुमार मीना ने 95.33 तथा भावेश मीना ने 95 प्रतिशत अंक प्राप्त किये। उन्होंने विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को सफलता पर बधाई दी।

10 वीं बोर्ड परीक्षा परिणाम में टैगोर स्कूल का शानदार प्रदर्शन

कोटपूतली(निसं.) राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा जारी किये गये 10 वीं बोर्ड परीक्षा परिणाम में ग्राम सांगटेड़ा स्थित टैगोर पब्लिक सैकण्डरी स्कूल के छात्र-छात्राओं ने शानदार प्रदर्शन किया। स्कूल की छात्रा कशिश चौधरी पुत्री सतीश चन्द्र जाट ने 95 प्रतिशत, शिवांशी सैंगर पुत्री शिवभान सिंह ने 91 प्रतिशत, पूजा पुत्री भागीरथ गुर्जर उखलेड़ा ने 90 प्रतिशत, शिवांगी पुत्री महेन्द्र सिंह शेखुपुर ने 90 प्रतिशत अंक प्राप्त किये। छात्र-छात्राओं की यह सफलता ना केवल उनके माता-पिता और विद्यालय के लिये गौरव की बात है, बल्कि वह उन सभी विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा हैं जो निरंतर प्रयासरत हैं। यह परिणाम एक सुंदर भविष्य की नींव है और इसका श्रेय उनके परिश्रम, अनुशासन और स्कूल के मार्गदर्शन को जाता है। निदेशक डॉ. वासुदेव गुप्ता ने विद्यार्थियों, अभिभावकों, स्टॉफ और मैनेजमेंट टीम को शुभकामनाएं देते हुए सभी का आभार व्यक्त किया। अभिभावकों तथा विद्यार्थियों ने टैगोर स्कूल स्टॉफ तथा मैनेजमेंट टीम को धन्यवाद दिया। प्रधानाचार्य डॉ. तन्मय दास ने कहा कि विधार्थियो की यह सफलता उन सभी विद्यार्थियों के लिए एक प्रेरक संदेश है जो अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाना चाहते हैं। उन्होंने यह दिखा दिया कि गांवों में भी प्रतिभा की कोई कमी नहीं है, जरूरत है तो केवल मार्गदर्शन, समर्पण और सतत प्रयास की। हम उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं और आशा करते हैं कि वे आगे भी ऐसे ही सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित करेंगी। छात्र-छात्राओं ने इनका श्रेय माता-पिता एवं विधालय के गुरूजनों को दिया हैं तथा विधालय में नियमित अध्ययन करने से यह सफलता हांसिल की हैं।

प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को किया सम्मानित

जयपुर टाइम्स

टहला(निसं.) तहसील क्षेत्र के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय टोड़ा जयसिंहपुरा में 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का भामाशाहों तथा ग्रामवासियों द्वारा भव्य स्वागत सम्मान किया गया। इसमें दसवीं कक्षा के 4 तथा बारहवीं कक्षा के 14 विद्यार्थियों का सम्मान किया गया। पंचायत समिति सदस्य गुड्डी देवी सैनी द्वारा सभी 18 प्रतिभावन बच्चों को 10-10 ग्राम के चांदी के सिक्के देने की घोषणा की गई। भामाशाह मूलचंद मीना के द्वारा सभी बच्चों को पांच सौ रुपए पारितोषिक नगद दिया गया। भामाशाह दिनेश कुमार जांगिड़ द्वारा 93.83 प्रतिशत प्राप्त करने वाली छात्रा मुस्कान जांगिड़ को 1100 सौ रुपए का नगद पुरस्कार दिया गया तथा प्रत्येक प्रतिभाशाली बालक बालिकाओं को 201 रूपए का नगद पुरस्कार दिया गया। लल्लू राम मीना प्रत्येक बच्चे को बीस रुपए का नगद पुरस्कार दिया गया। इस अवसर पर ग्राम पंचायत सरपंच शोबाई मीणा, पंचायत समिति सदस्य गुड्डी देवी सैनी, वार्ड पंच नाथू लाल शर्मा, ओम प्रकाश सैनी, महेश सैनी, रघुवीर जाट, रंगलाल मीणा, सामाजिक कार्यकर्ता प्रकाश बुद्धपुरा, कमल सेठ,वार्डन मीरा मीणा सहित कैलाश चंद मीना, जितेंद्र कुमार गौड़, ताराचंद सैनी, प्रहलाद शर्मा,राजेंद्र सैनी,रिछपाल मीना, सियाराम मीणा आदि मौजूद रहे। प्रधानाचार्य बाबूलाल मीणा ने सभी भामाशाहों, ग्राम वासियों तथा एसडीएमसी सदस्यों का स्वागत व आभार प्रकट किया।

जयपुर में आरएलडी की हुंकार, 15 मांगे माने सरकार

दिल्ली में दोस्ती तो जयपुर में क्यों नहीं ! एक्टिव प्रदेश अध्यक्ष अध्यक्ष जोगेंद्र सिंह अवाना ने कहा: 15 या 22 जून को आरएलडी सुप्रीमो और केंद्रीय मंत्री जयंत चौधरी प्रदेश भर के पार्टी कार्यकर्ताओं को जयपुर में करेंगे संबोधित

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। जिस तरह से केंद्र की मोदी सरकार में राष्ट्रीय लोक दल के सुप्रीमो जयंत चौधरी कदम से कदम मिलाकर देश के सर्वांगीण विकास के लिए अपना महत्वपूर्ण रोल अदा कर रहे हैं कि इस तरह से राजस्थान में जयंत चौधरी के दिशा निर्देश पर पार्टी के नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष जोगेंद्र सिंह अवाना भी प्रदेश की भजनलाल सरकार के साथ कदम से कदम मिलाकर प्रदेश के किसान, मजदूर और वंचित वर्ग की सेवा करने के लिए राष्ट्रीय लोकदल के विजन को अंजाम तक पहुंचने के लिए कृत संकल्प दिख रहे हैं, अपनी नियुक्ति के महज 5 दिन में ही कई सालों बाद पहली बार जयपुर में राष्ट्रीय लोक दल कार्यकर्ता सम्मेलन का सफल आयोजन करके पार्टी को प्रदेश की तीसरी बड़ी राजनीतिक पार्टी के रूप में स्थापित करने की उम्मीदों को पंख लगा दिए हैं, भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की 38वीं पुण्यतिथि पर जयपुर के पिंक सिटी प्रेस क्लब के सभागार में आयोजित पार्टी के कार्यकर्ता सम्मेलन को सामाजिक न्याय सम्मेलन नाम दिया गया जो अपने आप में यह दिखाता है कि राष्ट्रीय लोकदल के द्वार हर जाति और बिरादरी के लोगों के लिए समान रूप से खुले हुए हैं और सभी जातियों का सर्वांगीण विकास हो और वंचित लोगों को न्याय मिले तथा किसान मजदूर वर्ग का कल्याण हो इसी विजन के साथ पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष जोगेंद्र सिंह अवाना ने प्रदेश की भजनलाल सरकार के समक्ष राष्ट्रीय लोक दल की ओर से 15 मांगे रखी गई है इन 15 मांगों का मांग पत्र सरकार को सोपा गया है, अवाना ने कहा कि आज का यह शानदार सम्मेलन तो सिर्फ ट्रेलर है पिक्चर तो अगले महीने 15 या 22 जून को दिखाई जाएगी जब प्रदेश भर के राष्ट्रीय लोक दल के कार्यकर्ता जयपुर में बिरला सभागार में आएंगे इस महत्वपूर्ण सम्मेलन को राष्ट्रीय लोक दल के सुप्रीमो जयंत चौधरी संबोधित करेंगे, उन्होंने बताया कि अगले तीन-चार दिन में यह निर्धारित कर लिया जाएगा कि बिरला सभागार में आयोजित होने वाला यह कार्यकर्ता सम्मेलन 15 जून को होगा या 22 को लेकिन यह तय है 15 या 22 जून में से किसी भी दिन सम्मेलन होगा उन्होंने यह भी कहा कि इस कार्यकर्ता सम्मेलन के बाद राष्ट्रीय लोकदल की कार्यकारिणी का गठन किया जाएगा जिसमें पार्टी के पुराने औरनए नौजवान नेताओं को शामिल किया जाएगा भले ही कार्यकारिणी छोटी हो लेकिन सक्रिय और ऊर्जावान नेताओं को कार्यकारिणी में जगह दी जाएगी, उन्होंने यह भी कहा कि आगामी पंचायत राज चुनाव में चुनाव आयोग की ओरसे पार्टी का सिंबल आवंटित किया जाए इस बाबत वे खुद पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव और विधायक सुभाष गर्ग के साथ बाकायदा प्रतिनिधिमंडल लेकर चुनाव आयोग के पास जाएंगे और पुरजोर तरीके से पंचायत राज चुनाव में भी पार्टी को सिंबल दिया जाए इसके लिए अपील करेंगे, उन्होंने यह भी कहा कि पार्टी के संगठन को निचले स्तर पर मजबूत करने के लिए पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ताओं की तैनाती की जाएगी और जिला, ब्लाक, मंडल और भूत स्तर पर पार्टी का संगठन खड़ा किया जाएगा जिसमें सभी जाति धर्म और संप्रदाय के लोगों की भागीदारी होगी उन्होंने कहा कि राजस्थान के हर गांव और ढाणी में राष्ट्रीय लोकदल की ओर से गांव-गांव,पांव पाव कार्यक्रम चलाया जाएगा और इस कार्यक्रम में स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह ने देश के किसानों मजदूरों और वंचित लोगों के उत्थान और कल्याण के लिए जो काम किया और जो सपना देखा था उसके बारे में ग्रामीणों को बताया जाएगा और यह विश्वास दिलाया जाएगा कि राष्ट्रीय लोकदल स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह जी के सपने और विजन को पूरा करने के लिए दिन-रात एक कर देगी

पार्टी के राजस्थान प्रभारी मलूक नागर का ओजस्वी भाषण सम्मेलन में चर्चा का विषय बना

वैसे तो मलूक नागर राष्ट्रीय लोक दल के फायर ब्रांड नेता माने जाते हैं और टीवी न्यूज़ चैनल की डिबेट में बहुत ही शानदार तरीके से पार्टी का पक्ष रखते हैं लेकिन सामाजिक न्याय सम्मेलन में मौजूद मलूक नागर ने प्रदेश बरसे आए पार्टी के कार्यकर्ताओं का दिल जीत लिया और उनके भाषण देने के अंदाज को पार्टी के कार्यकर्ताओं में सलूट किया मलूक नागर ने कहा कि राष्ट्रीय लोकदल ना तो कभी कमजोर था और ना कभी कमजोर होगा परिस्थितियों हर पार्टी की बनती बिगड़ती रही है इसलिए अब भी राष्ट्रीय लोकदल पहले की तरह ही मजबूत है और इसे सिर्फ गति देने की जरूरत है उन्होंने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष जोगेंद्र सिंह अवाना काफी ऊर्जावान और लोकप्रिय नेता हैं इसलिए राजस्थान में भी राष्ट्रीय लोकदल अब तीसरी बड़ी राजनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित होता हुआ दिख रहा है

राष्ट्रीय लोक दल के मांग पत्र में कौन-कौन सी मांगे

सामाजिक न्याय सम्मेलन में राष्ट्रीय लोकदल के राजस्थान के अध्यक्ष जोगेंद्र सिंह ने 15 मांगों का उल्लेख किया और कहा कि इन मांगों का मांग पत्र सरकार को सोप जा रहा है जिनमें राजस्थान विधानसभा में भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री दिवंगत चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा स्थापित करने, प्रदेश के पंचायत समितियां और जिला परिषदों में चौधरी चरण सिंह सेवा केंद्र की स्थापना करना, ब्लॉक स्तर पर चौधरी चरण सिंह कौशल विकास केंद्र और चौधरी चरण सिंह मित्र सेवा केंद्र, जयपुर और भरतपुर में चौधरी चरण सिंह के नाम पर कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना, माध्यमिक और हायर सेकेंडरी स्कूल में चौधरी चरण सिंह विचार मंच की स्थापना, स्कूल के पाठ्यक्रम में चौधरी चरण सिंह पर विशेष अध्याय, चौधरी चरण सिंह किसान युवा पुरस्कार जिसमें 18 से 35 साल के प्रदेश के श्रेष्ठ तीन युवा किसानों को पुरस्कार के अलावा अनुदान की राशि, संभाग स्तर पर चौधरी चरण सिंह किसान मेलों का आयोजन, राजस्थान के प्रत्येक जिले में चौधरी चरण सिंह किसान भवन की स्थापना, जयपुर में किसान सम्मेलन भवन की स्थापना सहित कुछ अन्य मांगे हैं द्य जोगेंद्र सिंह अवाना ने यह भी कहा कि राजस्थान में चाहे कोई सा भी चुनाव हो राष्ट्रीय लोकदल के दिल्ली में बैठे नेता और राष्ट्रीय लोकदल के सुप्रीमो जयंती चौधरी के निर्देश के अनुसार ही राजस्थान में चुनाव लड़ा जाएगा, चुनाव में गठबंधन का निर्णय पार्टी हाई कमान के निर्णय के अनुसार ही होगा, उन्होंने यह भी कहा कि राजस्थान में प्रदेश के लोगों की भलाई के लिए राष्ट्रीय लोक दल सड़कों पर लड़ाई नहीं लड़ेगी बल्कि सरकार से बातचीत के माध्यम से हर समस्या कानिवारण करके प्रदेश के लोगों की सेवा की जाएगी

राष्ट्रीय लोक दल छोड़कर नहीं जाऊंगा चाहे घर बैठ जाऊं: सुभाष गर्ग

पिछली गहलोत सरकार में मंत्री रहे और वर्तमान में राष्ट्रीय लोक दल के महासचिव और विधायक सुभाष गर्ग ने पार्टी के सम्मेलन में जोड़ देकर कहा कि चाहे मैं घर बैठ जाऊं लेकिन राष्ट्रीय लोक दल को छोड़कर किसी और पार्टी में नहीं जाऊंगा मैं पहले भी राष्ट्रीय लोकदल से जुड़ा हुआ था और अब भी राष्ट्रीय लोक दल से दिल से जुड़ा हुआ हूं और जयंत चौधरी जी के साथ कदम से कदम मिलाकर राष्ट्रीय लोक दल की सेवा करना चाहता हूं चुनाव लड़ूं या ना लड़ू टिकट मिले या ना मिले मैं इसके बारे में नहीं सोचता और ना ही किसी अन्य पार्टी में जाने के लिए कभी सोचा है मैं हमेशा दिल से राष्ट्रीय लोकदल से जुड़ा हुआ हूं और राष्ट्रीय लोक दल के सिंबल पर ही मैंने दो बार विधायक भी रहा हूं और अब भी विधायक हूं, गर्ग ने यह भी कहा कि उनकी मजबूरी यह है कि राजस्थान विधानसभा में अब वह भारतीय जनता पार्टी की सरकार के खिलाफ कुछ नहीं बोल सकते क्योंकि केंद्र में राष्ट्रीय लोकदल एनडीए का हिस्सा है इसलिए उन्हें पार्टी नेतृत्व की ओर से साफ कहा गया है कि राजस्थान में भारतीय जनता पार्टी की सरकार के साथ कदम से कदम मिलाकर काम करना होगा अब यह बात अलग है कि उन्हें भी राजस्थान विधानसभा की ओर से नोटिस दिया गया लेकिन उन्हें इस बात की चिंता बिल्कुल भी नहीं है कि उनकी विधानसभा की सदस्यता रहेगी या जाएगी उन्होंने सिर्फ अपने क्षेत्र की आवाज उठाई थी उसी के परिणाम के स्वरूप उन्हें नोटिस दे दिया गया लेकिन नोटिस का जवाब देने के लिए अगर उन्हें कानून का सहारा लेना पड़े तो कोर्ट भी जाएंगे ।

युवा कांग्रेस कार्यकारी प्रदेशाध्यक्ष का किया अभिनंदन

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निसं.) युवा कांग्रेस राजस्थान के कार्यकारी प्रदेशाध्यक्ष यशवीर सुरा के जन्मदिवस पर युकां नेता राकेश रावत ने गुरूवार को राजधानी जयपुर पहुँचकर उनका स्वागत एवं अभिनन्दन किया। साथ ही पुष्प गुच्छ भेंटकर जन्मदिवस की बधाई दी। वहीं किशनगढ़ विधायक विकास चौधरी का भी स्वागत किया।

महाराणा प्रताप जयंती मनाई

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निसं.) निकटवर्ती ग्राम द्वारिकापुरा में गुरूवार को महाराणा प्रताप जयंती मनाई गई। इस मौके पर सामाजिक कार्यकर्ता सूबेसिंह तंवर, पूर्व सैनिक राजेंद्र प्रसाद यादव, संदीप टांक, संदीप यादव, मान यादव, पारस सिंह, जीतू वर्मा, मक्खन सैनी, जेपी सैन आदि ने महाराणा प्रताप की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उनके राष्ट्र के प्रति बलिदान, समर्पण और शौर्य को याद किया। वक्ताओं ने कहा कि महाराणा प्रताप ने अपनी मातृ भूमि की स्वाधिनता के लिये महलों को छोडकर जंगल में रहना मंजूर किया लेकिन पराधिनता स्वीकार नहीं की। इस मौके पर ग्राम द्वारिकपुरा बस स्टैंड पर राहगीरों को मीठा शीतल पेयजल भी पिलाया गया।

लक्षिता ने 10 वीं बोर्ड में प्राप्त किये 97.67 प्रतिशत अंक

प्रशासनिक सेवाओं में जाने का लक्ष्य

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निसं.) बुधवार को आये 10 वीं बोर्ड नतीजों में कस्बे के लक्ष्मी नगर निवासी लक्षिता पुत्री सत्येन्द्र कुमार जांगिड़ ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुये 97.67 प्रतिशत अंक प्राप्त किये है। लक्षिता को गणित विषय में 100 में से 100 अंक मिले है। उन्होंने नियमित अध्ययन को ही अपनी सफलता का कारण बताया। लक्षिता का लक्ष्य प्रशासनिक सेवाओं में जाने का है।

बालिकाओं को सशक्त बनाने के लिये राज्य सरकार तत्पर- पटेल

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निसं.) कस्बे के डाबला रोड़ स्थित राजकीय कन्या महाविधालय में राज्य सरकार की बजट घोषणाओं के अनुरूप प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग लेने वाली महिला अभ्यर्थियों हेतु निशुल्क लाईब्रेरी सुविधा का उद्घाटन गुरूवार को विधायक हंसराज पटेल द्वारा बतौर मुख्य अतिथि फिता काटकर किया गया। पटेल ने कहा कि इस पुस्तकालय से महिला अभ्यर्थियों को काफी लाभ होगा। उन्हें प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारियों में काफी सुविधा मिलेगी। पटेल ने कहा कि राज्य सरकार महिलाओं व बालिकाओं को सशक्त बनाने के लिये हरसम्भव प्रयास कर रही है। प्राचार्य डॉ. आर. पी. गुर्जर ने कहा कि महाविधालय में स्वच्छ एवं शांत वातावरण में विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाली महिला अभ्यर्थी लाभान्वित हो सकेगी। यह सुविधा महाविधालय की छात्राओं के साथ-साथ अन्य महिला अभ्यर्थियों को भी निशुल्क उपलब्ध रहेगी। प्रभारी प्रो. ओमप्रकाश कपूरिया ने बताया कि यह जिले का पहला महिला महाविधालय है, जहाँ यह सुविधा उपलब्ध है। इसके लिये महिला अभ्यर्थी नियमानुसार प्रवेश ले सकेगी। महाविधालय परिसर में इस अभिनव पहल से क्षेत्र में शैक्षणिक वातावरण के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान होगा। उल्लेखनीय है कि राजकीय पाना देवी कन्या महाविधालय अपने नवाचारों के लिये सुप्रसिद्ध है। उक्त पुस्तकालय में प्रवेश हेतु प्रभारी से सम्पर्क किया जा सकता है। पुस्तकालय में प्रतियोगी परीक्षाओं की आवश्यक पुस्तकों के साथ-साथ आवश्यक पत्र-पत्रिकायें आदि भी उपलब्ध रहेगी। वहीं महाविधालय विकास समिति की बैठक प्राचार्य प्रो. आर.पी. गुर्जर की अध्यक्षता व विधायक हंसराज पटेल के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुई। जिसमें महाविधालय के विकास कार्यो से जुड़े अनेक विषयों पर मंथन करते हुये शिक्षा के स्तर को बढ़ाने की भावी कार्य योजना प्रस्तुत की गई। पटेल ने महाविधालय का अवलोकन करते हुये प्रस्तावित जिला स्तरीय महिला छात्रावास की भूमि का अवलोकन किया। उन्होंने कहा कि महाविधालय स्टॉफ सदस्य अपने उचित प्रबंधन से संस्थान को समृद्ध बनाने, आने वाले समय में कोटपूतली शिक्षा का बड़ा केन्द्र बनकर उभरे इस दिशा में सार्थक प्रयास करें। उन्होंने महाविधालय में नये संकायों की आवश्यकताओं को पुरा करने की बात कही। बैठक में महाविधालय के प्रो. जे आर गुर्जर समेत अन्य स्टॉफ सदस्य, समिति के पं. लक्ष्मीनारायण शर्मा, पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष कमल सैनी, एड. कमल कसाना आदि भी मौजूद रहे।

विकसित कृषि संकल्प अभियान शुरू, 12 जून तक तक होगा आयोजित

किसानों को दी खेती की उन्नत तकनीक व योजनाओं की जानकारी

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निसं.) किसानों के हितार्थ 29 मई से 12 जून तक आयोजित हो रहे विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत गुरुवार को कृषि वैज्ञानिक एवं कृषि विभाग द्वारा जिले की पंचायत समिति कोटपूतली के ग्राम नारहेड़ा, खड़ब व चुरी में केवीके गोनेड़ा और बानसूर के ग्राम देवसन, हरसौरा व माजरा अहीर तथा बहरोड़ के ग्राम खोर, बसई व नांगल खोडिया में केवीके बानसूर के कृषि वैज्ञानिकों एवं कृषि विभाग द्वारा खरीफ फसलों की नवीनतम तकनीकी, प्राकृतिक खेती की विधियों की जानकारी किसानों को देते हुये मृदा स्वास्थ्य कार्ड के आधार पर उर्वरकों के संतुलित उपयोग, कृषि व उद्यान विभाग की योजनाओं के बारे में विस्तार से बता कर जानकारी दी गई। अभियान में किसानों के साथ-साथ महिला किसानों नवाचारी एवं प्रगतिशील किसानों, स्थानीय जनप्रतिनिधियों द्वारा भाग लिया गया। इस मौके पर किसानों की खेती से संबधित तकनीकी समस्याओं का समाधान भी किया गया। अभियान में नवाचारी व प्रगतिशील किसानों द्वारा अनुभव भी साझा किये गये। किसानों द्वारा उत्साहित होकर अभियान में भाग लेते हुये बताया गया कि ऐसे कार्यक्रम से स्थानीय स्तर पर ही अच्छी जानकारी प्राप्त हो रही है व समस्याओं का समाधान कृषि वैज्ञानिकों द्वारा किया जा रहा है। अभियान के दौरान कस्टम हायरिंग केन्द्रों राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन आदि की विस्तृत जानकारी दी गई। संयुक्त निदेशक कृषि (वि0) कोटपूतली-बहरोड़ ने जिले के किसानों को अधिक से अधिक संख्या में स्थानीय स्तर पर 29 मई से 12 जून तक आयोजित होने वाले विकसित कृषि संकल्प अभियान में भाग लेने व मौके पर ही खेती से जुड़ी जानकारी तथा तकनीकी समस्याओं का समाधान प्राप्त करने का आग्रह किया।

गुर्जर आरक्षण आंदोलन में शहीद हुये वीर गुर्जर शहीदों को दी श्रद्धांजलि

कोटपूतली(निसं.) निकटवर्ती ग्राम कल्याणपुरा खुर्द स्थित वीर गुर्जर शहीद स्मारक पर 29 मई गुरूवार को गुर्जर आरक्षण आंदोलन में शहीद हुये वीर गुर्जर शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई। वक्ताओं ने कहा कि आज ही के दिन 29 मई 2007 को गुर्जर आरक्षण आंदोलन में वीर गुर्जर शहीदों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी। वीर शहीदों के त्याग व बलिदान का इतिहास युगों युगों तक याद रखा जायेगा। स्मारक प्रबंधक राजेन्द्र कसाना ने बताया कि पूर्व सांसद सुखबीर सिंह जौनापुरिया द्वारा वीर गुर्जर आंदोलन के शहीदों की स्मृति में भव्य वीर गुर्जर शहीद स्मारक कल्याणपुरा खुर्द कोटपूतली में बनवाया गया था। जहाँ प्रतिवर्ष 29 मई को श्रद्धांजलि दिवस मनाया जाता है। इस मौके पर वीर गुर्जर शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई। वरिष्ठ भाजपा नेता व समाजसेवी शंकर लाल कसाना ने वीर शहीदों को याद करते हुये कहा कि आज समाज अच्छी शिक्षा और सरकारी नौकरी में अग्रणी दिखाई दे रहा है।

17 दिन से जारी सफाईकर्मियों की हड़ताल ,कस्बे में लगे कचरे के ढेर,नालियां जाम

मानसून के चलते मौसमी बीमारियां फैलने की भी आशंका

जयपुर टाइम्स

बिजौलियां(निसं.)। पिछले 17 दिन से चल रही नगरपालिका के सफाईकर्मियों की हड़ताल के चलते कस्बे में सफाई व्यवस्था पूरी तरह ठप हैं। गली-मोहल्लों और आमरास्तों पर जगह-जगह कचरे के ढ़ेर लगे हुए हैं।नालियां कूड़े-करकट व प्लास्टिक कचरे से भरी हो कर सड़ांध मार रही हैं।जून में मानसून के दस्तक देने की उम्मीद हैं।ऐसे में हालात और खराब होने की संभावना हैं। नालियां जाम होने से बरसाती जल भराव के चलते मलेरिया,डेंगू व चिकनगुनिया जैसी मच्छरजनित मौसमी बीमारियों के साथ ही हैजा,टाइफॉयड और पीलिया जैसी जलजनित बीमारियां भी फैल सकती हैं। फिलहाल हड़ताल खत्म होने के आसार नजर नहीं आ रहे हैं।गतिरोध समाप्त करने के लिए विगत शुक्रवार को नगरपालिका कार्यालय में प्रबुद्धजनों और सफाई कर्मचारी संघ के प्रतिनिधियों की बैठक भी हुई थी लेकिन कोई हल नहीं निकल पाया।सफाई कर्मचारी संघ के विनोद घूसर का कहना हैं कि सफाई ठेकेदार द्वारा प्रति कर्मचारी सात हजार चार सौ रुपए वेतन देने की बात हुई थी साथ ही पिछली बार हुई 14 दिन की हड़ताल के भुगतान का आश्वासन भी दिया गया था।लेकिन सोमवार को किए गए भुगतान में अधिकतम 3 हजार 200 रुपए ही खाते में डाले गए।इसे लेकर सफाई ठेकेदार केदारसिंह नरुका के खिलाफ थाने में परिवाद भी दिया गया।वहीं पिछली बार हुई हड़ताल के समय समझौता वार्ता के दौरान उपखण्ड कार्यालय में 93 कर्मचारियों के सफाई कार्य करने की बात हुई थी लेकिन अब छंटनी कर के सिर्फ 25 कर्मचारी ही काम पर लगाने के लिए कहा जा रहा हैं।जबकि वर्क आर्डर 87 कर्मियों का जारी किया गया था। वहीं सफाई कर्मचारी संघ ने 8 माह का पीएफ नहीं डालने और नगरपालिका द्वारा सफाई कर्मियों के जीपीएस डिवाइस लगाए जाने पर भी नाराजगी जताई हैं।घूसर का आरोप हैं कि जब महानगरों में जीपीएस अनिवार्य नहीं हैं तो यहां पर ऐसा कर के हमारा शोषण करने का प्रयास किया जा रहा हैं।इधर,ईओ पंकज कुमार मंगल का कहना हैं कि सफाई के लिए बाहर से श्रमिक बुलवाए गए और वाहन भी बढ़ाए गए हैं।लेकिन सफाईकर्मियों के विरोध के चलते व्यवस्था नहीं बैठ पा रही हैं। सफाईकर्मियों की मांगें नियम संगत नहीं होने से पूरा करना सम्भव नहीं हैं।फिर भी जो कर्मचारी काम करना चाहता हैं वो अपने दस्तावेजों के साथ नगरपालिका से सम्पर्क कर सकता हैं।ईओ ने सफाई ठेकेदार के खिलाफ जुर्माना लगाने व प्रतिभूति राशि जब्त करने की बात भी कही।

यातना विरोधी कानून की जरूरत

जेल रक्षक की हत्या कर फरार हुए इन कैदियों की पुलिस मुठभेड़ पर, लिहाजा, तरह-तरह की अटकलबाजियां सामने आना स्वाभाविक है। राजनीतिक मंशा से लेकर मुसलिमों के प्रति पूर्वग्रह तक के आरोप हवा में हैं। एक तर्क है कि इन कैदियों का आतंकवादी होना ही उन्हें मार देने को न्यायोचित ठहराने के लिए काफी है, और इसके समानांतर तर्क दिया जा रहा है कि वे मुसलमान होने के नाते मार दिए गए। ये तर्क बेबुनियाद भी नहीं हैं। वैश्विक और पाकिस्तानी दोनों ब्रांड के आतंकवाद की मार से देश को लगातार दो-चार होना पड़ रहा है। राजनीतिकों की प्रतियोगी जुमलेबाजी और अदालतों में होने वाली देरी के बीच विवश भारतीयों के धैर्य की परीक्षा भी चलती रहती है। साथ ही, कितने ही ऐसे आतंकी मामले सामने आए हैं जिनमें युवा मुसलिमों को बरसों झूठे मुकदमों का सामना करना पड़ा है। मौजूदा मामले में ही, झूठे आतंकी मुकदमों को अदालतों में चुनौती देने वाले संगठन

भारत में अपराध-न्याय व्यवस्था को आप कितने ही स्तरों पर काम करते देख सकते हैं। रातों-रात न्याय 'खरीदा' जा सकता है जबकि बरसों-बरस निर्दोष जेलों में सड़ते मिल सकते हैं; सामान्य अदालतों में मुकदमों के ढेर के ढेर लगे रहते हैं और लोक अदालतों के नाम पर हजारों मामलों का एक साथ 'निपटारा' संभव हो जाता है। एक ओर पेचीदगियों से भरी कानूनी प्रक्रियाएं हैं और यहां तक कि आम जन के लिए पुलिस थानों में शिकायत दर्ज करा पाना तक दूभर हो जाता है। दूसरी ओर, समाज को स्वीकार्य हैं, प्राकृतिक न्याय (कॉमन लॉ) की नैतिकता के जमाने के ठौर पर हिसाब-किताब चुकता करते सक्रिय विजिलैंट दस्ते और आरोपी को कानून के हवाले करने के बजाय मार डालने वाली भीड़ (लिंच मॉब)। यहां तक कि, जैसा कि हाल में भोपाल में जेल से फरार सिमी के आठ निहत्थे आरोपियों को तुरत-फुरत मौत के घाट उतारने के प्रसंग में दिखा, 'लिंच मॉब' की भूमिका में स्वयं पुलिस का विशिष्ट दस्ता भी हो सकता है। लिखित प्रावधानों पर आधारित किसी भी भारतीय अपराध-दंड संहिता में कानून से भागते हुए व्यक्ति को जान से मारने की व्यवस्था नहीं है। नैतिक पुलिसिंग पर आधारित कॉमन लॉ के दौर में इस सुविधा का इस्तेमाल भले 'स्वाभाविक' रहा होगा। दरअसल, देश में आतंकवाद को लेकर कानूनी कोड न होने से कॉमन लॉ पर आधारित अपराध-न्याय व्यवस्था की वकालत करने वालों को आज ऐसा करना कहीं अधिक सामान्य लग रहा है। उन्हें इसमें कोई विसंगति नजर नहीं आती कि संविधान के अनुच्छेद 14 में निहित 'कानून का शासन', सिमी के जेल से फरार हुए आतंकियों के विरुद्ध मध्यप्रदेश एसटीएफ की लिंच मॉब आचार संहिता को रोकने में असमर्थ सिद्ध हुआ। घिरे हुए आठ के आठ निहत्थे सिमी सदस्य एसटीएफ की गोलियों का शिकार बने, जबकि वे गिरफ्तार किए जाने चाहिए थे। तो भी इस लिंच न्याय के प्रति राजनीतिक ही नहीं, सामाजिक समर्थन की भी कमी नहीं है। सौभाग्य से इस प्रवृत्ति का पुरजोर विरोध करने वाले भी कम नहीं हैं। जेल रक्षक की हत्या कर फरार हुए इन कैदियों की पुलिस मुठभेड़ पर, लिहाजा, तरह-तरह की अटकलबाजियां सामने आना स्वाभाविक है। राजनीतिक मंशा से लेकर मुसलिमों के प्रति पूर्वग्रह तक के आरोप हवा में हैं। एक तर्क है कि इन कैदियों का आतंकवादी होना ही उन्हें मार देने को न्यायोचित ठहराने के लिए काफी है, और इसके समानांतर तर्क दिया जा रहा है कि वे मुसलमान होने के नाते मार दिए गए। ये तर्क बेबुनियाद भी नहीं हैं। वैश्विक और पाकिस्तानी दोनों ब्रांड के आतंकवाद की मार से देश को लगातार दो-चार होना पड़ रहा है। राजनीतिकों की प्रतियोगी जुमलेबाजी और अदालतों में होने वाली देरी के बीच विवश भारतीयों के धैर्य की परीक्षा भी चलती रहती है। साथ ही, कितने ही ऐसे आतंकी मामले सामने आए हैं जिनमें युवा मुसलिमों को बरसों झूठे मुकदमों का सामना करना पड़ा है। मौजूदा मामले में ही, झूठे आतंकी मुकदमों को अदालतों में चुनौती देने वाले संगठन, रिहाई मंच के लखनऊ में प्रदर्शन पर पुलिस ने जमकर लाठियां भांजीं। अपने पुलिस जीवन के

अनुभव से, सार्वजनिक हुए आधिकारिक बयानों और घटना-स्थल के उपलब्ध वीडियो के आधार पर, मैं इन अटकलबाजियों के संदर्भ में भोपाल मुठभेड़ के संभावित घटनाक्रम पर अपनी टिप्पणी इस तरह रखना चाहूंगा- इन विचाराधीन कैदियों के आपराधिक इतिहास को देखते हुए इन्हें आतंकवादी कहा जाना ही ठीक है, उसी तरह जैसे समझौता, मालेगांव आदि मामलों में न्यायिक कार्यवाही का सामना कर रहे असीमानंद, प्रज्ञा ठाकुर और कर्नल पुरोहित भी हैं। ध्यान रहे कि मारे गए आठ सिमी सदस्यों में से तीन पहले भी एक अन्य जेल से एक और जेल रक्षक की हत्या कर इसी तरीके से फरार हुए थे। थाली, चम्मच से धारदार हथियार बनाना जेल-जीवन में आम है, कोई अजूबा नहीं। लकड़ी की चाभी भी। कंबलों व चादरों की मदद से दीवार फांदना भी। विचाराधीन कैदी जेल में अपने कपड़े पहनने को स्वतंत्र हैं, न कि जेल की निश्चित पोशाक। मुठभेड़ के समय उनके स्पोर्ट्स जूतों और जीन्स में होने से उनकी जेल से भागने की मंशा और योजना साफ दिखती है। जाहिर है कि जेल की सुरक्षा-व्यवस्था में गंभीर लापरवाही रही होगी, जिसका लाभ इन कैदियों ने उठाया। जेल रक्षक यादव की हत्या भी इन्होंने की होगी, अन्यथा वे यादव से चाभियां हथिया कर गुपचुप नहीं निकल सकते थे। यह भी कहने की जरूरत नहीं कि यादव उस जेल में अकेले सिपाही नहीं थे, हां मौके पर जरूर अकेले रहे होंगे और तभी आतंकियों के हाथों मारे गए। यह भी स्पष्ट है कि गांववालों ने फरार होते कैदियों को देख लिया होगा और एसटीएफ को इससे उन्हें घेरने में मदद मिली। कैदियों के पास पिस्तौल वगैरह मारक हथियार नहीं हो सकते थे। तभी उन्होंने घिरने पर आक्रमण के लिए पत्थर का इस्तेमाल किया। एसटीएफ का उन्हें गोलियों के आदान-प्रदान में मार गिराना प्रथम दृष्टया एक गढ़ी हुई कहानी लगती है। भगोड़े कैदी हर तरफ से घिर गए थे, अन्यथा सभी नहीं मारे जाते, कुछ भाग भी निकल सकते थे। ऐसे स्थिति में उन्हें गिरफ्तार किया जाना चाहिए था। भारत में कानून से भागते हुओं को जान से मारने की व्यवस्था नहीं है। अब तक का सरकारी रवैया लीपा-पोती का है और इससे देश की अपराध-न्याय व्यवस्था पर भी प्रश्नचिह्न लगता है। आतंकवाद के नाम पर की जा रही राजनीति भी कठघरे में है। इस बीच चौतरफा प्रश्नों से घिरी मध्यप्रदेश सरकार ने अपने एसटीएफ प्रमुख को बदल दिया है, हालांकि आश्चर्यजनक रूप से, मुठभेड़ को वे फिर भी सही ठहराते आ रहे हैं। सरकार ने एक ओर उच्च न्यायालय के एक अवकाश-प्राप्त जज की जांच का एलान किया है, और दूसरी ओर, मुठभेड़ में शरीक पुलिसकर्मियों को दो लाख के पुरस्कार का भी।

राजनीतिक दलों और मीडिया की विभाजित प्रतिक्रिया से लगता है जैसे भोपाल मुठभेड़ से प्राकृतिक न्याय (कॉमन लॉ) के 'नैतिक' प्रतिशोध को कम से कम इन दायरों में एक कारगर मुकाम मिल गया हो। बेशक कानूनी दायरे, लिखित कोड से ही संचालित होते रहेंगे, लेकिन तदनुसार उन्हें अमली जमा पहना पाने की क्षमता और पहल उच्च/सर्वोच्च न्यायालयों और मानवाधिकार संगठनों में कम ही नजर आती है। बहुत पीछे जाने की जरूरत नहीं, पिछले साल अप्रैल में ही तेलंगाना और आंध्र प्रदेश की प्रथमदृष्टया दो फर्जी पुलिस मुठभेड़ों का औपचारिक संज्ञान हैदराबाद स्थित उच्च न्यायालय और राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने लिया था। तेलंगाना पुलिस ने सिमी के चार हथकड़ी लगे विचाराधीन आतंकी मामलों के कैदियों को अदालत में पेशी के लिए ले जाते हुए यह कह कर मार दिया कि उन्होंने सुरक्षाकर्मियों के हथियार छीन कर भागने के लिए हमला किया था। यह सिमी के पुलिसकर्मियों पर होने वाले छिटपुट हमलों का प्रत्युत्तर था। आंध्र पुलिस ने अवैध चंदन व्यापार में राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के चलते तमिलनाडु के बीस लकड़हारों को चंदन तस्कर बता कर गोलियों से उड़ा दिया।

सम्पादकीय

न्यूनतम समर्थन मूल्य और कृषि सुधार की जमीनी हकीकत

सरकार ने चालू वित्तवर्ष में खरीफ फसल के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य यानी एमएसपी की घोषणा कर दी है। हर वर्ष फसल की बुआई से पहले फसलों की एमएसपी घोषित की जाती है। इस वर्ष धान की फसल के लिए पिछले वर्ष की तुलना में न्यूनतम समर्थन मूल्य उनहत्तर रुपए प्रति कुंतल बढ़ा दिया गया है। इसी तरह कुल चौदह फसलों का एमएसपी घोषित किया गया है, जिनमें दलहनी फसलें और मोटे अनाज शामिल हैं। सरकार का दावा है कि यह बढ़ोतरी उसके वादे के अनुरूप है, जिसमें उत्पादन लागत का कम से कम पचास फीसद अधिक एमएसपी तय किया जाता है। इसके अलावा, ब्याज सबवेंशन योजना के तहत किसानों को खेती और बागवानी के लिए तीन लाख रुपए तक और कृषि सहायक उद्यमों जैसे पशुपालन और मछली पालन के लिए दो लाख रुपए तक का कर्ज रियायती दर पर उपलब्ध कराने की घोषणा की गई है। कहा जा रहा है कि इससे किसानों को काफी लाभ मिलेगा और कृषि क्षेत्र में सुधार नजर आएगा। पर इन घोषणाओं से किसान संगठन कितने खुश हो पाते हैं, देखने की बात होगी, क्योंकि वे लंबे समय से न्यूनतम समर्थन मूल्य में विसंगतियों और कृषि सुविधाओं में कमी के मुद्दे उठाते रहे हैं। किसानों की स्थिति बेहतर करने के मकसद से स्वामीनाथन समिति का गठन किया गया था, जिसने सुझाव दिया कि न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी का कानून बनना चाहिए। फिर, उत्पादन लागत में किसानों के पारिवारिक श्रम की कीमत भी जोड़ी जानी चाहिए। मौजूदा सरकार ने वादा किया था कि किसानों को उनकी फसलों की कीमत लागत की डेढ़ गुना तक दी जाएगी। मगर न्यूनतम समर्थन मूल्य के निर्धारण में किसानों के पारिवारिक श्रम की कोई कीमत नहीं आंकी जाती। फिर, बीज, खाद, कीटनाशक, सिंचाई आदि पर आने वाले खर्च को भी ठीक से नहीं आंका जाता, जिसकी वजह से लागत और अंतिम मूल्य में बहुत अंतर नहीं रह जाता। खासकर धान जैसी फसलों पर उत्पादन लागत अधिक बैठती है। फिर भी, न्यूनतम समर्थन मूल्य में बढ़ोतरी से किसानों में फसल बोने को लेकर उत्साह बनता है। पर यह शिकायत आम है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य तय होने के बावजूद आढ़ती उस कीमत पर किसानों से फसलें नहीं खरीदते। ज्यादातर मामलों में उससे कम, बल्कि कई बार किसान काफी कम कीमत पर फसल बेचने को मजबूर होते हैं। इस पर रोक लगाने का कोई उपाय अभी तक नहीं किया गया है। इसीलिए एमएसपी की गारंटी का कानून बनाने की मांग जोर पकड़ती रही है। सरकार का वादा है कि वह किसानों की आय दोगुनी करेगी। इसके मद्देनजर कई योजनाएं भी चलाई गई हैं। किसान क्रेडिट कार्ड भी उसी में एक है। पर किसानों की दशा में कोई उल्लेखनीय सुधार नजर नहीं आ पा रहा, तो इसकी कुछ वजहें साफ हैं। एक तो, देश के अस्सी फीसद से ऊपर सीमांत किसान हैं, जो किसी तरह अपने परिवार के गुजारे भर की फसल पैदा कर पाते हैं। दूसरे, जलवायु परिवर्तन की वजह से सूखा, बाढ़, तूफान आदि के कारण फसलों के चौपट होने का खतरा दिनोंदिन बढ़ता गया है।

भ्रष्टाचार का रोग

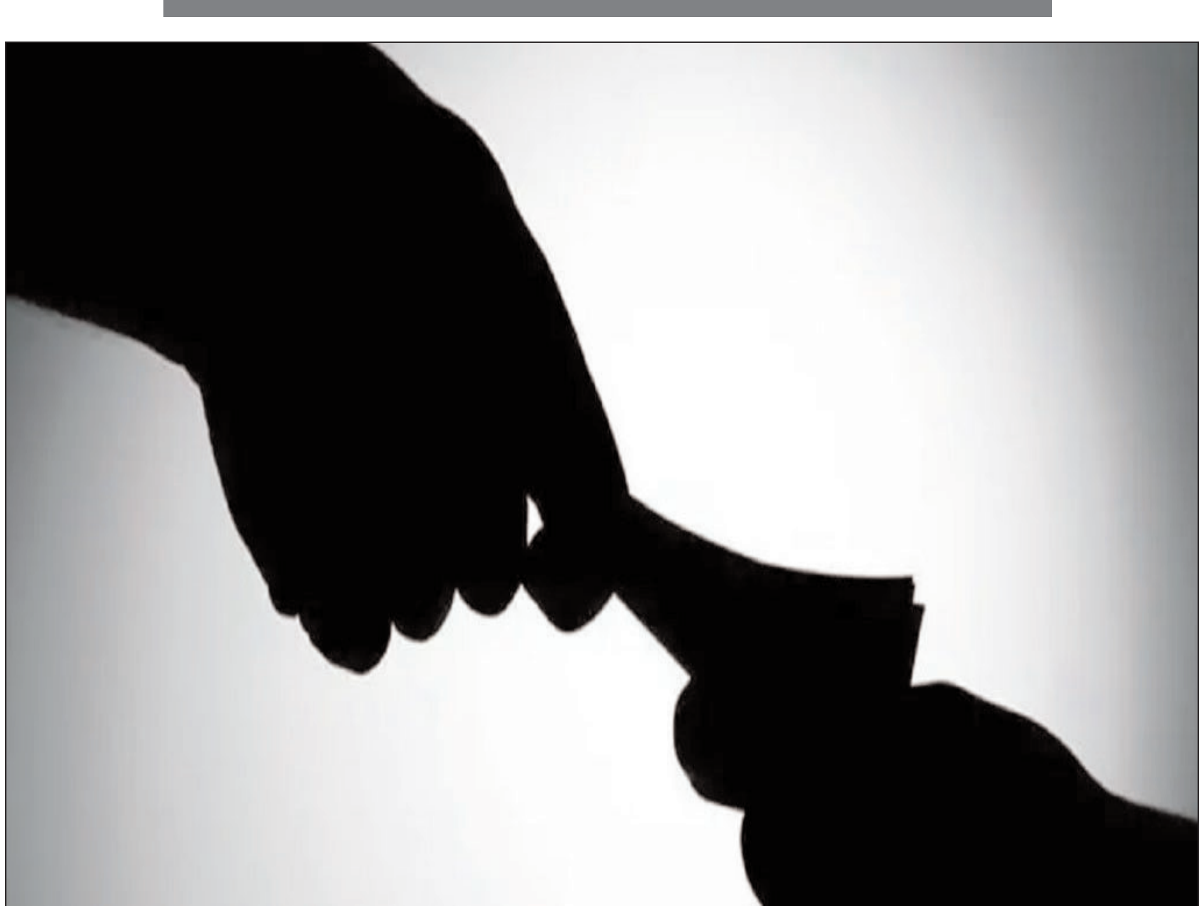

लोगों को समय के अनुसार रोजगार नहीं मिल पाता और जिनके पास सरकारी पद-प्रतिष्ठा है, वे अपनी छवि थोड़े लालच भाव में धूमिल करने में लगे रहते हैं! क्या इन लोगों को अपनी जमी-जमाई नौकरी, पद-प्रतिष्ठा व इज्जत का कोई भान नहीं? जिस तरह से वेतन होता है, उस तरह से कार्य तो शिथिल ही नजर आता है! बगैर डर-भय के हजारों-लाखों रुपए मिलने के बाद भी इनकी आत्मा को संतुष्टि नहीं मिलती। समझ से परे लगता है कि रिश्वतखोरी, गबन-घोटालों, और आर्थिक व अन्य पहलुओं से ये लोग नौकरी को दांव पर लगा देते हैं और उन्हें मलाल कुछ भी नहीं होता!

ऐसे लोगों की नकेल कसने के लिए कारगर और ठोस कदमों की जरूरत है। इन्हें निलंबित करने के बजाय सेवामुक्त करना चाहिए। न सिर्फ इन्हें जेल की सलाखों के पीछे धकेलना चाहिए, बल्कि सारी सुविधाए बंद होनी चाहिए! अक्सर रोजगार की तलाश में उच्च शिक्षित वर्ग निजी क्षेत्र में नौकरी में समय की महत्ता को समझते हुए भरसक मेहनत कर शिखर तक पहुंचता है। जबकि वेतनमान तुलनात्मक रूप से कम ही होता है। सरकारी नौकरी में अच्छा वेतन पाने के बाद भी बेईमानी की यह फितरत कर्मचारियों मे चिंतनीय है! भ्रष्टाचार की जड़ को खत्म करने के लिए नकेल कसना और समय-समय पर निरीक्षण, परीक्षण जरूरी है। साल 2022 का वैश्विक भुखमरी सूचकांक की रिपोर्ट जारी हो चुकी है। इसमें मुख्य रूप से बताया गया है कि भारत की हालत पाकिस्तान, बांग्लादेश और नेपाल से भी बदतर हो चुकी है। 121 देशों की रैंकिंग को लेकर जारी इस रिपोर्ट में भारत 107वें पायदान पर है, जबकि उसका पड़ोसी देश पाकिस्तान 99वें पायदान पर है। इस सूची में दक्षिण एशिया में सबसे बेहतर स्थिति में श्रीलंका है। आर्थिक दिक्कतों से जूझ रहे श्रीलंका को इस सूचकांक में 64वां स्थान दिया गया है। भारत के पड़ोसी देश नेपाल 81वें स्थान पर, जबकि बांग्लादेश 84वें स्थान पर है। इस पर भारत में सत्ता के समर्थक लोग यह तर्क दे रहे हैं कि जब श्रीलंका दिवालिया हो चुका है, उसके यहां मूलभूत खाद्यान्नों की भयंकर कमी हो गई है, तो श्रीलंका की स्थिति भारत से बेहतर कैसे हो सकती है। जबकि श्रीलंका का मसला बिल्कुल दूसरा है और वैश्विक भूख वाला सूचकांक को नापने का पैमाना बिल्कुल अलग है। ग्लोबल हंगर इंडेक्स की गणना तीन संकेतकों के औसत के रूप में की जाती है। कुपोषित आबादी का अनुपात (अल्पपोषण), पांच साल से कम उम्र के कम वजन वाले बच्चों का अनुपात, और बच्चों का पांच साल की उम्र से पहले मरना। इस पैमाने पर भारत लगातार पिछड़ता जा रहा है, क्योंकि उसका ध्यान ऊपर के तरफ है कि कैसे भारत की अर्थव्यवस्था को पांच खरब डालर का बनाया जाए।

चंदा मामा के घर

भारत की लोक संस्कृति में चांद को मामा कहा जाता है। हम सब जानते हैं कि बचपन में मामा के घर जाने के लिए हम कितने लालायित रहते थे। मन में यह भी विश्वास रहता था कि मामा के घर जाएंगे तो नाना-नानी और मामा-मामी से ढेर सारे उपहार मिलेंगे। ऐसा ही आज होता भी है। आगे भी होता रहेगा। इस चंद्रयान-2 के आकाश में चांद की ओर उड़ान भरने के पूर्व वैज्ञानिकों ने ऐसे यंत्रों को उसमें भरा है जिससे चांद पर उतरकर वहां की प्राकृतिक स्थितियों के चित्र लिए जाएंगे। वहां क्या-क्या पाया जाता है, इसकी जानकारी हमारे लिए उपयोगी होगी।

इस युग के वैज्ञानिकों ने कमाल के साथ धमाल भी कर रखा है। अचंभित करने वाले आविष्कार के साथ ग्रह-नक्षत्रों पर भी जाने के यंत्र और यान विकसित किए जा रहे हैं। सेना के लिए उपयोग में आने वाले हथियार हों या खेती की ऊपज बढ़ाने वाले उपकरण, जीवन के हर क्षेत्र में सुविधाएं लाने में वैज्ञानिकों की वाहवाही हो रही है। जल, थल और नम में इनके द्वारा आविष्कृत न जाने कितने उपकरण घूम रहे हैं। मानव जीवन को सुख-सुविधाओं से संपन्न बनाने के लिए वैज्ञानिक अनवरत कड़ी मेहनत करते हैं। चंद्रयान-2 भी इसी उद्देश्य से बनाया है। इस साल 22 जून को रवाना हुआ चंद्रयान ऐसी-वैसी जगह पर नहीं, बल्कि चंद्रमा के दक्षिण ध्रुव पर उतरने गया है। इसका मकसद चांद के दक्षिणी ध्रुव को टटोलना है। लैंडर विक्रम पता लगाएगा कि चांद पर भूकम्प आता है या नहीं। सबसे बड़ी बात तो यह कि अब चांद के दक्षिण ध्रुव पर भारत का तिरंगा लहराएगा।

भारत की लोक संस्कृति में चांद को मामा कहा जाता है। हम सब जानते हैं कि बचपन में मामा के घर जाने के लिए हम कितने लालायित रहते थे। मन में यह भी विश्वास रहता था कि मामा के घर जाएंगे तो नाना-नानी और मामा-मामी से ढेर सारे उपहार मिलेंगे। ऐसा ही आज होता भी है। आगे भी होता रहेगा। इस चंद्रयान-2 के आकाश में चांद की ओर उड़ान भरने के पूर्व वैज्ञानिकों ने ऐसे यंत्रों को उसमें भरा है जिससे चांद पर उतरकर वहां की प्राकृतिक स्थितियों के चित्र लिए जाएंगे। वहां क्या-क्या पाया जाता है, इसकी जानकारी हमारे लिए उपयोगी होगी। पृथ्वी पर के प्राकृतिक संसाधनों का हम भरपूर उपयोग कर रहे हैं। इसके बावजूद जल, थल और नभ पर इतने संसाधन हैं जिनकी खोज अभी बाकी है। ऐसे संसाधनों का उपयोग मानवता के कल्याण के लिए होगा। भारतीय समाज की यह विशेषता है कि ग्रह-नक्षत्रों को भी रिश्ते-नाते में बांध लिया जाता है। इनका मानवीकरण हो जाता है। इसलिए वे भी हमारे स्नेह भाजक ही रहते हैं। मेरे मन में यह प्रश्न उठता था कि समाज में लोग चंद्रमा को 'मामा' क्यों कहते हैं? अनुभव यह भी कि हर पीढ़ी के वे मामा ही हैं। जैसे दादा, पिता और बेटा सभी के मामा। भारतीय समाज में सब सनातन ही है। चंदा मामा भी सनातन।

भाद्र मास की शुक्ल चतुर्थी को दिन भर उपवास रख कर सायंकाल चांद को आंगन में खीर-पूड़ी और फल-फूल से अर्घ देने का व्रत होता है। उस शाम फल हाथ में लेकर ही चांद देखा जाता है। चतुर्थी का चांद कलंकी कहलाता है। हाथ में फल लिए बिना चांद देख लेने पर उस व्यक्ति को किसी का कुछ चुराना पड़ता है। या फिर पत्थर का टुकड़ा छत पर फेंका जाता है। जब 1961 में अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रांग और एडविन एल्ड्रिन चांद पर उतरे थे तो बिहार में चतुर्थी व्रत करने से लोग कतराने लगे थे। क्योंकि वे लोग चांद को भगवान मानते थे। उस चांद पर अमेरिकी लोगों ने अपने पांव रख दिए, तो भला वे कैसे अर्घ्य देते। लेकिन सबने पूजा की और श्रद्धापूर्वक करते आए हैं।

मनुष्य और चांद को लेकर और भी ढेर सारे कहानी-किस्से हैं। इतना स्पष्ट है कि चांद विभिन्न रूपों में हमारे बीच मामा बन कर ही रहता आया है। लोक जीवन में स्त्री का इतना प्यारा हो गया चांद कि उसने उसे भाई ही बना लिया। प्रेमी द्वारा प्रेमिका के मुख को चांद का टुकड़ा समझ लेना क्षणिक एहसास हो सकता है। लेकिन किसी महिला का भाई तो बहन के दिल में हमेशा एक ही भाव और रस में पगता रहता है। निश्चय ही अपने रोते हुए लाल को आंगन में खड़े होकर आकाश में उगे चांद को दिखा कर किसी मां ने कहा होगा-'देखो-देखो चंदा मामा'! मुन्ना चमकते चांद का गोला देख कर चुप हो गया होगा। अपने लाड़ले को दूध-भात खिलाते हुए भी चांद को दिखाया होगा। और इस तरह चांद सनातन मामा बन गया।

वैज्ञानिकों की दृष्टि में चांद का यह रूप नहीं आया होगा। लेकिन चंद्रयान को चांद पर भेजने का उद्देश्य यही रहा है, मामा के घर से कुछ ले आना। कुछ लोग तो चांद पर घर बनाने और वहीं जाकर विवाह करने की भी योजना बनाने लगे हैं। लोक संस्कृति में भांजे-भांजी के विवाह पर मामा को बहन के घर ही आने का रिवाज है। ब

सिनेमा उद्योग में फिल्मों के बढ़ते बजट पर बोले अमित

अभिनेता अमित सियाल इस समय अपनी फिल्म रेड 2 से चर्चा में हैं, जिसमें उन्होंने ऑफिसर की भूमिका अदा की है। अब अभिनेता ने फिल्म इंडस्ट्री में बढ़ते बजट और कलाकारों की हाई फीस पर प्रतिक्रिया दी है और कहा कि निर्माताओं को अपना स्टैंड लेने की जरूरत है। आइए जानते हैं उन्होंने क्या कहा।

अमित ने फिल्मों के बढ़ते बजट की बताई वजह

अमित सियाल ने हिंदी रश के साथ बातचीत की। उस दौरान अभिनेता से अनुराग कश्यप की टिप्पणी को लेकर सवाल किया गया, जिस पर अमिल सियाल ने बिना किसी का नाम लिए जवाब दिया। उन्होंने कहा, 'आप किसी ऐसे व्यक्ति को फिल्म में लेते हैं जो बहुत ऊंचे स्थान पर है। आप एक फिल्म निर्माता के रूप में उसके पास जाते हैं और यह अच्छी तरह जानते हुए कि वह एक व्यक्ति और एक्टर के रूप में कैसा है। यह उम्मीद करना कि लोग अचानक एक अच्छे एक्टर या व्यक्ति में बदल जाएंगे और उन्हें अपने स्तर पर लाएंगे, सिर्फ इसलिए कि आपने एक बेहतरीन स्क्रिप्ट लिखी है, यह भ्रम है। वो अपने जीवन से प्रतिदिन आप जैसे 500 लोगों को बाहर फेंक देते हैं।'

शिकायत करने की वजह नहीं है

आगे बातचीत करते हुए अभिनेता ने कहा, मैं समझता हूं कि लागत बहुत ज्यादा है, लेकिन आप जिस तरह की फिल्म बनाना चाहते हैं, उसके लिए आप गलत लोगों को नहीं चुन सकते। आप एक बड़ा सितारा चाहते हैं जो आपको दर्शकों की गारंटी दे, फिर आपको बिना शिकायत किए ये लागतें सहन करनी होंगी। शिकायत करने की कोई वजह नहीं है, अगर आपको लगता है कि कुछ गलत हो रहा है तो ऐसा न करें। किसी ने आपके सिर पर बंदूक नहीं तान रखी है।'

अनुराग कश्यप की किस टिप्पणी पर बोले अमित

अनुराग कश्यप ने लगभग एक साल पहले ह्यूमंस ऑफ सिनेमा के साथ एक इंटरव्यू में अपनी बात रखी थी। उन्होंने कहा था कि अक्सर फिल्म के बजट का एक बड़ा हिस्सा वास्तव में फिल्म बनाने में नहीं जाता है, बल्कि यह साज-सज्जा, एक्टर्स द्वारा दूर-दराज इलाके में खान-पान चीजों की मांग में जाता है।

बिना फायदे वाली चीज पर ध्यान नहीं देती

अभिनेत्री खुशी कपूर अकसर लोगों की आलोचनाओं का शिकार होती हैं। उनकी पहली फिल्म द आर्चीज को अच्छी प्रतिक्रिया नहीं मिली थी। उनकी दूसरी फिल्म नादानियां भी लोगों को पसंद नहीं आई। हाल ही में एक इंटरव्यू में अभिनेत्री ने कहा कि हर फिल्म उनके लिए सीखने का मौका है।

फिल्मों में काम करके हुई सहज

बातचीत में लवयापा अभिनेत्री ने माना कि उन्हें हमेशा से फिल्मों से प्यार रहा है। तीन फिल्मों के बाद वह अपने लिए एक मुकाम पाने में बहुत सहज हो गई हैं। उन्होंने कहा अभिनय के प्रति मेरा प्यार हमेशा से रहा है क्योंकि मैं फिल्म सेट के आस-पास ही पली-बढ़ी हूं। अगर आप खुद कोई विकल्प चुनते हैं तो यह बहुत आसान होता है। मुझे लगता है कि मेरे पास कहने के लिए कुछ है क्योंकि मैंने तीन फिल्में की हैं। मैं अपने विचारों और सोच को थोड़ा और व्यक्त कर सकती हूं।

आलोचनाओं को स्वीकार करना सीख लिया

खुशी ने कहा मुझे लगता है कि जब मैंने शुरुआत की थी, तो मैं बस चुप रहती थी और सुनती थी। इसलिए अब मुझे लगता है कि जब मैं लोगों के साथ काम करती हूं तो मैं अपने विचार व्यक्त कर सकती हूं। 24 साल की खुशी को अब तक फिल्मों के लिए बहुत अच्छी समीक्षा नहीं मिली है, लेकिन खुशी जोर देकर कहती हैं कि उन्होंने बाकी आलोचनाओं को छोड़ते हुए रचनात्मक आलोचना को स्वीकार करना सीख लिया है।

बिना फायदे वाली आलोचना सुनने का कोई मतलब नहीं

खुशी कपूर ने बताया जब आप कुछ पढ़ते हैं या किसी से बात करते हैं तो आप बता सकते हैं कि वे जो कह रहे हैं उसका क्या मतलब है। मुझे लगता है कि रचनात्मक आलोचना को स्वीकार करना जरूरी है। अगर कोई आलोचना वास्तव में आपकी मदद नहीं कर रही है, तो मुझे नहीं लगता कि इसे सुनने का कोई मतलब है।

खुशी कपूर की फिल्में

आपको बता दें खुशी कपूर ने जोया अख्तर के निर्देशन में बनी फिल्म द आर्चीज 2023 में बेट्टी कूपर की भूमिका निभाई थी। एक्ट्रेस ने 2025 में दो फिल्मों में काम किया। पहली जुनैद खान अभिनीत लवयापा और दूसरी नादानियां। नादानियां में इब्राहिम अली खान ने अभिनय किया है।

संदीप रेड्डी वांगा की 'स्पिरिट' से बाहर हुईं दीपिका?

'कबीर सिंह' और 'एनीमल' जैसी सुपरहिट फिल्में बनाने वाले निर्देशक संदीप रेड्डी वांगा इन दिनों अपने नए प्रोजेक्ट 'स्पिरिट' को लेकर चर्चाओं में बने हुए हैं। इस फिल्म में बाहुबली स्टार प्रभास मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। उनके साथ अभिनेत्री दीपिका पादुकोण के फिल्म में कास्ट किए जाने की चर्चाएं थीं। लेकिन अब इस फिल्म में दीपिका पादुकोण को लेकर एक बड़ी खबर सामने आ रही है। ये खबर बेशक दीपिका के फैंस का दिल तोड़ देगी। 'स्पिरिट' की स्टारकास्ट को लेकर अब एक नई खबर सामने आ रही है। कई मीडिया रिपोर्ट्स में ये दावा किया जा रहा है कि फिल्म से दीपिका पादुकोण की छुट्टी हो गई है। तेलुगु इंडस्ट्री की कई रिपोर्ट्स में ये कहा जा रहा है कि दीपिका पादुकोण अब इस फिल्म का हिस्सा नहीं रही गई हैं। हालांकि, इस पर अभी तक दीपिका या फिल्म के मेकर्स की ओर से कोई आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है। लेकिन रिपोर्ट्स के हवाले से ये खबर काफी तेज फैल रही है। हालांकि, अभी तक इस खबर की पुष्टि नहीं हुई है। ऐसे में दीपिका के फिल्म से बाहर होने के पीछे भी कई तरह के कारण बताए जा रहे हैं। रिपोर्ट्स में ये कहा जा रहा है कि सेट पर काम करने के घंटों को लेकर भी दीपिका और मेकर्स के बीच सहमति नहीं बन पा रही है। वहीं कुछ रिपोर्ट्स में ये भी दावा किया जा रहा है कि दीपिका ने फिल्म के लिए 20 करोड़ रुपए की मोटी रकम की मांग की। जो उनकी अब तक की सबसे ज्यादा फीस है। जबकि दीपिका ने अपनी लाइनें भी खुद बोलने से इंकार कर दिया। जिसके बाद संदीप रेड्डी वांगा और दीपिका के बीच तालमेल बिगड़ गया। नतीजा दीपिका को फिल्म से बाहर कर दिया गया। रिपोर्ट्स में ये भी कहा जा रहा है कि दीपिका के बाहर होने के बाद अब मेकर्स फिल्म की नई हीरोइन की तलाश कर रहे हैं। इससे पहले दीपिका की प्रेग्नेंसी की वजह से फिल्म की शूटिंग में देरी हुई थी। हालांकि, बेटी के जन्म के बाद दीपिका ने फिल्म के सेट पर वापसी की थी। लेकिन अब इन नई रिपोर्ट्स के मुताबिक, वो फिल्म से बाहर हो गई हैं।

परेश रावल की जगह बाबू भैया के किरदार में दिखेंगे पंकज त्रिपाठी?

दिग्गज अभिनेता परेश रावल के 'हेरा फेरी 3' से खुद को बाहर करने के बाद से ही उनकी जगह पर दूसरे एक्टर को लेकर अटकलें तेज हो गई हैं। आइकॉनिक किरदार बाबू भैया के लिए पंकज त्रिपाठी का नाम सबसे ऊपर आ रहा है। लेकिन क्या वाकई पंकज त्रिपाठी बाबू भैया की भूमिका निभाएंगे? इस पर खुद एक्टर ने अब रिएक्शन दिया है।

पंकज त्रिपाठी ने दी प्रतिक्रिया

'बॉलीवुड हंगामा' के साथ एक इंटरव्यू के दौरान पंकज त्रिपाठी से पूछा गया कि सोशल मीडिया पर लोग उन्हें हेरा फेरी 3 में कास्ट किए जाने की बात कर रहे हैं। इस पर अभिनेता ने जवाब देते हुए कहा कि वो कभी भी खुद को परेश रावल के बराबर नहीं समझते। पंकज ने कहा, 'मैंने भी लोगों की बातें सुनी और पढ़ी, लेकिन मैं खुद को उस किरदार के लायक नहीं मानता। परेश जी एक बेहतरीन कलाकार हैं। उनके सामने मैं कुछ भी नहीं हूं।'

पकंज त्रिपाठी का नाम सबसे ऊपर

बता दें जहां एक ओर पंकज त्रिपाठी की कॉमिक टाइमिंग और अभिनय की तारीफ होती रही है, वहीं दर्शकों के बीच बाबू भैया का किरदार एक अलग ही भावनात्मक जुड़ाव रखता है। ऐसे में सोशल मीडिया पर फैंस परेश की जगह पकंज त्रिपाठी का ही नाम ले रहे हैं जो इस रोल को अच्छे से निभाने का दम रखते हैं।

परेश रावल ने छोड़ी फिल्म 'हेरा फेरी 3'

परेश रावल के अचानक हेरा फेरी 3 से अलग होने की वजहों पर काफी चर्चा हो रही है। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, अक्षय कुमार की प्रोडक्शन कंपनी ने परेश रावल पर 25 करोड़ का दावा ठोका है। आरोप लगाया गया है कि परेश रावल ने फिल्म साइन करने के बाद अचानक शूटिंग बीच में छोड़ दी। हालांकि, परेश रावल ने खुद सोशल मीडिया पर बयान जारी कर साफ किया कि उनके और निर्देशक प्रियदर्शन के बीच कोई क्रिएटिव मतभेद नहीं है और उन्होंने अपनी मर्जी से फिल्म छोड़ी है।

पंकज त्रिपाठी की अपकमिंग सीरीज

फिल्म हेरा फेरी 3 को लेकर पंकज त्रिपाठी ने सीधे तौर पर ना तो हां कहा और ना ही मना किया, लेकिन वह जल्दी ही वेब सीरीज क्रिमिनल जस्टिस 4 में नजर आने वाले हैं। इस सीरीज में उनके साथ जीशान अयूब, मिता वशिष्ठ, सुरवीन चावला और श्वेता बसु प्रसाद जैसे कलाकार भी होंगे। यह शो 29 मई से जियो हॉटस्टार पर स्ट्रीम होने वाला है।

शंघाई इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में बतौर जूरी हिस्सा लेंगी किरण राव

27वें शंघाई इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल का आगाज अगले महीने से होने जा रहा है। इस बार इस प्रतिष्ठित फिल्म फेस्टिवल में निर्माता-निर्देशक किरण राव भी शिरकत करने वाली हैं। वे बतौर जूरी सदस्य फेस्टिवल से जुड़ेंगी। यह फेस्टिवल चीन के शंघाई में 13 जून से 22 जून 2025 तक आयोजित होने वाले हैं।

किरण ने जताई खुशी

फेस्टिवल में बतौर जूरी सदस्य नियुक्त किए जाने पर किरण राव ने खुशी जताई है। उनका कहना है कि यह सम्मान की बात है। किरण राव के मुताबिक, अंतर्राष्ट्रीय सिनेमा और कहानी कहने को बढ़ावा देने वाले महोत्सव का हिस्सा बनना सम्मान की बात है। मैं स्क्रीन पर विभिन्न प्रकार की आवाजों और नजरियों का अनुभव करने और दुनियाभर के अपने साथी निर्णायकों के साथ जुड़ने के लिए उत्सुक हूं।

ये दिग्गज हस्तियां होंगी शामिल

किरण वैश्विक सिनेमा की प्रतिष्ठित हस्तियों के पैनल में शामिल होंगी, जिसका नेतृत्व इतालवी निर्देशक और पटकथा लेखक ग्युसेप टॉर्नेटोर करेंगे, जो ऑस्कर विजेता फिल्म सिनेमा पैराडाइसो के लिए जाने जाते हैं। जूरी सदस्यों में सिनेमा से जुड़ी प्रतिष्ठित हस्तियां शामिल हैं। अर्जेंटीना के फिल्म निर्माता इवान फंड, चीनी अभिनेता और निर्देशक हुआंग बो, यूनानी निर्माता थानासिस कराथनोस, चीनी निर्देशक और डॉक्यूमेंट्री फिल्म निर्माता यांग लीना और चीनी अभिनेत्री योंग मेई इस लिस्ट में हैं।

लापता लेडीज से बटोरी वाहवाही

किरण राव के वर्क फ्रंट की बात करें तो उनके निर्देशन में बनी लापता लेडीज ने जबर्दस्त तरीके से तारीफें बटोरीं। इस फिल्म में प्रतिभा रांटा, नितांशी गोयल, छाया कदम और रवि किशन जैसे सितारे नजर आए। एक इंटरव्यू में किरण राव ने कहा कि वह इस फिल्म की वास्तविक सीमाओं से रूबरू थीं, क्योंकि इसका बजट कम था। इसमें कोई बड़े सितारे नहीं थे। इसके बावजूद उन्होंने कंटेंट और अपनी टीम पर भरोसा जताया।

बिग बॉस 19 हुआ कन्फर्म, सलमान ही होस्ट करेंगे शो

एक्टर सलमान खान के पॉपुलर शो बिग बॉस 19 को लेकर लंबे समय से सस्पेंस बना हुआ था। कहा जा रहा था कि कलर्स टीवी और प्रोडक्शन हाउस बनीजाय एशिया के बीच अनबन के चलते इस बार शो कैंसिल हो सकता है लेकिन अब फैंस के लिए राहत की खबर है। रिपोर्ट्स के मुताबिक... बिग बॉस का 19वां सीजन अब कन्फर्म हो गया है और शो जरूर आएगा। इसे एंडेमोल शाइन इंडिया प्रोड्यूस करेगा। सबसे खास बात ये है कि इस बार भी सलमान खान ही शो को होस्ट करेंगे। बताया जा रहा है कि सलमान जून के आखिरी हफ्ते में शो के पहले प्रोमो की शूटिंग शुरू कर सकते हैं। शो जुलाई में ऑनएयर हो सकता है। हालांकि, अभी तक शो के मेकर्स की तरफ से कोई ऑफिशियल अनाउंसमेंट नहीं हुआ है। गौरतलब है कि इससे पहले ऐसी खबरें आई थी कि शो के बड़े स्पॉन्सर के पीछे हटने की वजह से इसका बजट मुश्किल में आ गया है।

भोजन के बाद क्यों खाते हैं सौंफ, पान

स्वस्थ शरीर के लिए पाचन तंत्र सही होना जरूरी है। यदि पाचन तंत्र में कोई गड़बड़ी होती है तो शरीर में कई तरह की समस्याएं सामने आती हैं। मसलन गैस्ट्रिक, एसिडिटी, कब्ज, डायरिया, अपच, बदहजमी आदि। कुछ घरेलू नुस्खों को अपनाकर पेट को गैस और अपच से छुटकारा दिला सकते हैं। खाना खाने के बाद कुछ चीजों के सेवन से पाचन में काफी सहायता मिलती है। साथ ही, ये माउथ फ्रेशनर का भी काम करता है।

- एक कप पानी में सौंफ, इलायची और अदरक व एक चुटकी हींग अच्छी तरह से मिक्स करें। पेट में गैस बनने से रोकने के लिए हर बार खाना खाने के बाद एक टुकड़ा अदरक चबाना न भूलें।
- कब्ज की समस्या होने पर सौंफ का सेवन करें। सौंफ का सेवन पाचन और कब्ज से निजात दिलाने में काफी मददगार है।
- अगर आपके मुंह से हमेशा बदबू आती रहती है तो आप इलायची का ज्यादा इस्तेमाल करें। इलायची मुंह की बदबू हटाने में सबसे कारगर साबित होती है और इलायची व पुदीनायुक्त पान चबाने से भी मुंह की बदबू से निजात मिलती है।
- खाना खाने के बाद इलायची का सेवन करना काफी फायदेमंद होता है। इसमें मौजूद तत्व खाने को पचाने में मदद करते हैं। साथ ही इसके रासायनिक गुण की वजह अंदरूनी जलन में भी राहत मिलती है। अगर आपको लगातार उल्टी जैसा महसूस हो रहा हो तो भी आप छोटी इलायची का इस्तेमाल कर सकते हैं।
- इलायची के रासायनिक गुण शरीर में मौजूद फ्री-रेडिकल और दूसरे विषैले तत्वों को दूर करने का भी काम करता है। इससे रक्त भी साफ होता है।
- कफ की समस्या होने पर अदरक युक्त चाय पिएं। इसका सेवन करने से ठंड की वजह से गले में खराश और कफ की समस्या से निजात मिलती है। मधु के साथ अदरक के छोटे टुकड़े को चबाकर भी इसमें आराम मिलता है।
- पान कई बीमारियों का नाश करता है। यदि आप केवल पान के पत्ते का इस्तेमाल करते हैं तो वह काफी लाभकारी हो सकता है। इसे खाने से गंभीर से गंभीर बीमारियों से निजात मिल सकता है। इसमें कई तरह के एंटीसेप्टिक गुण छिपे हैं।
- पान के पत्ता का वैसे माउथ फ्रेशनर की तरह इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन इसे चबाने से हमारे लिए काफी फायदेमंद हो सकता है। जब हम इसे चबा कर खाते हैं तब हमारी लार ग्रंथि पर असर पड़ता है। इससे ज्यादा लार बनने में मदद मिलती है। जो हमारी पाचन तंत्र के लिए बहुत ही जरूरी है। अगर आपने भारी भोजन भी कर लिया है उसके बाद आप पान खा लें। इससे आपको भोजन आसानी से पच जाएगा।
- पान के पत्तों में कई ऐसे यौगिक होते हैं जो सांसों में बदबू को खत्म करता है। इसके अलावा पान में लौंग, सौंफ, इलायची जैसे विभिन्न मसाले मिलने से ये एक बेहतरीन माउथ-फ्रेशनर भी बन जाता है।
- अगर आपके मसूड़ों में गांठ, सूजन या फिर खून आ रहा हो तो इसके लिए पान के पत्ते को पानी में उबालकर उन्हें मैश कर लें। इन्हें मसूड़ों पर लगाने से खून बहना बंद हो जाता है।
- पान के पत्ते के रस को गैस्ट्रोप्रोटेक्टिव गतिविधि के लिए भी जाना जाता है जिससे गैस्ट्रिक अल्सर को रोकने में मदद मिलती है।
- इसका आयुर्वेद में बाल तोड़ फोड़े-फुंसी के इलाज के लिए इस्तेमाल किया जाता है। पान के पत्ते गरम करके उनमें अरंडी का तेल लगाकर फोड़े पर लगाने से आराम मिलता है।
- पान के पत्ते के डंठल को अरंडी के तेल में मिलाकर खाने से कब्ज से राहत पाई जा सकती है। इसके अलावा पान के पत्ते के साथ कालीमिर्च, त्रिफला और नींबू के सेवन से भी कब्ज का इलाज किया जा सकता है।

पेनकिलर है हानिकारक

जीवन में बहुत बार ऐसे अवसर आते हैं जब हमें पेनकिलर दवाओं का सेवन करना पड़ता है। विशेषत आस्टियो-आर्थराइटिस के मरीजों को अधिक मात्रा में पेनकिलर दवाओं का सेवन करने की आदत हो जाती है। ऐसे मरीजों को यदि हृदय रोग भी हो तो ये दवाएं उनके लिए बहुत खतरनाक हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त अधिक मात्रा में या पेनकिलर का अधिक सेवन हमारे गुर्दों को क्षतिग्रस्त कर सकता है।

दिल की हिफाजत के लिए पैदल चलें

अपने बुजुर्गों को अक्सर यह कहते सुना होगा कि पैदल चलना सेहत के लिए अच्छा है। अब तो विज्ञान ने भी इसे सच साबित कर दिया है। शोधकर्ताओं के अनुसार भारतीय जीवनशैली में आने वाले बदलाव की वजह से अगले दो दशकों में यहां हृदय रोग के बढ़ने की आशंका है। इस नतीजे पर पहुंचने के लिए शोधकर्ताओं ने लगभग चार हजार प्रतिभागियों के आंकड़ों का विश्लेषण किया।

एलर्जी के कितने रूप

एलर्जी तब होती है, जब शरीर किसी पदार्थ के प्रति प्रतिक्रिया करता है। एलर्जी को हल्के में लेना सेहत के लिए भारी पड़ सकता है, लेकिन कुछ सावधानियां बरतकर एलर्जी से बचा जा सकता है। फिर भी अगर कोई शख्स एलर्जी से ग्रस्त हो ही गया, तो उसका इलाज संभव है ...

देश में लगभग 25 फीसदी जनसंख्या एक या एक से अधिक एलर्जी से संबंधित रोगों से ग्रस्त है। वे पदार्थ जिनके कारण शरीर में प्रतिक्रिया होती है, एलर्जन कहलाते हैं। एलर्जी के विभिन्न प्रकार होते हैं। एटोपिक डर्मेटाइटिस भी एलर्जी का एक प्रकार है, जिसमें त्वचा में सूजन आ जाती है। यह समस्या उन लोगों में ज्यादा पाई जाती है, जिनके परिवार के अन्य सदस्यों में भी एलर्जी के लक्षण पाए जाते हैं।

खाद्य पदार्थों से होने वाली एलर्जी

इस तरह की एलर्जी में हमारे शरीर का प्रतिरक्षा तंत्र (इम्यून सिस्टम) भोजन में शामिल किसी खास प्रोटीन के प्रति अतिसंवेदनशीलता प्रकट करता है। ऐसे खाद्य पदार्थों की थोड़ी सी मात्रा खाने से एलर्जी के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। कुछ खास खाद्य एलर्जन्स में दूध, अंडे, मछली और अन्य मांसाहारी भोजन, सोया, शिमलामिर्च, फास्टफूड्स और गेहूं भी शामिल हैं। फूड इनटॉलरेन्स और फूड एलर्जी में एक खास अंतर यह होता है कि एलर्जी में प्रतिरक्षा तंत्र एक अनावश्यक प्रतिक्रिया प्रकट करता है, जो उस खाद्य पदार्थ में शामिल किसी खास प्रोटीन के कारण होता है। दूसरी ओर फूड इनटॉलरेन्स किसी पाचक एन्जाइम की कमी के कारण होता है।

लेटेक्स एलर्जी

लेटेक्स रबर के पौधे से स्रावित दूध जैसा दिखने वाला चिपचिपा द्रव होता है, जिसमें कुछ रसायन मिलाकर रबर का निर्माण किया जाता है। इसका इस्तेमाल दस्ताने, गुब्बारे, रबर बैन्ड, इरेजर व खेल के सामान बनाने में किया जाता है। इस तरह की एलर्जी उन लोगों में ज्यादा देखने को मिलती है, जो लेटेक्स की बनी चीजें ज्यादा उपयोग में लाते हैं। उदाहरण के तौर पर डॉक्टरों और पैरामेडिकल कर्मियों को संक्रमण से बचाव के लिए लेटेक्स से बने दस्ताने पहनने होते हैं।

ऐसे लोगों में यह एलर्जी ज्यादा देखी गई है। लेटेक्स एलर्जी से पीड़ित 50 फीसदी लोगों में अन्य तरह की एलर्जी भी देखी गयी है। ऐसे लोगों में खाद्य एलर्जी भी तुलनात्मक रूप से ज्यादा होती है। परफ्यूम, इत्र और रसायन कुछ लोगों को सुगंधित स्प्रे, इत्र, व रसायनों से भी विभिन्न प्रकार की एलर्जी हो जाती है।

खिलौनों से एलर्जी- विशेषतः सॉफ्ट टॉयज और फर वाले टेडी बियर से बच्चों में त्वचा की एलर्जी व दमा की शिकायत हो जाती है।

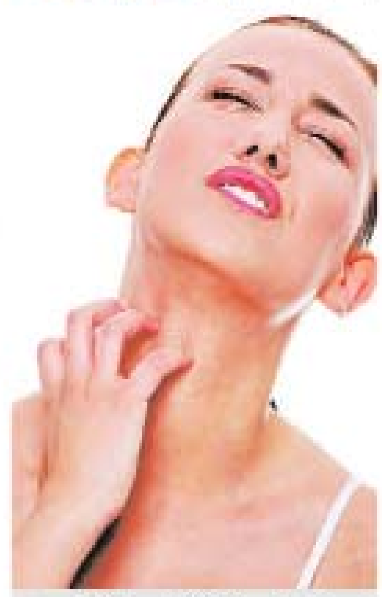

त्वचा की एलर्जी के मुख्य लक्षण

- त्वचा पर खुजली होना।
- बार-बार त्वचा का संक्रमण।
- शरीर के जोड़ों वाले भागों पर ज्यादा असर होना।
- रोग का पारिवारिक इतिहास।
- त्वचा पर पपड़ी का जमना।
- मुंह के कोनों का फटना।
- हाथ या पैर में खुजली होना।

दवाओं से एलर्जी

दवाओं से एलर्जी के प्रभाव का दायरा काफी बड़ा है। हर व्यक्ति के शरीर पर इसके अलग- अलग असर देखने को मिल सकते हैं। किसी व्यक्ति के शरीर पर चकत्ते और खुजली हो सकती है, वहीं दूसरे को कोई दिक्कत न हो ऐसा भी संभव है। इस तरह की एलर्जी कुल होने वाली एलर्जी का 5 से 10 फीसदी होती है। कुछ दवाओं के प्रति एलर्जी ज्यादा देखी जाती है। एंटीबायोटिक्स में जैसे पेंसिलीन, दर्द निवारक दवाएं, मिर्गी के दौरे की दवाएं और कीमोथेरेपी (कैंसर की दवाएं)। दवाओं से होने वाली गंभीर प्रकार की एलर्जी के लक्षणों में उल्टी से लेकर बालों का झड़ना, पेट खराब होना और दस्त आदि शामिल हैं। कई बार ब्लड प्रेशर के इलाज में दी जाने वाली कुछ दवाओं के एलर्जन से खांसी, चेहरे और जीभ में सूजन जैसे लक्षण प्रकट हो जाते हैं।

डायग्नोसिस

त्वचा परीक्षण: ये परीक्षण एलर्जी उत्पन्न करने वाले पदार्थ की पहचान के लिए किए जाते हैं।

रक्त परीक्षण: रक्त में विशिष्ट एंटीबॉडी से संबंधित परीक्षण किया जाता है।

इनविट्रो परीक्षण: फूड एलर्जी की संभावना का पता करने के लिए किया जाता है।

कीटों के डंक से एलर्जी हममें से अनेक लोग मधुमक्खियों और बर्र के डंक की पीड़ा बर्दाश्त कर चुके हैं और तब आपको यह भी ध्यान जरूर होगा कि उस जगह पर किस तरह से तीखी पीड़ा के साथ लालिमा और सूजन आ जाती थी। जो लोग इस तरह की एलर्जी से पीड़ित होते हैं, उनमें यह स्थिति और ज्यादा गंभीर हो जाती है। अन्य गंभीर लक्षणों में चेहरे, गले और जीभ पर सूजन, सांस लेने में दिक्कत, शरीर में भारीपन, पेट में मरोड़, जी मिचलाना और शरीर में चकत्ते व खुजली आदि को शुमार किया जाता है। पालतू जानवरों से एलर्जी पालतू जानवरों के रोएं, रूसी, लार और पेशाब में पाए जाने वाले पदार्थ एलर्जी पैदा कर सकते हैं। इसके अलावा इन जानवरों के रोएं में एकत्र होने वाले परागकण और फफूंद के बीजाणु (स्पोर्स) भी एलर्जी का कारण बन सकते हैं। इस तरह की एलर्जी के लक्षणों में छींके आना, खुजली होना, आंखों से पानी आना और अस्थमा तक के लक्षण शामिल हैं। पालतू जानवरों की उपस्थिति अन्य किस्म की एलर्जी से पीड़ित लोगों में लक्षणों की तीव्रता बढ़ाने का कारण बन सकती है।

उपचार

एलर्जी का इलाज काफी लंबा चलता है। इसलिए रोगी को धैर्यपूर्वक इलाज कराना चाहिए। डॉक्टर के परामर्श से दवाओं का सही व नियमित प्रयोग करना चाहिए। एलर्जी की समस्या में कुछ दवाएं कारगर होती हैं।

जैसे सेट्रीजीन (ब्रांड नेम नहीं बल्कि केमिकल एलीमेंट है), लीवो सेट्रीजीन, फेक्सोफेनाडीन, क्लोरफेनीरामीन और मोंटील्यूकास्ट आदि। एलर्जी के इलाज में इम्यूनोथेरेपी का भी इस्तेमाल किया जाता है।

नीम एक लेकिन फायदे अनेक

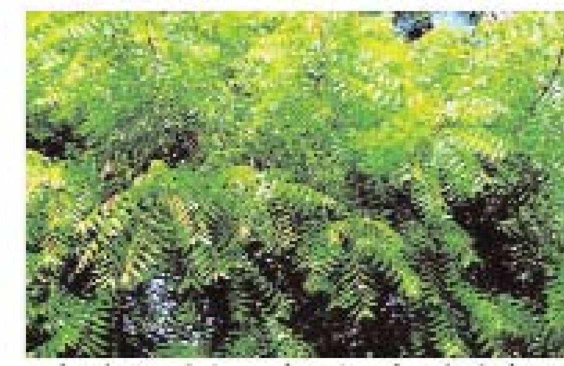

सेहत के लिहाज से नीम एक सौगात की तरह है। इसके पत्ते और छिलकों में ऐसे तत्व पाए जाते हैं जिनमें गंभीर बीमारियों को ठीक करने की क्षमता पाई जाती है। नीम का जूस हालांकि कड़वा होता है लेकिन इसके जूस को पीने से तन और मन दोनों तंदुरुस्त रहते हैं। नीम के सेवन के फायदों पर डालते हैं एक नजर

त्वचा के लिए फायदेमंद

नीम के पत्तों में विटामिन सी पाई जाती है। नीम के पत्तों को पीसकर शरीर पर लगाने से त्वचा से संबंधित रोग ठीक होते हैं। नीम के पत्ते त्वचा पर बने काले धब्बों को हटाने और त्वचा को साफ रखने में फायदेमंद हैं।

अस्थमा के इलाज में कारगर

नीम की पत्तियां नियमित रूप से खाने पर अस्थमा के इलाज में मदद मिलती है। नीम की पत्तियां श्वास रोग, कफ और बलगम रोकने में सहायक है।

घावों को भरने में फायदेमंद

पेट की बीमारियों के लिए नीम काफी उपयोगी है। नीम पीएच स्तर को नियंत्रित करने में उपयोगी होने के साथ ही अल्सर होने से रोकता है।

मधुमेह को नियंत्रित रखने में मददगार

नीम की पत्तियां शरीर में शुगर के स्तर को नियंत्रित रखने में मदद करती हैं। नीम का उपयोग टाइप 2 मधुमेह के इलाज में किया जा सकता है। नीम एक तरीके से इंसुलिन का काम करता है।

दांतो के लिए फायदेमंद

नीम का दातुन नियमित रूप से इस्तेमाल करने से दांतों में पाए जाने वाले कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। इससे मसूड़े मजबूत, दांत चमकीले और निरोगी हो जाते हैं।

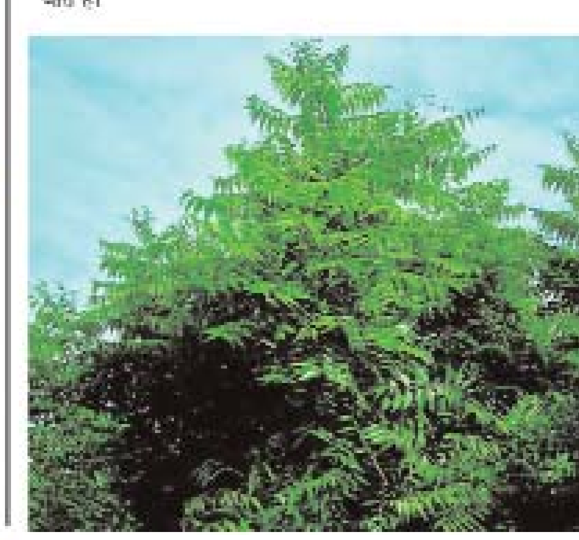

ये हैं सबसे उम्दा देश...

हाल ही में हुए एक सर्वे में दुनिया के 196 देशों में से 10 सबसे उम्दा देशों को चुना गया है। यह सर्वे गुड कंट्री इंडेक्स द्वारा कराया गया। सबसे बेहतर देश आयरलैंड को चुना गया। हैरानी की बात है कि इस सूची में भारत, चीन और यहां तक कि अमेरिका जैसे देश शामिल नहीं हैं। इन देशों को पर्यावरण और कुदरती संसाधनों को बचाने में सहयोग, विश्व शांति बनाए रखने में योगदान, समानता, समृद्धि और साइंस एंड टेक्नोलॉजी में आगे रहने के चलते 'टॉप टेन' में जगह दी गई।

फिनलैंड

उत्तरी यूरोप में स्थित इस देश को साइंस एंड टेक्नोलॉजी और समृद्धि के लिए इस सूची में शामिल किया गया है। इस देश के नाम सबसे ज्यादा नोबेल प्राइज हैं। यह क्वालिटी इंटरनेशनल पब्लिकेशन और एक्सपोर्ट के लिए जाना जाता है।

स्विटजरलैंड

यह देश अपने खूबसूरत पहाड़ों, विंटर स्पोर्ट्स और मनोहारी प्राकृतिक नजारों के लिए जाना जाता है। यहां के लोगों का 'स्टैंडर्ड ऑफ लिविंग' काफी अच्छा है।

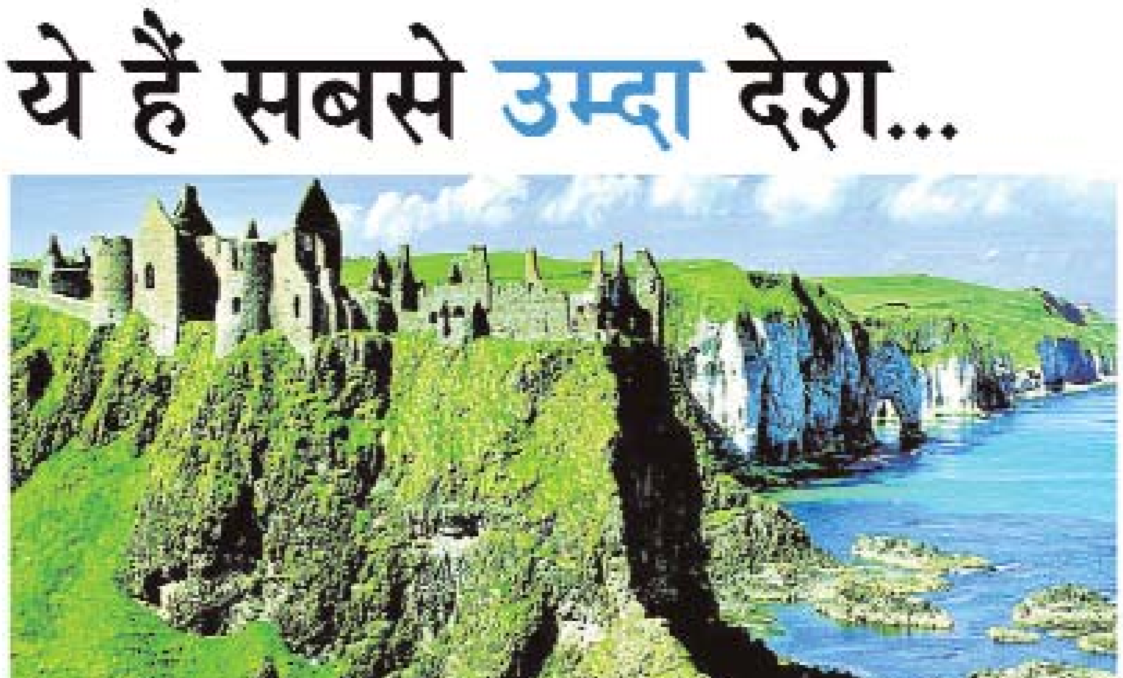

आयरलैंड इस देश को 'टॉप टेन' देशों में पहला स्थान मिला है। यह देश सभी मानकों में नंबर वन माना गया है। कल्चर, वर्ल्ड ऑर्डर, स्वास्थ्य, लोगों का उच्च जीवन-स्तर, युद्ध की स्थिति सेवाओं में मजबूत भागीदारी को देखते हुए इसे सर्वे में पहले नंबर पर रखा गया।

नीदरलैंड: यह देश अपने 'पॉजिटिव माइंडसेट एटीट्यूड' के लिए मशहूर है। नीदरलैंड अपने कल्चर, वर्ल्ड ऑर्डर, समानता, स्वास्थ्य और लोगों के उच्च जीवन स्तर की वजह से इस सूची में है। इसी के साथ नीदरलैंड को 'फ्रीडम ऑफ मूवमेंट' और 'प्रेस फ्रीडम' के लिए भी रेट किया गया है।

न्यूजीलैंड

इस देश को पर्यावरण और साइंस एंड टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए इस सूची में शामिल किया गया है। यहां के लोग 'इको फ्रेंडली' घरों को ही तरजीह देते हैं।

नॉर्वे

प्राकृतिक खूबसूरती और शहरों के विकास के लिए नॉर्वे को आठवें स्थान पर रखा गया है। नार्वे पर्यावरण संरक्षण, विश्व शांति के लिए प्रयास और लोगों के 'हाई स्टैंडर्ड ऑफ लिविंग' के लिए जाना जाता है।

यूनाइटेड किंगडम

क्वीन एलिजाबेथ के देश यूनाइटेड किंगडम को इस रैंक में 7वां स्थान मिला है। इस देश को समानता, समृद्धि, स्वास्थ्य और लोगों के उच्च जीवन स्तर के लिए इस सूची में जगह दी गई है। इसके अलावा यह साइंस और टेक्नोलॉजी में नंबर-1 देश है।

डेनमार्क

यह खूबसूरत देश अपने कल्चर, बेहतरीन स्वास्थ्य सुविधाओं और लोगों के उच्च जीवन-स्तर के लिए जाना जाता है। डेनमार्क को फार्मास्यूटिकल एक्सपोर्ट, दूसरे देशों को खाद्यान्न में मदद और गरीब देशों को डोनेशन देने में आगे रहने के लिए इस सूची में शामिल किया गया है।

बेल्जियम

यूरोप का यह देश समानता, समृद्धि और लोगों के बेहतर स्वास्थ्य के लिए अव्वल देशों में गिना जाता रहा है। इसके अलावा भी इस देश को बेहतरीन क्रिएटिव गुड्स एक्सपोर्ट, फ्रीडम ऑफ मूवमेंट और प्रेस फ्रीडम के लिए 'टॉप टेन' की सूची में शामिल किया गया है।

स्वीडन

यह देश अपने हाउसिंग स्टोर 'इकेया', स्विस चॉकलेट और वोदका के लिए मशहूर है। इसके अलावा पर्यावरण संरक्षण में यह देश आइसलैंड और कनाडा के बाद तीसरे नंबर पर है। यह देश सीओ2 और ग्रीन हाउस गैसों के कम से कम उत्सर्जन के लिए भी जाना जाता है।

रेसिपी

हरी मटर का पराठा

कितने लोगों के लिए 8

सामग्री

3 कप आटा, 2 टे.स्पून घी, आधा टी स्पून नमक।

भरावन के लिए:

2 कप उबली हुई हरी मटर, 5 बारीक कटी हरी मिर्च, 1 टी स्पून जीरा, 1 टे.स्पून घी, नमक स्वादानुसार। तलने के लिए आवश्यकतानुसार घी।

विधि

भरावन तैयार करने के लिए: उबली हुई मटर को हाथ से अच्छी तरह मैश कर लें। एक पैन में घी गर्म करें जब घी गर्म हो जाए तो उसमें जीरा डाल दें। जब जीरा चटकने लगे तो हरी मिर्च, मैश की हुई मटर और नमक डालकर 1 मिनट तक भूनें और मिश्रण को ठंडा होने के लिये रख दें।

पराठे के लिए आटे को छानकर उसमें नमक और घी मिलाकर, पानी डालकर मुलायम गूंथ लें। 15 मिनट तक ढक कर रख दें। उसके बाद आटे की लोइयां बनाकर उसमें एक-एक चम्मच भरावन की सामग्री भरकर अच्छी तरह बंद कर दें, चकले बेलन की सहायता से बेल कर गर्म तवे पर डालकर दोनों तरफ से घी लगाकर अच्छी तरह सेंक लें। गर्मागर्म मटर का पराठा चटनी या अचार के साथ सर्व करें।

सेब की चटनी

कितने लोगों के लिए 10

सामग्री

500 ग्राम हरे सेब (छीलकर कटे हुए), 2 टे.स्पून घी या तेल, 1-1/2 टी स्पून जीरा, 2 हरी मिर्च (बारीक कटी हुई), 2 टी स्पून पिसा अदरक, 1 टी स्पून हल्दी पाउडर, 1/4 कप पानी, 1/2 टी स्पून दालचीनी, 1 चुटकी जायफल (पिसा हुआ), 1 कप चीनी।

विधि

तेल या घी को गर्म करके जीरे को भून लें। हरी मिर्च व अदरक पेस्ट डालकर 1 मिनट पकाएं फिर सेब और हल्दी डाल कर 2-3 मिनट तक हिलाएं। आंच धीमी कर के पानी, दालचीनी व जायफल डालें। जब तक सेब नरम न हो जाए तब तक बीच-बीच में हिलाते हुए पकाते रहें। चीनी डाल कर चटनी को तब तक पकाएं जब तक कि जैम जैसी न लगने लगे।

पूर्वजों की स्मृति में लगाए पौधे - मोहन सिंह

शहीद महेंद्र सिंह की स्मृति में बंधे परिंडे

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। राजस्थान पुलिस के हेड कांस्टेबल शहीद महेंद्र सिंह की स्मृति में कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें शहीद महेंद्र सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। एल ओ मोहन सिंह ने कहा कि पूर्वजों की स्मृति में पौधारोपण करना चाहिए और पेड़ बनने तक उसे पौधे की सही प्रकार से देखभाल करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में बरसात का मौसम शुरू होने वाला है ऐसे में प्रत्येक व्यक्ति को अपने घर आंगन और आस-पास के खाली स्थान पर पौधारोपण करना चाहिए। उन्होंने बताया कि राजस्थान पुलिस के जांबाज हेड कांस्टेबल शहीद महेंद्र सिंह की स्मृति में पुलिस सहित स्मारक पार्क में उनकी स्मृति में पौधारोपण किया गया और पुलिस लाइन परिसर में बेजुबान पक्षियों के लिए 11 परिंडे बांधे गए । अन्नपूर्णा रसोई में जरूरतमंदों को भोजन कराया गया तथा शरबत का वितरण किया गया। इस अवसर पर जगदीश प्रसाद दिवाकर ने कहा कि पौधारोपण एक अच्छा जरिया है अपनों को अपने बीच बनाए रखने का, आज हमारे द्वारा पौधारोपण किया गया है और वृक्ष बनने तक इस पौधे की हम पेड़ बनने तक अच्छी प्रकार से देखभाल करेंगे। इस अवसर पर पुलिस लाइन के जवानों ने परिंडे बांधे।

विष्णोदा गांव के समीप ट्रक ने बाइक को मारी टक्कर, हादसे में तीन बाइक सवार युवकों को हुई मौत

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। जिले के बाड़ी मार्ग पर ट्रक की चपेट में आने से बाइक सवार तीन युवकों की मौत हो गई। हादसा गुरुवार दोपहर 1 बजे सदर थाना इलाके में धौलपुर-करौली हा-11 बी पर विष्णोदा गांव के पास हुआ। युवक धौलपुर में एक शादी समारोह में ढोल ताशे बजाकर बसेड़ी की ओर लौट रहे थे। मृतकों में दो चचेरे भाई शामिल हैं, जबकि तीसरे युवक की अभी तक पहचान नहीं हुई है। पचगांव चौकी के हेड कॉन्स्टेबल अरुण शर्मा ने बताया कि मृतक युवक रवि (25) पुत्र पप्पू निवासी पथरोला थाना सदर के पिता ने बताया कि उनका बेटा रवि (20) और बड़े भाई दर्शन का बेटा रंजीत (25) बाइक पर सवार तीसरे युवक के साथ बाड़ी से धौलपुर एक शादी समारोह में ढोल ताशा से बजाने गए थे। शादी समारोह में शामिल होने के बाद तीनों एक ही बाइक से वापस बाड़ी की ओर रवाना हुए थे। रास्ते में विश्नोदा गांव के पास तेज रफ्तार ट्रक ने बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर से बाइक के परखच्चे उड़ गए। वहीं, तीनों युवक दूर जाकर गिरे। घटना की सूचना मिलते ही कोतवाली और सदर थाना पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस तीनों युवकों को लहूलुहान हालत में लेकर जिला अस्पताल लेकर पहुंची। अस्पताल में डॉक्टर ने दो युवकों को मृत घोषित कर दिया। वहीं, तीसरे युवक ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। पुलिस ने शव मॉर्च्यूरी में रखवाए हैं। घटना के बाद पुलिस तीसरी मृतक की पहचान करने में जुटी है।

प्रांजल स्कूल बस्सी ने फिर लहराया परचम, अच्छे अंकों से प्राप्त विद्यार्थियों का किया स्वागत

जयपुर टाइम्स

बस्सी(निसं.) कस्बा स्थित प्रांजल स्कूल में 10वीं कक्षा का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। विद्यालय के डायरेक्टर विजय शर्मा ने कहा कि पिछले सालों से प्रांजल स्कूल अच्छा परिणाम देता आ रहा है, इस बार भी शत प्रतिशत परिणाम रहा है, अच्छे अंकों से प्राप्त विद्यार्थियों का माला व मुंह मीठा करवाकर स्वागत किया। विद्यालय की प्रिंसिपल सीमा शर्मा ने बताया कि विद्यालय में प्रथम स्थान जितेश पंचोली ने 95 प्रतिशत, कार्तिक मीणा ने 91.17 प्रतिशत, संदीप शर्मा ने 90 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। इस मौके पर विद्यालय डायरेक्टर विजय कुमार शर्मा,प्रिंसिपल सीमा शर्मा,मोहन मीणा, रवि शर्मा व अन्य स्टाफ मौजूद रहा।

10 वीं के रिजल्ट में नंबर कम आए तो ट्रेन के आगे कूद गया छात्र, मौके पर हुई मौत

कोटा (निसं.)। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की 10वीं परीक्षा का परिणाम कल आया था. इसके अगले ही दिन कोटा के उद्योग नगर थाना क्षेत्र स्थित संजय नगर रेलवे क्रॉसिंग पर एक छात्र ने ट्रेन के आगे कूदकर आत्महत्या कर ली. मृतक छात्र का नाम दुष्यंत साहू था, जो विज्ञान नगर क्षेत्र का निवासी था. बताया जा रहा है कि बोर्ड परीक्षा में कम अंक आने के कारण वह मानसिक रूप से परेशान था और घर से लापता हो गया था. उद्योग नगर थाने के एएसआई हरवीर सिंह ने बताया कि दुष्यंत ने कल रिजल्ट आने के बाद घर से यह कहकर निकला कि वह अपनी पार्ट टाइम नौकरी पर जा रहा है. वह पास की एक फास्ट फूड दुकान पर काम करता था, लेकिन जब वह समय पर दुकान नहीं पहुंचा तो दुकान मालिक ने उसके घर फोन किया.।

जेजेएम के कार्यों को पूरी पारदर्शिता और गुणवत्ता से करें: मंत्री जोराराम

केबिनेट मंत्री ने समीक्षा बैठक में अधिकारियों को दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

पाली/सुमेरपुर(निसं.)।। पशुपालन, डेयरी एवं देवस्थान विभाग के केबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत ने पाली दौरे के दौरान जिले में संचालित पेयजल परियोजनाओं की गहन समीक्षा करते हुए अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि सभी कार्य निर्धारित समय सीमा के भीतर पूर्ण हों और गुणवत्ता से कोई समझौता न किया जाए। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार का प्राथमिक लक्ष्य है हर नागरिक को स्वच्छ, सुरक्षित और निर्बाध पेयजल उपलब्ध कराना। मंत्री कुमावत ने दोहराया कि पेयजल की उपलब्धता सीमित है, और इसका उपयोग केवल घरेलू कार्यों तक ही सीमित रहना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति पेयजल का उपयोग कृषि या व्यवसायिक उद्देश्यों में करता पाया जाता है,तो उसके खिलाफ कार्रवाई करें। मंत्री ने जल जीवन मिशन के अंतर्गत प्रगतिरत कार्यों की समीक्षा करते हुए कहा कि जल जीवन मिशन के कार्यों को पूरी पारदर्शिता और गुणवत्ता के साथ तेज़ी से पूर्ण किया जाए, ताकि हर घर को 'नल से जल' का संकल्प वास्तविकता में बदल सके। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि पाइपलाइन बिछाने के बाद प्रेशर टेस्टिंग अनिवार्य रूप से कराएं, और उसके बाद ही मिट्टी भराव करें। साथ ही, खुदाई के बाद निकला मलबा समय पर हटाया जाए और सड़कें पूर्ववत स्थिति में लौटें इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए। जोराराम कुमावत ने खासतौर पर पाली पंचायत समिति क्षेत्र में पेयजल समस्या को लेकर समीक्षा बैठक ली। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देशानुसार आगामी 5 जून से 20 जून तक चलाये जाने वाले मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान के दौरान विभागीय जल स्रोतों एवं जलाशयों की नियमानुसार सफाई प्राथमिकता से सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि जिन योजनाओं के संचालन एवं संधारण की अवधि समाप्त होने वाली है उनकी स्वीकृति हेतु तत्काल प्रभाव से प्रस्ताव तैयार किए जाए। मंत्री कुमावत ने कहा कि ग्रीष्म ऋतु में जहां कहीं पेयजल परिवहन की आवश्यकता हो नियमानुसार पेयजल परिवहन कार्य कराकर आमजन को सुचारू पेयजल आपूर्ति बनाये रखे। समीक्षा बैठक में पीएचईडी के एसई मनीष माथुर, एक्सईएन कान सिंह राणावत, पाली प्रधान प्रतिनिधि पुखराज पटेल उपस्थित रहे।

महाराणा प्रताप जयंती पर श्रद्धा, संकल्प ओर राष्ट्रभक्ति का भावपूर्ण आयोजन

जयपुर टाइम्स

फुलेरा(निसं.)। वीरता, स्वाभिमान और मातृभूमि के प्रति अटूट प्रेम के प्रतीक महाराणा प्रताप की जयंती पूर्व विधायक निर्मल कुमावत के आवास पर श्रद्धा और सम्मान के साथ मनाई गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष प्रणव अग्रवाल ने की, जिनकी अगुवाई में आयोजन ने एक प्रेरणादायी स्वरूप लिया।मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व विधायक निर्मल कुमावत ने महाराणा प्रताप के बलिदान और उनके आदर्शों को स्मरण करते हुए कहा कि आज के युग में भी महाराणा प्रताप जैसे वीरों के जीवन से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। विशिष्ट अतिथि भाजपा देहात महामंत्री अजय पाल सिंह ने भी उनके त्याग और देशभक्ति को नमन करते हुए कहा कि ऐसे महापुरुषों की जयंती केवल उत्सव नहीं, बल्कि आत्मचिंतन और राष्ट्रसेवा का आह्वान होती है। इस भावपूर्ण अवसर पर पार्षद श्रवण वर्मा,पार्षद प्रतिनिधि राजकुमार सैनी,हरीश बडीवाल, राजकुमार वर्मा सहित कई भाजपा पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे, जिन्होंने महाराणा प्रताप के आदर्शों को आत्मसात करने का संकल्प लिया ।

दसवीं बोर्ड परीक्षा परिणाम में भी आरएनटी स्कूल के होनहार विद्यार्थियों ने मनवाया अपना लोहा

जयपुर टाइम्स

कुचामन सिटी(निसं.) माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर द्वारा बुधवार को घोषित किए गए कक्षा दस के परिणाम में शहर के सीकर रोड स्थित रवीन्द्रनाथ टैगोर सीनियर सेकेंडरी स्कूल ने परचम लहराया हैं। विद्यालय की छात्रा रीना कुमावत ने 96.67 प्रिया 96.50 कृष्ण ने विद्यालय के छात्रावास में रहकर 95.83 ललित ने 95.50 अभिषेक योगी ने छात्रावास में अध्ययन कर 95.33 राधेश्याम 94.83 सुनील रेवाड़ 94.67 अमृता 94.33 कृतिका 93.83 पायल 93.33 रिंकू पोषक 93.33 उत्तम गेना अंकिता 93.17 कशिश शर्मा 93.17 प्रियम 93.17 विकास कुमार 92.83 अंजलि राईका 92.33 सुहाना बानो 92 चिरंजी लाल 91.50 अब्दुल करीम 91.33 सुमित कुमार 91.33 अभिनव सर्वा 90.83 रोहित बोचलिया 90.50 रीना 90.33 अभिषेक रावत 90.17 ललिता कुमावत 90.17 नीरू भाकर 90.17 हार्दिक राजोरा ने 90 प्रतिशत अंक प्राप्त कर परिवार संग विद्यालय को गौरवान्वित किया हैं। परिणाम की घोषणा होते ही विद्यालय परिसर में खुशी की लहर दौड़ गई। इस बेहतरीन परिणाम के लिए संस्था निदेशक जगदीश राम कड़वा सह निदेशक राजेंद्र कड़वा और प्रधानाचार्य मनोज कुमार पारीक ने इस उल्लेखनीय परिणाम के लिए सभी विद्यार्थियों, अभिभावकों और कर्मठ, निष्ठावान टीम को बधाई देते हुए बताया कि विद्यालय विद्यार्थियों के शैक्षिक, सह शैक्षिक विकास में हमेशा ही अग्रणी रहा है और भविष्य में भी इस पवित्र कार्य में अपनी भूमिका निभाता रहेगा। आरएनटी स्कूल शहर का सीकर रोड पर स्थित आवासीय सुविधा से युक्त विद्यालय है जो पिछले दो दशक से शिक्षा के क्षेत्र में पूर्ण निष्ठा के साथ कार्य कर रहा हैं।

पीएचईडी की मनमानी से 250 परिवार पेयजल संकट की चपेट में, आर.आर. होम्स कॉलोनीवासियों ने उठाई उच्च स्तरीय जांच की मांग

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) किशोरपुरा स्थित जेडीए अनुमोदित आर.आर. होम्स कॉलोनी के करीब 250 परिवार इन दिनों जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग (पीएचईडी), परियोजना खंड द्वितीय उत्तर जयपुर की नीतिगत अस्थिरता और अनदेखी के चलते पेयजल जैसी मूलभूत सुविधा से वंचित होने की आशंका में जी रहे हैं। कॉलोनीवासियों का आरोप है कि विभाग लगातार अपने पुराने वादों, लिखित अनुमतियों और साझा की गई योजनाओं से पलट रहा है, जिससे आम नागरिकों में रोष व्याप्त है। कॉलोनी के लोगों के अनुसार, पीएचईडी ने पिछले वर्ष घर-घर बीसलपुर पाइपलाइन बिछाने हेतु सड़क खोदने की अनुमति मांगी थी, जिसे कॉलोनीवासियों ने तुरंत दे दिया था। विभाग की ओर से ठेकेदारों ने कॉलोनी में पाइपलाइन बिछाने की विस्तृत ड्राइंग तक व्हाट्सएप के माध्यम से साझा की थी, जिससे सभी को यह विश्वास था कि अन्य जेडीए अनुमोदित कॉलोनियों की तरह आर.आर. होम्स को भी बीसलपुर जल सुविधा जल्द मिलने वाली है। हालांकि अब विभाग ने यू-टर्न लेते हुए पहले कॉलोनी को 'गेटेड' बताकर बल्क कनेक्शन देने की बात कही, जिसे कॉलोनीवासियों ने जनहित में स्वीकार कर लिया। लेकिन हाल ही में विभाग ने नया पैंतरा अपनाते हुए कनेक्शन कॉलोनी की पानी की टंकी से आधा किलोमीटर दूर देने की बात कही है, यह तर्क देते हुए कि टंकी तक का रास्ता कॉलोनी का हिस्सा है, जबकि दस्तावेजों में स्पष्ट है कि वह सार्वजनिक मार्ग है। इस मुद्दे पर कॉलोनीवासी पिछले एक माह से अधिशासी अभियंता व अन्य अधिकारियों के चक्कर काट रहे हैं, लेकिन अब तक न तो कोई दौरा हुआ है और न ही कोई ठोस निर्णय। यहां तक कि अतिरिक्त मुख्य अभियंता भी यह कहकर पल्ला झाड़ रहे हैं कि मामला उच्च अधिकारियों के पास विचाराधीन है। कॉलोनीवासियों का कहना है कि जब अन्य कॉलोनियों में बिना किसी अड़चन के पाइपलाइन बिछाई जा रही है, तो सिर्फ आर.आर. होम्स कॉलोनी के साथ भेदभाव क्यों? यह विरोधाभासी रवैया और विभाग की कार्यशैली संदेह को जन्म देती है। सरकारी पोर्टलों पर शिकायत करने पर विभाग यह कहता है कि कॉलोनी परियोजना में सम्मिलित है और अगस्त तक काम पूरा होगा, लेकिन अब तक की ढिलाई से यह महज एक और बहाना प्रतीत हो रहा है। निवासियों ने सरकार से इस पूरे मामले की निष्पक्ष उच्चस्तरीय जांच की मांग की है। उनका कहना है कि अगर जल्द न्याय नहीं मिला तो वे आंदोलन और प्रदर्शन करने को बाध्य होंगे।

स्नेहलता साबू व सीमा कासट का किया परवाल दंपति ने अभिनंदन

जयपुर टाइम्स

नरैना(निसं)। माहेश्वरी समाज जयपुर के चुनावीं सत्र वर्ष 2025-28 के तहत टीम रघुकुल से महिला मंडल अध्यक्ष पद प्रत्याशी स्नेहलता साबू की टीम से गत कई वर्षों से समाज में सक्रिय सेवाभावी सीमा कासट (माहेश्वरी) जोन 2 शास्त्री नगर क्षेत्र से चुनावी मैदान में हैं। समाज के लोगों का समर्थन प्राप्त करने के लिए प्रत्याशी लगातार जनसंपर्क कर रहे हैं। वहीं समाज के लोग भी अपने घर आने वाले प्रत्याशियों का अपनी सामर्थ्य अनुसार स्वागत-सत्कार कर रहे हैं। स्वागत-सत्कार की इसी कड़ी में टीम रघुकुल से महिला मंडल अध्यक्ष प्रत्याशी स्नेहलता साबू, सीमा कासट सहित अन्य प्रत्याशियों का शिवभक्त रामचरण-चन्द्रकांता परवाल के निवास पर आने पर सुगंधित पुष्पों की माला पहनाकर आत्मीय भाव से स्वागत किया गया। इस दौरान अनिता काबरा, पिंकू सोमानी, इंदू कालानी, दिव्या माहेश्वरी, ममता माहेश्वरी, वर्षा साबू, जितेश,संपत, दिनेश, पुरूषोत्तम खटोड़ सहित समाज के अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे।

केबल चोरी के बाद खुली पड़ी ट्यूबेल

जयपुर टाइम्स

सांगानेर(निसं.)। ग्राम मोहब्बतपुरा पंचायत के बावड़ी कौशल्या दास की बावड़ी में खेतों पर लगी पांच ट्यूबवेलों में डाल रखी मोटर से मंगलवार रात चोर बिजली की केबल काट कर चोरी कर ले गए। बुधवार सुबह खेतों पर रिजके की सिंचाई करने गए किसानों को सामान बिखरा पड़ा देखने पर चोरी का पता लगा। ट्यूबवेलों से केबल चोरी का पता चलने पर किसानों में रोष व्याप्त हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने चोरों को जल्द पकड़ने का आश्वासन देकर मामले को शांत करवाया। स्थानीय निवासी जितेन्द्र शर्मा ने बताया कि कौशल्या दास की बावड़ी में खेतों पर फसलों की सिंचाई के लिए ट्यूबवेल लगा रखी है। है। ऐसे में सुबह से किसान खेतों पर रिजके की सिंचाई करने गए थे। लेकिन वहां गए तो मोटर के केबल कटी पड़ी थी। बाद में इसकी शिकायत थाने में की। उसके बाद रेनवाल मांजी थाना पुलिस मौके पर पहुंची और जायजा लिया। पीड़ित किसानों ने बताया कि एक मोटर की केबल करीब 5 से 7 हजार रुपए की थी। इस चोरी से करीब 30 हजार रुपए का नुकसान हो गया है।

खटीक समाज का सामूहिक विवाह समारोह आयोजित

जयपुर टाइम्स

सुमेरपुर(निसं.)। शिव शक्ति सेवा समिति, आसींद की ओर से खटीक समाज के लिए द्वितीय सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें बतौर मुख्य अतिथि के रूप में पशुपालन, डेयरी एवं देवस्थान विभाग के केबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत मौजूद रहे। उन्होंने विवाह सम्मेलन में वर-वधुओं को आशीर्वाद दिया और समारोह में सम्मिलित नवयुगलों के परिजनों का आभार व्यक्त करते हुए उन्हें बधाई दी। इस दौरान कुमावत ने नव-विवाहित जोड़ों को संस्था की ओर से प्रमाण-पत्र वितरित किए। इस समारोह में विवाह के पावन बंधन में बंधे सभी नव दम्पतियों को आशीर्वाद देते हुए जोराराम कुमावत ने उनके सुखमय और मंगलमय जीवन की कामना की। इस अवसर पर उन्होंने मंच से नवयुगलों को उपहार-शगुन किट भेंट किया। उपहार देने के दौरान मंत्री ने जोड़ों से आत्मीय संवाद भी किया। मंच पर जोड़ों को आशीर्वाद देने के अलावा मंत्री ने नवयुगलों पर पुष्प वर्षा कर उनको और उनके अभिभावकों को शुभकामनाएं दीं। समारोह में आसींद के विधायक जब्बर सिंह सांखला, पूर्व एमएलए रामलाल गुर्जर, भीलवाड़ा के भाजपा जिलाध्यक्ष प्रशांत मेवाड़ा, खटीक समाज के अध्यक्ष छगनलाल, मंडल अध्यक्ष फोजमल गुर्जर व अनिल तंवर आदि उपस्थित रहे।
इससे पहले मंत्री जोराराम कुमावत का परासोली व आसींद में भाजपा कार्यकर्ताओं द्धारा भव्य स्वागत किया गया। स्वागतकर्ताओं में विधायक जब्बर सिंह सांखला, पूर्व एमएलए नानूराम कुमावत, मंडल अध्यक्ष फोजमल गुर्जर, अनिल तंवर, मदनलाल कुमावत व तुलसीराम कुमावत शामिल थे।

सुमेरपुर मंत्री जी के गृह क्षेत्र में विद्युत विभाग का बोलबाला

विभाग की अनदेखी रखरखाव के अभाव में बिजली कटौती से आमजन परेशान

जयपुर टाइम्स

सुमेरपुर(निसं.)। बिजली विभाग की बात करें तो मंत्री जी के गृह क्षेत्र में ही लापरवाही सामने आ रही है । विद्युत विभाग की ओर से हर रोज की जा रही बिजली कटौती से आमजन परेशान है तो वही विभाग के अधिकारी अपनी मस्ती में मस्त हैं। गौरतलब है कि बिजली विभाग द्वारा पिछले कई महीने से रखरखाव एवं पेड़ कटिंग के नाम पर बिजली कटौती की जा रही है,लेकिन अभी तक इनका काम पूरा नहीं हुआ। शहर से लेकर गांवो की जनता विभाग से तंग आ चुकी है,कभी कोई फॉल्ट तो कभी 33केवी का बहाना है। पेड़ कटिंग की बात करे तो गांवों की स्थिति तो गंभीर है ही,बल्कि शहर की स्थिति और खराब है। आज भी मुख्य सड़क पर बड़े पेड़ों की स्पेट विद्युत लाईन है,जबकि जवाई बांध रोड एक मुख्य सड़क है, इस रस्ते से कई बड़े अभिकारियों की आवाजाही होती है, फिर भी उनकी नजर से मामला दूर है। दरअसल हल्की बारिश,या हवा चलने पर बिजली काट देते हे,आखिर ऐसा क्यों?? । आपको बता दे कि पहले जब हवा चलती या फिर बारिश होती तो इतनी बिजली कटौती नहीं होती थी,लेकिन अब तो बार बार बिजली काट दी जाती है।इससे साफ प्रतीत होता है कि

OFFICE OF GRAM PANCHAYAT GHASIPURA P.S. PATAN (SIKAR)

S.NO. 09 DATE : 29-05-2025

Notice Inviting Bid

Bid for Rate contract of Material Procurement in varies construction works undar MGNAREGA Scheme For FY 2025-26 are invited from intersted bidders till Date 05.06.2025, 01:00 PM. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal http://sppp.raj.nic.in. of the state. The approximate value of the procurement is RS : 9.99 Lac

UBN No. PKP2526GSRC00070

PRASHASHAK
G.P. GHASIPURA

VDO
G.P. GHASIPURA

महाराणा प्रताप व चौधरी चरणसिंह को किया याद

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। सिरियासर में शुक्रवार को महायोद्धा सिरोमणि महाराणा प्रतापसिंह की जयंती व किसानों के मसीहा रहें पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की पुण्यतिथि श्रद्धापूर्वक मनाई गई। कांग्रेस मण्डल अध्यक्ष शमसाद खान ने भारत माता के जयकारों के साथ स्वाभिमान के प्रतीक महायोद्धा महावीर महाराणा प्रताप सिंह व पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के जीवन काल व इनकी ओर से किए राष्ट्र हित कार्यों पर बोलते हुए उपस्थित लोगों से कहा कि सदैव महापुरुषों को याद करना चाहिए व इनकी ओर से राष्ट्र के योगदान से प्रेरणा लेनी चाहिए। इस दौरान बंशीधर गर्वा, सुभाष चन्द्र, सुनील फोजी, बजरंग चौधरी, फरमान अली, उमेद अली, अमित जांगिड़, कमलेश कुमार, महेन्द्र, दर्शन, मास्टर राजेंद्र, हरिसिंह, राजेश , रोहिताश, विनोद कुमार, विक्रम, सुभाष, आमान खान, यादील खान, प्रेम, ट्रेक्टर ड्राइवर खुरशीद ,मुकेश सहित सैंकड़ों की संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

अभिषेक यादव, सरोज जानू को पीएचडी की उपाधि

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। डॉ. अभिषेक यादव ने चंडीगढ़ के राजकीय मेडिकल कॉलेज से डॉक्टरेट ऑफ मेडिसीन की उपाधि हासिल की है। धर्मराज यादव के पुत्र डॉ. अभिषेक ने 2022 से 2025 तक शोध कार्य कर उपाधि प्राप्त की। डॉ. अभिषेक यादव की इस उपलब्धि पर उप सभापति अमित मारोठिया, श्रीचंद यादव, मनीष भामा, रामदेव यादव, विश्वनाथ तंवर, डॉ.एस.एन.जांगिड़, भोमाराम बिजारणिया, मूलचंद सांखला, छगनलाल सांखला, रामनिवास गुर्जर, अजय सैनिक, गौरीशंकर सिंगोदिया, विशाल बाजिया आदि ने उनको बधाई दी है। इसी प्रकार शोधार्थी सरोज जानू को राजस्थान विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग की ओर से पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई है। सरोज जानू ने -गांधी एवं अंबेडकर के चिंतन में स्त्री सशक्तीकरण एक अध्ययन.. विषयक अपना शोध कार्य प्रोफेसर निधिलेखा शर्मा के निर्देशन में पूर्ण किया। सुजानगढ़ के जोधाराम जानू की पुत्री सरोज जानू को अपना शोध कार्य करने में लगभग पांच वर्ष का समय लगा। सरोज जानू को विद्या वाचस्पति की उपाधि मिलने पर राष्ट्रीय जाट महासभा के प्रदेशाध्यक्ष धर्मेंद्र कीलक सहित नगर के कई शिक्षाविदों ने बधाई और शुभकामनाएं प्रेषित की हैं।

देवकीनन्दन पुजारी की चतुर्थ पुण्यतिथि पर दी श्रद्धांजलि

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। स्थानीय भोजलाई चौराहा स्थित राष्ट्रीय जाट महासभा के कार्यालय में देवकीनन्दन पुजारी की चतुर्थ पुण्यतिथि पर स्मरणांजलि सभा आयोजित कर उनके कृतित्व और व्यक्तित्व को याद किया गया। रामदेव ढाका स्मृति प्रन्यास और राष्ट्रीय जाट महासभा के संयुक्त तत्वावधान में तनसुख रामपुरिया की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में मांगीलाल भाटी, एडवोकेट हेमन्त कुमार शर्मा, ओम प्रकाश तूनवाल, मनीष पुजारी, भरत कुमार तूनवाल, सवाई सिंह, भींवाराम कीलका, हनुमानाराम कीलका, प्रकाश सैन, हरि भामूं, गिरधारी जाटमाली आदि लोग मौजूद रहे। विद्याधर पारीक ने आयोजकीय पृष्ठभूमि को रेखांकित किया। राष्ट्रीय जाट महासभा के प्रदेशाध्यक्ष धर्मेंद्र कीलक ने देवकीनन्दन पुजारी के सामाजिक और राजनैतिक जीवन पर प्रकाश डाला। हनुमान सेवा समिति के पूर्व अध्यक्ष यशोदानंदन पुजारी ने अपने अग्रज की पुण्यतिथि पर उनको याद करने के लिए आभार व्यक्त किया। संचालन मरूदेश संस्थान के अध्यक्ष डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा ने किया।

डूंगरपुर में छात्रा ने की आत्महत्या, परिवार बोला- होनहार थी उनकी बेटी

कोटा (निसं.)।

राजस्थान के कोटा में 10 वीं क्लास के परिणाम घोषित होने के बाद कम नंबर आने से परेशान एक छात्र ने ट्रेन के आगे कूद कर आत्महत्या कर ली. इसके बाद अब डूंगरपुर जिले के गोकुलपुरा गांव में 16 वर्षीय एक छात्रा ने आत्महत्या कर ली है. मृतका सुहानी 10वीं कक्षा की छात्रा थी और 28 मई को आए परीक्षा परिणाम में वह फर्स्ट डिविजन से पास हुई थी.। घटना कोतवाली थाना क्षेत्र की है, जहां छात्रा ने अपने ही घर की पड़साल में फांसी लगाकर जान दे दी. आत्महत्या के पीछे का कारण अभी स्पष्ट नहीं है. पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है. कोतवाली थाने के एएसआई हरि सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि गोकुलपुरा निवासी प्रेम शंकर कटारा की बेटी सुहानी ने फांसी लगा ली. परिजनों की रिपोर्ट के अनुसार, सुबह प्रेम शंकर, उनकी पत्नी, मां और बेटी रवीना खेतों में गए हुए थे, जबकि सुहानी घर पर अकेली थी.। जब रवीना बकरियां लेकर घर लौटी तो उसने देखा कि सुहानी दुपट्टे से फांसी के फंदे पर झूल रही है.। रवीना की चीख सुनकर बाकी परिजन भी मौके पर पहुंचे और सुहानी को नीचे उतारकर तुरंत डूंगरपुर जिला अस्पताल ले गए।

झुंझुनूं में रिटायर्ड फौजी के घर से राइफल-ज्वेलरी चोरी

लाइसेंसी 12 बोर की बंदूक समेत गहने भी ले गए; एफएसएल टीम ने सबूत जुटाए

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। कोतवाली थाना क्षेत्र के शास्त्री नगर इलाके में चोरी की बड़ी वारदात सामने आई है। रीको क्षेत्र में स्थित एक रिटायर्ड फौजी नरेंद्र सिंह के मकान में चोरों ने नगदी और जेवरात समेत लाखों रुपए का सामान पार कर लिया। चोरी की यह घटना उस समय हुई जब पीड़ित अपने पूरे परिवार के साथ गांव ढेवा का बास गया हुआ था। जानकारी के अनुसार पीड़ित नरेंद्र सिंह पुत्र

लादूराम जाट, निवासी ढेवा का बास, थाना सदर, हाल निवासी मकान नंबर 13-10, शास्त्री नगर (वार्ड संख्या 16), झुंझुनूं, ने कोतवाली थाना में दर्ज करवाई रिपोर्ट में बताया कि वह 28 मई की रात अपने परिवार सहित गांव गया हुआ था। जब वह सुबह गांव से वापस अपने झुंझुनूं स्थित मकान पर लौटा तो देखा कि मकान के मुख्य द्वार पर ताला टूटा हुआ था। अंदर जाकर देखा तो पूरा घर अस्त-व्यस्त था और अलमारियां टूटी हुई थीं।

राइफल भी ले गए चोर

पीड़ित नरेंद्र सिंह ने बताया कि चोरों ने उनके घर से एक लाइसेंसी 12 बोर की राइफल, उसके 15 राउंड, तीन जोड़ी चांदी की पायजेब, एक सोने का मंगलसूत्र, एक सोने की चैन, एक सोने की अंगूठी, दो चांदी की मछली की जोड़ी, बच्चों की गुल्लक तथा 87,600 की नकदी चोरी कर ली। चोरी की वारदात को बेहद सुनियोजित तरीके से अंजाम दिया गया है, जिससे आशंका जताई जा रही है कि चोरों ने पहले से घर पर नजर रखी हुई थी।

डॉग स्क्वॉड ने की जांच

थानाधिकारी हरजिंदर सिंह ने बताया कि शिकायत मिलने के बाद मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। पुलिस की टीम ने मौके पर पहुंचकर घटनास्थल का निरीक्षण किया और फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट और डॉग स्क्वॉड को भी मौके पर बुलाया गया है।

राजस्थान पब्लिक स्कूल का शत प्रतिशत परिणाम, टॉपर्स का किया सम्मान

जयपुर टाइम्स

झुन्झुनूं(निस)। स्थानीय गणपति नगर स्थित राजस्थान पब्लिक उच्च माध्यमिक विद्यालय के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर की ओर से घोषित माध्यमिक परीक्षा परिणाम में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का सम्मान हुआ। स्कूल टॉपर मोहम्मद रिजवान ने 93.67 प्रतिशत व देशराज गुर्जर, रोहित मीणा, आरव जारवाल, देवेन्द्र मीणा, मित्ताली, गरिमा, लक्की, अक्षिता मीणा, नेहा सैनी, सबिस्ता को 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने पर विद्यालय प्रागंण में साफा पहनाकर, तिलकार्चन व माल्यार्पण कर अभिभावक के साथ मिठाई खिलाकर भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर भाजपा जिला उपाध्यक्ष प्यारेलाल ढूकिया, संस्था संरक्षिका विनोद ढूकिया ने मेधावी विद्यार्थियों को बधाई दी व भविष्य में भी ऐसे ही उत्कृष्ठ परिणाम देकर अपना, अपने परिवार व देश का नाम रोशन करने के लिए प्रेरित किया। संस्था सचिव इंजी. पीयूष ढूकिया ने बताया कि संस्था का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा है। सभी विद्यार्थी प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। मोहम्मद रिजवान ने अपनी सफलता का श्रेय विद्यालय परिवार, गुरूजन, माता-पिता को देते हुए कहा कि मेरी उपलब्धि गुरूजनों का आशीर्वाद है। मोहम्मद रिजवान भविष्य में प्रशासनिक सेवा में जाकर देश की सेवा करना चाहता है। सहायक अभियन्ता ज्योति ढूकिया व प्रधानाचार्य शुभकरण खीचड़ ने विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। विद्यालय प्रांगण में एक-दूसरे के गुलाल - अबीर लगाकर एवं मिठाई खिलाकर खुशियां मनाई। सम्मान समारोह कार्यक्रम में मोहम्मद आरिफ, रूकसाना, मदिना, आसिफ, अनिता, राजेश कुमार, मीरा सैनी, रितिक, मोहम्मद इदरिश, सहित अभिभावकगण मौजूद रहे। प्राचार्या निधि सिहाग, राकेश झाझड़िया, सुधीर शर्मा, योगेन्द्र बसेरा, पवन कुमार, प्रवेश भाम्बू, सुभाष सैन, दिनेश कुमार, सुनील मील, हीरा सिंह सहित समस्त स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

बाल भारती में होनहार विद्यार्थियों का किया सम्मान

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। स्थानीय बाल भारती विद्यापीठ में क्लास 8 वीं व 10 वीं के परिणाम में उत्कृष्ट अंक हालिल करने वाले विद्यार्थियों को साफा व माला पहनाकर स्वागत किया गया। संस्था निदेशक बीएम पचार ने बताया कि कक्षा 10वीं में आरबीएससी का इस बार स्कूल परिणाम शत प्रतिशत रहा है। प्रथम स्थान किरण पुत्री मूलाराम बिरड़ा, प्रतिज्ञा पुत्री बिशनदान चारण ने 96 प्रतिशत अंक प्राप्त करके हासिल किया है। गणित में परफेक्ट स्कोर किरण व आकांक्षा ने 100 अंक प्राप्त कर असाधारण प्रतिभा का परिचय दिया। संस्थान परिसर में गुरूवार को मीनाक्षी, महरुनिसा बानो, दीपिका पारीक, रोहित कुमार, अंबिका बुरडक, रामानुज शर्मा, आयुष गुर्जर, अनुश्री जांगिड़, रोहित शर्मा, हिमांशु, मोहम्मद अरमान राईन, अलवीरा, वर्षा रेगर, पुष्पेंद्र भास्कर, प्रियंका गोदारा, कांता भाकर, कानसिंह, लक्ष्मी शर्मा, महिमा चौधरी, कुसुम सैनी, प्रियांशी जाखड़, भावना चौधरी, कनिष्क प्रजापत, मोहम्मद साहिर, करण आचार्य, सोनू कुमारी, रवि प्रसाद, अरमान खान, सीता कुमारी, यशवंत सिंह राठौड़, इरशाद खान, सपना सुथार, हनुमान गोदारा, सीता, रोहित चौहान, गरिमा कासवान, विनीत, शैलेन्द्र जिलोया, आर्जव जैन, हेमचंद, विनीत जांगिड़ आदि का सम्मान किया। संस्था अध्यक्ष भागीरथ मल पचार, बंशीधर यादव, शांतिलाल शर्मा, राकेश गोदारा, भींवाराम बेनीवाल, शंकरलाल मेहरड़ा, उमा जोशी, मुकेश राव, नरेंद्र कस्वां, जयंत जांगिड़, जयेश जांगिड़, रेणु राठौड़, अजय गोठड़िया, सोनिया चांगल, कुशल सोलंकी, संजू बेनीवाल, आरती बिजारणियां, पूनम प्रजापत, भावना प्रजापत, दिव्या भाटी, सोनू चारण, नूपुर, कोमल, प्रियंका जांगिड़, विशाखा बाड़ीवाल, हेमलता सोनी, नवरत्न गोदारा, करण लुहार आदि शिक्षक स्वागत कार्यक्रम में मौजूद रहे।

तिरंगा भारत के पराक्रम का प्रतीकः ढूकिया

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। भाजपा जिला उपाध्यक्ष प्यारेलाल ढूकिया ने कहा कि तिरंगा भारत के शौर्य और पराक्रम का प्रतीक है। आज हर चेहरे पर गर्व है, हर कदम पर देशभक्ति, और हर आवाज में भारत के लिए सम्मान। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे एकजुट होकर 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत, सशक्त भारत' के निर्माण में भाग लें और सेना का मनोबल ऊंचा रखें। ढूकिया ने शुक्रवार को जिले में तिरंगा यात्राओं के सफल आयोजन को लेकर जारी वक्तव्य में कहा कि यह नया भारत है, जो दुश्मनों को उनके घर में घुसकर जवाब देता है। इस दौरान उन्होंने विपक्ष पर हमला कर कहा कि जो लोग सेना पर सवाल उठाते हैं, वे देश की अस्मिता पर चोट करते हैं। उनका कहना था कि सेना के मनोबल को गिराने की राजनीति अब नहीं चलेगी। उन्होंने कहा कि जो देश के खिलाफ है, उसकी हमें कोई परवाह नहीं। ढूकिया ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की तारीफ कर कहा कि मोदी सरकार ने सेना को हर स्तर पर मजबूती दी है। ऑपरेशन सिंदूर जैसे साहसिक

सैन्य अभियानों ने भारत की सीमाओं को पहले से अधिक सुरक्षित बनाया है और यह तिरंगा यात्रा उसी सैन्य सफलता को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास है।

महिला शक्ति और गौरव सेनानियों की विशेष भागीदारी

इस यात्रा में महिलाओं की भूमिका भी अत्यंत प्रेरणादायक रही। 'सारथी बनी महिला शक्ति' की भावना के साथ महिलाओं ने तिरंगे को कंधे से लगाया और देशभक्ति के स्वर में स्वर मिलाया। गौरव सेनानियों और सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारियों ने भी पूरे जोश से भाग लेते हुए कहा कि तिरंगा हमारा गर्व है, और जो इसके सम्मान को चुनौती देगा, उसे करारा जवाब मिलेगा। इस तिरंगा यात्राओं में आम जन की उपस्थिति इसका उदाहरण है। पूरे मार्गो पर 'भारत माता की जय', 'वंदे मातरम' और 'जय हिंद' के नारों से आसमान गूंज उठा। राष्ट्रभक्ति और जनसंकल्प की मिसाल बन गया, जब हजारों लोगों ने तिरंगा थामे भव्य यात्राओं में हिस्सा लिया। तिरंगा यात्राओं में जनसैलाब उमड़ पड़ा। एनसीसी कैडेट्स, गौरव सेनानी, महिलाएं, छात्र-छात्राएं, युवा और भाजपा कार्यकर्ताओं की सक्रिय भागीदारी ने इसे ऐतिहासिक बना दिया।

राजलवाड़ा के 200 घरों में पानी की समस्या होगी दूर

आसासर में बनेगा ट्यूबवेल, 3 किमी पाइपलाइन बिछेगी

प्रधान कोटे से खर्च होंगे 20 लाख

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। उपखंड के बैजासर ग्राम पंचायत के राजलवाड़ा गांव में पानी की समस्या का स्थायी समाधान होने जा रहा है। गांव की जमीन में पानी नहीं होने के कारण 200 घरों को पीने के पानी के लिए परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों को प्रतिदिन एक टैंकर पानी के लिए 1500 रुपए खर्च करने पड़ रहे हैं। ग्रामीणों की ओर से मांगीलाल पूनियां के नेतृत्व में भाजपा नेता मधुसुदन राजपुरोहित से मिलकर इस समस्या का समाधान मांगा गया। भाजपा नेता ने प्रधान कोटे से आसासर गांव में एक ट्यूबवेल बनाने और तीन किलोमीटर तक पाइपलाइन बिछाने की स्वीकृति दी है। इस काम पर 20 लाख रुपए खर्च किए जाएंगे। प्रधान प्रतिनिधि मधुसुदनसिंह राजपुरोहित ने आश्वासन दिया है कि 15 से 20 दिनों के अंदर गांव की पानी की समस्या दूर कर दी जाएगी। मांगीलाल पूनियां ने बताया कि गांव में आपणी योजना की पाइपलाइन भी अभी तक नहीं डाली गई है। इस मौके पर महिराम राईका, बीरबल रायका, गोपालाराम गोदारा, रामूराम कड़वासरा, टीकुराम सारण, सुखराम भाकर, मोहनराम गोदारा, आदूराम सहित कई ग्रामीण मौजूद रहे।

रेप के दोषी को मृत्यु पर्यंत कारावास की सजा, 1 लाख 30 हजार का जुर्माना

8 साल की मासूम से की थी दरिंदगी

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। सिधमुख थाना क्षेत्र में 8 वर्षीय बच्ची से रेप के मामले में पॉक्सो कोर्ट ने अपना फैसला सुनाया है। कोर्ट ने आरोपी दोषी को मृत्यु पर्यंत कारावास की सजा सुनाई है। साथ ही 1 लाख 30 हजार रुपए का अर्थदंड भी लगाया है। घटना 2 जुलाई 2023 की है। आरोपी ने घर के सामने खेल रही बच्ची को बहला-फुसलाकर आंगनबाड़ी केंद्र

में ले जाकर रेप किया। आरोपी ने बच्ची को कुंड में फेंक देने की धमकी भी दी। परिजनों को बच्ची लहूलुहान हालत में मिली। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ आईपीसी, पॉक्सो और अनुसूचित जाति एक्ट के तहत मामला दर्ज किया। कोर्ट ने 39 दस्तावेजी साक्ष्यों और गवाहों के बयान के आधार पर फैसला सुनाया। विशिष्ट लोक अभियोजक राकेश सहारण ने बताया कि इस मामले में जमानत मिलने के बाद आरोपी ने 3 साल की एक अन्य बच्ची से भी रेप किया। यह दूसरा मामला अभी पॉक्सो कोर्ट में विचाराधीन है। आरोपी की इसी आपराधिक प्रवृत्ति को देखते हुए कोर्ट ने कोई नरमी नहीं दिखाई।

झुंझुनूं बीडीके अस्पताल में ऑक्सीजन प्लांट्स की मॉकड्रिलः आपात स्थिति से निपटने की पूरी तैयारी

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। जिले के सबसे बड़े राजकीय बीडीके अस्पताल में कोविड संक्रमण की संभावित स्थिति को ध्यान में रखते हुए ऑक्सीजन प्लांट्स की मॉकड्रिल (मॉडल ड्रिल) का आयोजन किया गया। यह मॉकड्रिल अस्पताल प्रशासनकी ओर से आपात स्थिति में संसाधनों की तत्परता और कार्यक्षमता की जांच के उद्देश्य से की गई, जिससे किसी भी अनहोनी के समय में ऑक्सीजन आपूर्ति सुचारु रूप से सुनिश्चित की जा सके। पीएमओ व वरिष्ठ शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. जितेंद्र भांबू ने जानकारी देते हुए बताया कि अस्पताल में उपलब्ध प्रत्येक ऑक्सीजन प्लांट को क्रमबद्ध तरीके से चालू कर उनके कार्य संचालन की जांच की गई। इस प्रक्रिया के तहत ऑक्सीजन प्रेशर, पाइपलाइन की स्थिति, आईसीयू में प्रेशर

स्तर, ऑक्सीजन की शुद्धता, खाली व भरे हुए ऑक्सीजन सिलेंडर्स की स्थिति और वार्ड व आईसीयू में ऑक्सीजन पॉइंट्स की उपलब्धता की गहन समीक्षा की गई। इस मॉकड्रिल के दौरान अस्पताल प्रशासन की ओर से एक विशेष टीम का गठन किया गया, जिसने पूरे अस्पताल परिसर में स्थित सभी ऑक्सीजन संयंत्रों व संबंधित व्यवस्थाओं की तकनीकी जांच की। साथ ही वार्ड नर्सिंग प्रभारी व अन्य चिकित्सीय स्टाफ ने सिलेंडर्स की स्थिति और उनकी समयानुसार पूर्ति की समीक्षा की। डॉ. भांबू ने बताया कि बीडीके अस्पताल में वर्तमान में उपलब्ध ऑक्सीजन सप्लाई की व्यवस्था, अस्पताल के कुल बेड की संख्या से कहीं अधिक है। इसका सीधा अर्थ है कि किसी भी आपातकालीन स्थिति में अस्पताल पूरी तरह से सेवाएं देने में सक्षम है। उन्होंने कहा कि प्रशासन की ओर से समय-समय पर इस प्रकार की मॉकड्रिल कर अस्पताल को आपदा प्रबंधन के लिए तैयार रखा जाता है। कोविड संक्रमण की वर्तमान स्थिति पर चर्चा करते हुए डॉ. भांबू ने बताया कि फिलहाल बीडीके अस्पताल में कोविड का कोई भी रोगी भर्ती नहीं है। उन्होंने बताया कि कम्युनिटी में कोविड वायरस का संक्रमण अब क्रमिक और हल्के स्तर पर हो रहा है, जिससे इसकी घातकता में कमी देखी जा रही है। ऐसे में आमजन को घबराने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन सजग रहना आवश्यक है। अस्पताल की चिकित्सीय क्षमता की जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि बीडीके अस्पताल में वर्तमान में 10 फिजिशियन, 12 शिशु रोग विशेषज्ञ व 10 निश्चेतना विशेषज्ञ सेवाएं दे रहे हैं। अस्पताल के आईसीयू और सभी वार्डों में ऑक्सीजन की पर्याप्त एवं समुचित व्यवस्था की गई है, जिससे गंभीर रोगियों को समय पर राहत दी जा सके। इस मॉकड्रिल के दौरान माइक्रोबायोलॉजिस्ट डॉ. सलीम जाजोदिया, निश्चेतना विशेषज्ञ डॉ. ज्योति, और प्रशासनिक अधिकारी महावीर सिंह भी उपस्थित रहे। सभी ने मिलकर व्यवस्थाओं की समीक्षा की और भविष्य की तैयारियों को लेकर सुझाव साझा किए।

शेखावाटी जयपुर टाइम्स

जयपुर, शुक्रवार
30 मई, 2025

महाराणा प्रताप को स्वतंत्रता के परिप्रेक्ष्य में समझना होगा: प्रो. राय

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। भारत विकास परिषद् शाखा - रतनगढ़ के तत्त्वावधान में भारत गौरव महाराणा प्रताप की जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष शिवभगवान कम्मा ने कहा कि महाराणा प्रताप भारतीय संस्कृति और स्वतंत्रता के जीते जागते प्रतिमान थे। उनके जीवन से हमें निरंतर संघर्षरत रहने की प्रेरणा मिलती है। स्थानीय महेश्वरी भवन में आयोजित महाराणा प्रताप जयंती समारोह का शुभारंभ भारतमाता, महाराणा प्रताप व स्वामी विवेकानंद के चित्र के आगे दीप प्रज्वलन, दीप मंत्र और पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। आदर्श विद्या मंदिर की बहिनों की ओर से राष्ट्रगीत वंदेमातरम् से प्रारंभ हुए कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रांतीय उपाध्यक्ष वासुदेव चाकलान ने की। चाकलान ने अपने उद्बोधन में कहा कि, वर्तमान समय में महाराणा प्रताप के जीवन की प्रासंगिकता अधिक महसूस की जा रही है ऐसे में हमें महाराणा प्रताप के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता विवेकानंद टी.टी. कॉलेज, कातर के प्रोफेसर डॉ. संतोष कुमार राय रहे। प्रो. राय ने इस अवसर पर कहा कि, महाराणा प्रताप को सिर्फ धर्म के चश्मों से नहीं देखा जा सकता अपितु महाराणा प्रताप भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक जाज़्वल्यमान मशाल थे, हमें साहित्य और भावनाओं से परे जाकर इतिहास के शोधार्थी के रूप में महाराणा प्रताप का विशेष मूल्यांकन करना चाहिए। प्रोफेसर रॉय ने कहा कि ऐसी कौन सी बात है जिसके चलते दो हजार वर्ष पूर्व हुए थर्मोपली के युद्ध के साथ हल्दीघाटी और महाराणा प्रताप की तुलना की जाती है, हमें इस बात को समझना चाहिए। कार्यक्रम में स्वागत उद्बोधन शाखा अध्यक्ष सत्यनारायण टेलर ने दिया वहीं चूरू जिला सह समन्वयक वैद्य लक्ष्मीनारायण शर्मा, प्रांतीय प्रकल्प प्रभारी निरंजन कुमार चोटिया, रतनगढ़ शाखा संरक्षक मदनलाल कम्मा, प्रोफेसर कल्याण सिंह चारण, डॉक्टर ओमप्रकाश सांखोलिया, महेंद्र कुमार, दिलीप स्वामी 'मनु' ने भी अपने विचार प्रकट किए। कार्यक्रम में सत्ताइस वर्षों बाद अपनी अधूरी रही शिक्षा को पुनः प्रारंभ कर 12वीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले भवानीसिंह राजपुरोहित का विशेष सम्मान किया गया, वहीं दिव्यांगों के लिए कार्य करने वाली सक्षम संस्थान के सुगनसिंह का भी उत्कृष्ट कार्य के लिए अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम में चूरू शाखा अध्यक्ष उमेश चौहान, मोहनलाल शर्मा उपस्थित हुए साथ ही बजरंगलाल शर्मा, अन्न्म भारद्वाज, सरिता कौशिक, अर्चना, विकास कौशिक, कैलाश आत्रेय, वासुदेव पारवानी, विनोद कुमार वर्मा, कमलेशदत्त शर्मा, भंवरलाल टेलर, दिनेश शर्मा, हिमांशु मालपुरिया, राकेश नायक, परमेश्वर लाल आत्रेय, पवन माटोलिया, एडवोकेट जयकांत बिंवाल, राजेंद्र भारद्वाज, अमरचंद दायमा, तेजपाल गुर्जर, शुकदेव सांखोलिया, अशोक वर्मा, मनोज सारस्वत, पंकज पीपलवा, त्रिविक्रम अपूर्वा सहित अन्य नागरिक उपस्थित हुए। कार्यक्रम का संचालन युवा कवि मनोज चारण ने किया।

महाराणा प्रताप की 485 वीं जयंती मनाई

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। तारानगर के राजपूत हॉस्टल में राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना के तहसील अध्यक्ष शैलेन्द्र सिह राठौड़ की अध्यक्षता में गुरुवार को हर साल की भांति महाराणा प्रताप की 485 वीं जयंती मनाई गई। राठौड़ ने बताया कि हर साल ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया को महाराणा प्रताप की जयंती मनाई जाती है। शैलेन्द्र सिह राठौड़ ने महाराणा प्रताप के मार्ग पर चलने का संदेश दिया ताकि समाज आगे बढ़े। नरेन्द्र सिह तंवर ने महाराणा प्रताप की जीवनी पर प्रकाश ड़ालते हुए सभी को उनके पथ पर चलने को कहा। इस मौके पर सोनू चौहान, आदित्य, बिशन सिँह, भानू सिँह, सतवीर, रजतसिंह, सवाईसिँह, संदीप, रूद्र प्रताप, विकास, मनीष, युवराज, धरुप सिँह काफी आदि उपस्थित रहे।

नूंवा में चौधरी चरणसिंह की जयंती पर पौधारोपण

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। गांव नूवां में पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरणसिंह की 38 वीं पुण्यतिथि पर चौधरी चरणसिंह विचार मंच के तत्वावधान में गुरुवार को पौधरोपण किया गया। मंच के विकास गोदारा के सहयोग से गांव नूवां में स्थित जीएसएस परिसर में आगामी वर्षा ऋतु में 350 पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। साथ ही किसानों से भी घरों व खेतों में पौधरोपण कर क्षेत्र को हरा-भरा करने का आह्वान किया है। मदनलाल रेवाड़िया की अध्यक्षता में कार्यक्रम के मुख्य वक्ता अजाक के जिलाध्यक्ष अशोक आलड़िया, विशिष्ट अतिथि जगदीशसिंह, हंसराज मुदलिया, अमरसिंह, मोहम्मद युनूस कुरैशी रहे। इस दौरान आलड़िया ने पेड़ों के महत्व व इन्हें लगाने के तरीकों की जानकारी देते हुए कहा कि एक पेड़ 100 पुत्रों के समान है, क्योंकि पेड़ों से ही जीवन चक्र चलता है। इस अवसर पर मुखराम, मनोज मेघवाल, प्रिया सारस्वत, पवन कुमार, मोनिका, सुगनीदेवी प्रजापत, राधा, कमला स्वामी, जोगेंद्रसिंह, अजयसिंह, सांवरमल स्वामी, सांवताराम, भागीरथ जाट, राकेश सहित कई लोग उपस्थित रहे।

बिसाऊ एकेडमी में टॉपर छात्र-छात्राओं का किया सम्मान

जयपुर टाइम्स

बिसाऊ(निस)। बिसाऊ एकेडमी सी.सै.स्कूल बिसाऊ में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर की ओर से कक्षा 10 वी के परीक्षा परिणाम आने पर विद्यालय के टॉपर छात्र/छात्राओं का सम्मान किया गया। इस मौके पर प्रियाशु महला ने 93 प्रतिशत अंक, लक्षिता 92.67, प्रियांशी 91.67, कुलवेन्द्र सिंह शेखावत 90 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। इस मौके पर संस्था निदेशक डॉ प्रताप सिंह ने बताया विद्यालय की कक्षा 10 व 12 के छात्र/छात्राओं ने 100 प्रतिशत बच्चे पास हुए। इस मौके पर सभी बच्चों को मिठाई खिलाकर एवं माला पहनाकर हौसल्ला अफजाई किया गया। इस मौके पर इंजी नवीन सिहाग, प्रधानाचार्य विनोद, स्टाफ सदस्य भंवरी शर्मा, राकेश सैनी, मन्जू,प्यारेलाल, सुनिता व अभिभावक मौजूद रहे।

फोगां की छात्राओं ने दसवीं बोर्ड परिणाम में मारी बाजी, विद्यालय में किया सम्मान

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। तहसील के ग्राम फोगां आसलवास के राजकीय महात्मा गांधी विद्यालय में सत प्रतिशत दसवीं का परिणाम रहने पर वेदिका जोशी ने 95 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय व गांव का रोशन किया है। छात्राओं ने परिणाम में बाजी मारी है। जिसमें विद्यालय के प्रधानाचार्य हरि सिंह और सहायक रामकिशन, पंचायत समिति के सदस्य रामकुमार कुलहारी, कवि मेघराज चोटिया, सरपंच प्रतिनिधि बनवारी लाल पारीक, समाजसेवी सत्यनारायण झाझरिया ने वेदिका के दादाजी किशन लाल जोशी व माता-पिता को बुलाकर विद्यालय में छात्राओं का सम्मान किया गया। मिठाई खिलाकर व माला और साफा पहनकर दादा किशन लाल को बधाई दी। गांव विद्यालय और तहसील का नाम रोशन करने पर बधाईयां दी। विद्यालय में 8 छात्र और 13 छात्राएं हैं। 13 में से 9 लड़कियों ने 75 प्रतिशत से ऊपर अंक प्राप्त किया। प्रथम वेदिका जोशी पुत्री दुर्गा प्रसाद 95 प्रतिशत, द्वितीय रामकन्या 80.83, तृतीय चंद्रकला 80.17 अंक प्राप्त किए। सम्मान समारोह में दाताराम डेलु, भंवरलाल, जितेंद्र सिंह, सुरेंद्र कुमार, सुरेश कुमार, भागीरथ सहित अनेक ग्रामीण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन अध्यापक ओमप्रकाश ने किया।

किशोर दास स्वामी का वाल्मीकि बस्ती में भव्य सम्मान

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। करीब 108 दिन की भारत भूमि नमन यात्रा विभिन्न राज्यों के पावन स्थलों की भूमि से मिट्टी व पवित्र नदियों के जल का संकलन कर सुजानगढ़ धरा पर लाने की सफ़ल यात्रा के उपलक्ष में स्थानीय वाल्मीकि बस्ती में किशोर दास स्वामी का सम्मान कार्यक्रम रखा गया। जिसमें रामकिशन सियोता ने किशोर दास स्वामी का सफा पहनाकर, मंगतू राम तेजस्वी ने माला और बेबी अंजलि ने तिलकाअर्जन कर किशोरदास स्वामी का सम्मान किया। इस अवसर पर मोहम्मद अयूब ठेकेदार, शशिकांत तेजस्वी, सुशील सियोता, मोहनलाल मेघवाल, भगवानाराम खटीक ने किशोर दास स्वामी को संविधान निर्माता बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर की मूर्ति भेंट कर स्वागत सामान किया। किशोर दास स्वामी ने कहा कि गुरुदेव ओम दास महाराज सांगलपती से आशीर्वाद लेकर समरसता के भाव को जन-जन तक पहुंचने सहित क्षेत्रवाद, भाषावाद, वर्गवाद को भूलकर राष्ट्रहित में हमें सदैव समर्पित रहने का आह्वान किया। सभी को जातिवाद का भेदभाव मिटाकर सामान्य व सद्भाव से रहने व मिलजुल कर एक दूसरे का सम्मान सहयोग करने की अपील की। लक्ष्मणराम तेजस्वी ने किशोर दास स्वामी के सुजानगढ़ आमजन के प्रति सहयोग सद्भाव की सराहना की। विक्की परावा, एडवोकेट तिलोक मेघवाल ने भी अपने विचार रखें। इस अवसर पर मिलाप, तरुण सांखला, विशाल टाक, मनमोहन सियोता, प्रशांत सरपटा, अतुल सियोता, युवराज, सुखविंदर सहित बड़ी संख्या में जागरूक लोग उपस्थित रहे।

कर्नल राज्यवर्धन सिंह ने झोटवाड़ा विधानसभा में दो आयुष्मान आरोग्य केंद्र निर्माण को दी स्वीकृति

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। कैबिनेट मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने झोटवाड़ा विधानसभा क्षेत्र के लिए आयुष्मान आरोग्य मंदिर के निर्माण की स्वीकृति प्रदान की है। यह आरोग्य केंद्र झोटवाड़ा के वार्ड नंबर- 63 व ग्राम पंचायत मुंडियारामसर में स्थापित किया जाएगा। इस निर्णय से झोटवाड़ा को न केवल बेहतर मेडिकल केयर बल्कि समय पर और सुलभ हेल्थ सर्विसेज भी प्राप्त होंगी। यह सुविधा आमजन के लिए विशेष रूप से लाभकारी सिद्ध होगी, जिससे उन्हें प्राथमिक चिकित्सा से लेकर स्वास्थ्य परामर्श तक की सभी मूलभूत सेवाएं अपने क्षेत्र में ही मिल सकेंगी। इस अवसर पर कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आरोग्य भारत का जो सपना देखा है, उसे साकार करने की दिशा में झोटवाड़ा में बन रहा यह आरोग्य मंदिर एक महत्वपूर्ण कड़ी साबित होगा। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा जी के नेतृत्व में राजस्थान की डबल इंजन सरकार 'स्वस्थ राजस्थान' के संकल्प को पूरा करने के लिए दृढ़ संकल्पित है। झोटवाड़ा की जनता ने आरोग्य मंदिर की स्वीकृति के लिए कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इससे क्षेत्र को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मिलेंगी। जनता का कहना है कि पिछले डेढ़ वर्षों में कर्नल के निरंतर प्रयासों से विकसित झोटवाड़ा का सपना साकार हो रहा है। उनके नेतृत्व में झोटवाड़ा विकास की नई ऊँचाइयों को छू रहा है।

चौधरी चरणसिंह की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। स्थानीय ग्रामीण किसान छात्रावास स्थित सभागार में संस्थान की आम सभा आयोजित की गई। इससे पहले देश के पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न चौधरी चरण सिंह को पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि दी गई। उपस्थित लोगों ने चौधरी चरण सिंह की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर उनके गौरवशाली इतिहास को याद किया। भगीरथ खीचड़, सोहनलाल चबरवाल,विक्रमपाल थालौड़, शिवलाल ढेवा ,रामचंद्र खीचड़, छात्र कैलाश भींचर और संस्थान अध्यक्ष सुल्तान सिंह भींचर ने चरणसिंह के जीवनवृत और उनके समाज व राष्ट्र को दिए योगदान पर अपने विचार व्यक्त किए। सचिव पवन सेवदा ने बताया कि कार्यक्रम का द्वितीय सत्र गुलाराम पूनिया की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। जिसमें संस्थान अध्यक्ष सुल्तान सिंह भींचर और कोषाध्यक्ष खींवाराम ख्यालिया ने सदन में प्रतिवेदन पेश करते हुए विकास कार्यों का ब्यौरा दिया और वार्षिक लेखा जोखा प्रस्तुत किया। इसके उपरांत प्रतिवेदन पर बहस और प्राप्त सुझावों पर प्रति उतर पेश किया। इस अवसर पर गोविंदराम ढाका, नानूराम बिरड़ा, सांवरमल बढ़जाति,गोपीचंद खीचड़, रामेश्वरलाल सूंडा, हरबंश जानू,अर्जुनराम कुलहरि, हनुमानाराम बिड़ासरा, रामचंद्र ऐचरा, हरलालसिंह रुहेला, बनाराम पूनिया,हनुमान न्यौल, शीशपाल, सहीराम सिंवाल, महेंद्र डूडी, गणेशाराम भाकर, बिशनलाल रुलाणिया, दीपाराम खिलेरी, बलबीर सिहाग, चेतनराम ज्यानी, हरलाल डूडी, भंवरलाल बिजारणियां, राजेंद्र पूनिया, सोहनलाल बेनीवाल, भंवरलाल पूनिया, लेखूराम बलारा, सज्जन कुमार बाटड़, प्रकाश चौधरी, देवकरण सहित छात्रावास के विद्यार्थी और समाज जन उपस्थित रहे। संचालन अधीक्षक शुभकरण नैण ने किया।

सभापति ने किया अन्नपूर्णा रसोई व रैन बसेरे का औचक निरीक्षण

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के रेलवे स्टेशन के पास स्थित रैन बसेरे और अन्नपूर्णा रसोई का गुरुवार को नगरपरिषद सभापति राजकरण चौधरी ने औचक निरीक्षण किया। इस दौरान अन्नपूर्णा रसोई में बन रहे खाने के बारे में सभापति चौधरी ने विस्तार से जानकारी ली और खाने की जांच की। इस दौरान अन्नपूर्णा रसोई में बन रहा खाना पूरी तरह से सही पाया गया। जिसको लेकर सभापति राजकरण चौधरी ने अन्नपूर्णा रसोई संचालक की सराहना की। यहां पर संचालित रैन बसेरे का भी औचक निरीक्षण किया। जहां पर यहां के कर्मचारियों की खामियां पाई गई। इस दौरान सभापति को शिकायत मिली कि रैन बसेरे के कर्मचारी रैन बसेरे के बाहर लगी पीने के पानी की सप्लाई को बंद कर देते हैं। जिससे लोग पानी पीने से वंचित रहते हैं। सभापति राजकरण चौधरी ने कहा कि हमने अन्नपूर्णा रसोई और रैन बसेरे का औचक निरीक्षण किया है। इस दौरान अन्नपूर्णा रसोई पूरी तरह से सही पाई गई है। वहीं रैन बसेरे के कर्मचारियों की कुछ खामियां मिली है। जिसको लेकर नगरपरिषद आयुक्त से वार्ता कर इन कर्मचारियों को बदला जाएगा। नगरपरिषद सभापति राजकरण चौधरी ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा संचालित अन्नपूर्णा रसोई में 8 रुपये में सम्मानपूर्वक बैठाकर स्वादिष्ट खाना खिलाया जा रहा है। उन्होंने अन्नपूर्णा रसोई के ठेकेदार की तारीफ करते हुए कहा कि खाने को लेकर किसी भी प्रकार की कोई शिकायत नहीं है। स्वच्छ और स्वादिष्ट खाना यहां पर मिल रहा है। इस अवसर पर नगरपरिषद जेइएन सीताराम मीणा और अन्य कर्मचारी भी मौजूद रहे।

अभिरुचि शिविर में सिखाए आत्मरक्षा के गुर

बालिकाओं को आत्मरक्षा की दी जानकारी

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड स्थानीय संघ के तत्वाधान में संचालित 45 दिवसीय ग्रीष्मकालीन अभिरुचि व कौशल विकास प्रशिक्षण शिविर में बालिकाओं को आत्मरक्षा के गुरु सिखाएं। मार्शल आर्ट व सेल्फ डिफेंस के कोच अमित वर्मा व पूनम वर्मा ने संभागियों को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण दिया और विभिन्न प्रकार से स्वयं की रक्षा करने के उपाय बताएं। इस अवसर पर संघ के सचिव बाबूलाल स्वामी ने कहा कि आत्मरक्षा का प्रशिक्षण सभी को लेना चाहिए। इससे व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थिति में अपनी रक्षा कर सकता है। शिविर में प्रशिक्षक के इंदुबाला वर्मा, ज्योति शर्मा, ललिता जेदिया, मदन सिंह रायका, सुरेश कुमार घोटड़, संतोष स्वामी, चुकी देवी, हिमांशु चौहान आदि प्रशिक्षकों की ओर से विभिन्न विषयों जैसे ब्यूटी पार्लर, इंडोर गेम्स, सिलाई, मेहंदी, डांस, संगीत आदि का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के नव निर्वाचित पदाधिकारियों ने ली पद व गोपनियता की शपथ

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। स्थानीय तेरापंथ भवन में आचार्य महाश्रमण की सुशिष्या साध्वी मंगल प्रभा ठाणा-चार के सानिध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा चूरू की नवगठित कार्यकारीणी का शपथ ग्रहण समारोह गुरूवार को समारोह पूर्वक आयोजित किया गया। तेरापंथ सभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष छतरसिंह डागा ने बताया कि नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। सर्वप्रथम सभा गीत व श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया गया। इस दौरान महिला मंडल की ओर से मंगलाचरण की प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर शांतिपूर्ण व

निष्पक्ष चुनाव करवाने पर चुनाव अधिकारी ताराचंद बांठिया व सुरेंद्र कोठारी का आभार व्यक्त करते हुए नवगठित कार्यकारिणी की घोषणा की गई। इस दौरान नव निर्वाचित अध्यक्ष छतरसिंह डागा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष दिलीप राज दूगड़, उपाध्यक्ष श्रवण कोठारी, मंत्री शांतिलाल कोठारी, सह मंत्री प्रकाश कोठारी, संगठन मंत्री राकेश कोठारी, कोषाध्यक्ष राजकुमार कोठारी, कार्यकारिणी सदस्य सौरभ कोठारी, संजय कोठारी, जयसिंह बैद, विनोद लूणियां, कमल सिंह कोठारी, शांतिलाल पारख, नरेंद्र बच्छावत, देवरतन पारख आदि पदाधिकारियों को निवर्तमान अध्यक्ष नरेन्द्र कोठारी व तेरापंथी महासभा के बीकानेर अंचल के प्रभारी राजेश बांठिया ने पद एवं गोपनियता की शपथ दिलाई। इस अवसर पर डॉ. मांगीलाल श्यामसुखा, पूर्व सभापति गोविंद महनसरिया, अणुव्रत समिति की अध्यक्ष रचना कोठारी, श्याम सुंदर शर्मा, प्रो. कमल कोठारी ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष व कार्यकारिणी को शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम में साध्वी समप्रभा ने गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी मंगलप्रभा ने नवगठित टीम को गुरूदृष्टि के अनुसार संघ हित में व समाज हित में कार्य करने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर डॉ. प्रेम प्रकाश गोयल, डॉ. एफ.एच. गौरी, डॉ. शिल्पा गोयल, एडवोकेट गुलाब नबी गौरी, ओम प्रकाश तंवर, राजेश स्वामी, गुरूदास भारती, उमाशंकर बहड़, शिव कुमार चौमाल सहित शहर के अनेक लोग उपस्थित रहे। नवनिर्वाचित अध्यक्ष छतरसिंह डागा ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन राजेश बांठिया ने किया।

सौ दिन में सुधार के लिए चुनाव आयोग ने की पहल

चुनाव प्रक्रिया और मतदाता सुविधा को मजबूत करने के लिए कर रहा ईसीआई कवायद

जयपुर टाइम्स/नई दिल्ली। मतदाता अनुभव को बेहतर बनाने और चुनाव प्रबंधन को सुव्यवस्थित करने की दिशा में एक बड़े प्रयास के तहत भारत निर्वाचन आयोग (ईसीआई) ने पिछले 100 दिनों में 21 नई पहलों की शुरुआत की है। ये पहलें प्रक्रियात्मक सुधारों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और हितधारकों के साथ सहभागिता तक फैली हुई हैं। यह अवधि मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के कार्यभार ग्रहण करने के बाद के पहले 100 दिनों में रचनात्मक, व्यावहारिक और सक्रिय उपायों की रही है। चुनाव आयुक्त डॉ. सुखबीर सिंह संधू और डॉ. विवेक जोशी की उपस्थिति में मार्च 2025 में आयोजित मुख्य निर्वाचन अधिकारी सम्मेलन के दौरान ईसीआई के नए दृष्टिकोण की रूपरेखा प्रस्तुत की गई थी।

प्रमुख सुधार

मतदाताओं की सुविधा बढ़ाने के लिए, एक मतदान केंद्र पर अधिकतम मतदाताओं की संख्या 1500 से घटाकर 1200 कर दी गई है। घनी आबादी वाले क्षेत्रों जैसे ऊंची इमारतों और कॉलोनियों में अतिरिक्त मतदान केंद्र स्थापित किए जाएंगे। ECI का लक्ष्य है कि वोट डालने के लिए कोई भी मतदाता 2 किमी से अधिक दूरी तय न करे। मतदाता सूचना पर्चियों (Voter Information Slips) को अब और स्पष्ट बनाया गया है, जिसमें क्रम संख्या और भाग संख्या प्रमुखता से प्रदर्शित होगी। प्रत्येक मतदान केंद्र के प्रवेश द्वार पर मोबाइल जमा सुविधा (Mobile Deposit Facility) शुरू की जाएगी। उम्मीदवारों की ओर से लगाए जाने वाले बूथ अब मतदान केंद्र के प्रवेश द्वार से 100 मीटर की दूरी पर लगाए जा सकेंगे, पहले यह सीमा 200 मीटर थी।

डिजिटल और प्रौद्योगिकी सुधार

ECINET नामक एकीकृत डैशबोर्ड विकसित किया गया है, जिससे सभी सेवाएं एक ही मंच पर मिल सकेंगी। इससे 40 से अधिक ऐप्स और वेबसाइटों की आवश्यकता समाप्त होगी। कुछ मॉड्यूल वर्तमान उप-चुनावों में उपयोग के लिए उपलब्ध होंगे और बिहार विधानसभा चुनाव तक यह पूरी तरह लागू हो जाएगा। मृत्यु पंजीकरण डेटा को भारत के रजिस्ट्रार जनरल से सीधे जोड़ा गया है, जिससे मृत मतदाताओं के नाम समय पर और सत्यापित रूप से हटाए जा सकें। E-Office प्रणाली चालू कर दी गई है और मुख्यालय में बायोमेट्रिक उपस्थिति की शुरुआत हुई है।

मतदाता सूची और प्रशिक्षण

उप-चुनाव से पहले विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण (Special Summary Revision) किया गया, जो कि RP अधिनियम, 1950 के तहत पहली बार हुआ है। 28 विभिन्न हितधारकों की पहचान की गई है और उनके लिए विशेष प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार किए जा रहे हैं। Booth Level Officers (BLOs) और उनके पर्यवेक्षकों के लिए व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। अब तक 3,500 से अधिक BLOs/BLO Supervisors को IIIDEM में प्रशिक्षण दिया जा चुका है। आगामी 45 दिनों में लगभग 6,000 BLOs/Supervisors को 20 बैचों में प्रशिक्षित किया जाएगा। एक लाख BLO Supervisors को आने वाले वर्षों में प्रशिक्षित करने का लक्ष्य है। सभी BLOs को मानकीकृत फोटो पहचान पत्र दिए जाएंगे।

राजनीतिक सहभागिता

ECI ने देश भर में 4,719 सर्वदलीय बैठकें आयोजित की, जिनमें 28,000 से अधिक राजनीतिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इनमें CEO स्तर पर 40, DEO स्तर पर 800 और ERO स्तर पर 3,879 बैठकें शामिल हैं। दिल्ली में AAP, BJP, BSP, CPI(M), NPP जैसी पार्टियों के साथ बैठकें की गईं। अन्य राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय पार्टियों के साथ बैठकें उप-चुनावों के बाद होंगी। मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के Booth Level Agents (BLAs) को भी IIIDEM में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। बिहार, तमिलनाडु और पुडुचेरी के प्रारंभिक बैचों को प्रशिक्षण मिल चुका है।

अन्य सुधार

CEO कार्यालयों के मीडिया अधिकारियों के लिए उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं, जिससे सार्वजनिक संचार की गुणवत्ता में सुधार हो सके। बिहार के पुलिस अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए गए हैं, जिससे बहु-एजेंसी समन्वय मजबूत हो। ECI मुख्यालय और राज्यों के CEOs के बीच नियमित समीक्षा बैठकें शुरू की गई हैं, जिससे आंतरिक समन्वय और संचालन दक्षता में वृद्धि हो।

कानूनी सुधार

ECI के वकीलों और राज्यों/Ts के CEOs की राष्ट्रीय कान्फ्रेंस का आयोजन IIIDEM, नई दिल्ली में किया गया। इसमें सुप्रीम कोर्ट और 28 उच्च न्यायालयों के वरिष्ठ अधिवक्ता तथा देशभर के 36 CEOs शामिल हुए।
इसका उद्देश्य कानूनी ढांचे को नए चुनावी चुनौतियों के अनुरूप तैयार करना है।
भारत निर्वाचन आयोग की ओर से शुरू की गई 21 नई पहलें (19 फरवरी 2025 - 29 मई 2025)
प्रत्येक मतदान केंद्र पर अधिकतम मतदाता सीमा को 1200 तक सीमित किया गया
ऊंची इमारतों/कॉलोनियों में अतिरिक्त मतदान केंद्र
मृत मतदाताओं के नाम हटाने के लिए RGI डेटा का प्रत्यक्ष एकीकरण
मतदाता सूचना पर्चियों को अधिक उपयोगकर्ता अनुकूल बनाना
मतदान केंद्रों के बाहर मोबाइल जमा सुविधा
पूरे भारत में CEO/DEO/ERO स्तर पर सर्वदलीय बैठकें - कुल 4,719 बैठकें
राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय राजनीतिक दलों के नेताओं के साथ बैठकें
मान्यता प्राप्त दलों के BLAs के लिए IIIDEM में प्रशिक्षण
उम्मीदवारों के प्रचार बूथों की दूरी 200 मीटर से घटाकर 100 मीटर
ECINET - सभी सेवाओं के लिए एकीकृत डैशबोर्ड

चूरू के कुमार अजय प्रसार के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर निर्विरोध निर्वाचित

डॉ. हरिशंकर आचार्य बने अध्यक्ष, अभय सिंह होंगे महासचिव

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) पब्लिक रिलेशंस एंड एलाईड सर्विसेज एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (प्रसार) की कार्यकारिणी के चुनावों के बुधवार को घोषित परिणाम के अनुसार घांघू (चूरू) के कुमार अजय वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर निर्विरोध निर्वाचित घोषित किए गए हैं। निर्वाचन अधिकारी आलोक आनंद व मोहित जैन के मुताबिक, सूचना व जनसंपर्क विभाग के कर्मियों के संगठन 'प्रसार' के अध्यक्ष पद पर डॉ. हरिशंकर आचार्य, वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर कुमार अजय, क्षेत्रीय उपाध्यक्ष पद पर धर्मेंद्र कुमार मीना, मुख्यालय उपाध्यक्ष पद पर चंद्रशेखर पारीक, महासचिव पद पर अभय सिंह और संयुक्त सचिव पद पर अंजलिका पंवार निर्विरोध निर्वाचित हुए हैं। चुनाव प्रक्रिया पूर्ण पारदर्शिता और निष्पक्षता के साथ संपन्न हुई। निर्वाचन प्रक्रिया के उपरांत, प्रसार चुनाव कार्यालय ने सभी निर्वाचित पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई दी और उन्हें संगठन के विकास व सुचारु संचालन में सक्रिय योगदान देने का आह्वान किया। साथ ही सभी सदस्यों व पदाधिकारियों से अनुरोध किया गया कि वे मिलकर प्रसार को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए काम करें। उल्लेखनीय है कि घांघू के कुमार अजय वर्तमान में सूचना व जनसम्पर्क विभाग मुख्यालय में उप निदेशक पद पर पदस्थापित हैं।

राज्य सरकार मनाएगी अहिल्याबाई होल्कर की 300 वीं जयंती

जयपुर(कासं.)। राज्य सरकार अहिल्याबाई होल्कर की 300वीं जयंती के उपलक्ष्य में महिला सशक्तीकरण को समर्पित कार्यक्रम आयोजित करने जा रही है। इस अवसर पर 31 मई को आर.आई.सी. ऑडिटोरियम में आयोजित होने वाले कार्यक्रम में केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जगत प्रकाश नड्डा शामिल होंगे। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को मुख्यमंत्री निवास पर आयोजित बैठक में अहिल्याबाई होल्कर की 300वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित होने वाले कार्यक्रम के संबंध में दिशा-निर्देश प्रदान किए। उन्होंने कहा कि अहिल्याबाई होल्कर ने सोमनाथ और काशी विश्वनाथ मंदिरों का पुनर्निर्माण कराया, जिससे भगवान शिव के प्रमुख ज्योतिर्लिंगों की पुनर्स्थापना हुई। उनके द्वारा महिला शिक्षा और महिला सशक्तीकरण की दिशा में किए गए कार्यों से प्रेरणा लेकर राज्य सरकार भी आधी आबादी को सशक्त करने के लिए कल्याणकारी योजनाएं संचालित कर रही हैं। उल्लेखनीय है कि अहिल्याबाई होल्कर की जयंती पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम में 150 कालिका यूनिट को हरी झण्डी दिखाई जाएगी। इसके बाद लाडो प्रोत्साहन योजना के तहत 32 हजार 755 बालिकाओं को प्रत्यक्ष राशि हस्तान्तरित की जाएगी।

बुड़ाना में गांव में रास्ता खुलवाने पहुंचे अधिकारियों को जमकर पीटा

राजकार्य में बाधा का मामला दर्ज, पुलिस की मौजूदगी में रास्ता शुरू करवाना पड़ा

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। बगड़ थाना क्षेत्र के बुडाना गांव में बुधवार को उस समय हंगामे की स्थिति बन गई जब रास्ता खुलवाने पहुंचे नायब तहसीलदार और गिरदावर के साथ कुछ लोगों ने मारपीट कर दी। इस मामले में नायब तहसीलदार अभिषेक मीणा ने बगड़ थाने में शिकायत दर्ज करवाई है, जिसमें राजकार्य में बाधा डालने, मारपीट करने और जाति सूचक गालियां देने का आरोप लगाया गया है। पुलिस ने संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

खाई खोदकर किया अतिक्रमण

बुडाना से कासिमपुरा की ओर जाने वाला एक कटानी (कच्चा) रास्ता ग्रामीणों की आवाजाही के लिए काफी समय से उपयोग में लिया जा रहा है। लेकिन हाल ही में कुछ लोगों की ओर से इस रास्ते पर खाई खोदकर अतिक्रमण कर दिया गया, जिससे ग्रामीणों की आवाजाही में भारी परेशानी होने लगी। इस संबंध में स्थानीय ग्रामीणों ने तहसील प्रशासन से शिकायत की थी, जिस पर कार्रवाई करते हुए 1 मई को रास्ता खुलवाया गया था। लेकिन कुछ दिन बाद ही एक बार फिर अज्ञात लोगों ने रास्ते को खाई खोदकर अवरुद्ध कर दिया।

सरकारी कर्मचारियों से मारपीट का आरोप

नायब तहसीलदार अभिषेक मीणा के अनुसार, विरोध कर रहे लोगों ने पहले गाली-गलौज की और फिर उनके साथ धक्का- मुक्की करते हुए मारपीट की। इस दौरान गिरदावर राजेश कुमार के साथ भी मारपीट की गई। काफी देर तक हंगामा चलता रहा, जिससे प्रशासनिक कार्य में बाधा उत्पन्न हुई। स्थिति को नियंत्रण में लाने के लिए पुलिस को सूचना दी गई, जिसके बाद पुलिस बल मौके पर पहुंचा और उनकी मौजूदगी में रास्ता खुलवाया गया।

रास्ता खोलने का विरोध करने लगे

प्रशासन की ओर से दोबारा रास्ता दुरुस्त कराने के लिए बुधवार दोपहर नायब तहसीलदार अभिषेक मीणा के नेतृत्व में एक टीम बुडाना गांव भेजी गई। इस टीम में गिरदावर अमीलाल, पटवारी मंजू और वाहन चालक अनिल चाहर शामिल रहे। टीम ने एक लोडर मशीन की मदद से रास्ते को ठीक करवाने का काम शुरू किया। इसी दौरान कुछ महिलाएं और पुरुष वहां आ पहुंचे और रास्ता खोलने का विरोध करने लगे।

थाने में कराई एफआईआर दर्ज

हंगामे और हमले के बाद नायब तहसीलदार ने बगड़ थाने में दया सिंह, प्रदीप कुमार और सुरेश कुमार के खिलाफ मामला दर्ज करवाया। दर्ज एफआईआर में आरोप लगाया गया कि आरोपियों ने न केवल रास्ता अवरुद्ध किया, बल्कि सरकारी कार्य में बाधा डालते हुए जाति सूचक अपशब्द कहे और शारीरिक रूप से हमला किया। तहसीलदार महेंद्र मूंड ने कहा कि ग्रामीणों की शिकायत पर पहले भी रास्ता खुलवाया गया था। लेकिन कुछ लोगों ने पुनः अतिक्रमण कर रास्ते को अवरुद्ध कर दिया। ऐसे मामलों में प्रशासन सख्ती से कार्रवाई करेगा और दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा।

10 वीं बोर्ड परीक्षा में गाजुवास की बेटी हंसिका सहारण राजस्थान टॉपर

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। तारानगर के निकटवर्ती गाँव गाजुवास की बेटी हंसिका सहारण ने आरबीएसई 10वीं बोर्ड परीक्षा में 99.67 % अंक प्राप्त कर राजस्थान टॉप कर पूरे राजस्थान में अपने क्षेत्र का नाम रोशन किया है। छात्रा हंसिका गाजुवास की विद्या भारती उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत है, छात्रा के टॉप रहने पर विद्यालय स्टाफ की ओर से विद्यालय में सम्मान समारोह कार्यक्रम रखा गया गया जिसमें भाजपा के वरिष्ठ नेता रतनसिँह राठौड़, सीबीइओ बबलेश शर्मा सहित शिक्षा विभाग व ग्रामीणों ने छात्रा का साफा पहनाकर सम्मान किया। पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र सिँह राठौड़ ने वीसी के माध्यम से छात्रा हंसिका को बधाई दी व उज्जवल भविष्य की कामना की। संस्था प्रधान ओमप्रकाश सहारण ने इसका श्रेय माता पिता व विद्यालय स्टाफ की मेहनत को दिया है। सहारण ने बताया कि विद्यालय की कक्षा 10 के कुल 53 परीक्षार्थी परीक्षा में बैठे थे, जिसमें 16 बच्चे 90 प्रतिशत से अधिक अंक लाएं है। इस प्रकार 10 वीं का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। अतिथियों ने सभी को माला पहनाकर सम्मानित किया और बधाई दी। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए सीबीईओ बबलेश कुमार ने कहा कि साधना और परिस्थितियाँ किसी भी परिणाम को प्रभावित नहीं कर सकते है लग्न, मेहनत और आसपास का माहौल बहुत महत्वपूर्ण होता है। कार्यक्रम को सम्बोधित करते रतन सिह राठौड़ ने कहा कि एक छोटे से गाँव की बेटी ने पूरे राजस्थान में तारानगर का नाम रोशन किया है, विद्यालय स्टाफ ने अथक प्रयास किया है और तारानगर को पूरे राजस्थान में चमकाया है। इस मौके पर बजरंग सहारण, हेमराज सहारण, महावीर सहारण, शिव भगवान, केदारमल, रामस्वरूप, सागरमल, श्रवण चारण, सुगनाराम, मनीराम, रामलाल, विनोद, मुकेश, सुरेश, प्रदीप, सुशीला सहित कई लोग उपस्थित रहे। कृष्ण कुमार सुथार ने कार्यक्रम का संचालन किया।

इंडाली ग्राम पंचायत का है मामला

सवा करोड़ रुपए गबन मामले में सरपंच नानची गिरफ्तार

सिंगल ओटीपी से ट्रांजैक्शन किए थे मंजूर

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। जिले की इंडाली ग्राम पंचायत में हुए सवा करोड़ रुपए के गबन मामले ने तूल पकड़ लिया है। इस मामले में पंचायत की वर्तमान सरपंच नानची देवी पत्नी सज्जन कुमार को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। यह कार्रवाई ग्राम विकास से जुड़े फंड के अनियमित भुगतान के गंभीर आरोपों के तहत की गई है। पुलिस थानाधिकारी चंद्रभान सिंह चौधरी ने जानकारी देते हुए बताया कि 18 फरवरी 2025 को पंचायत समिति के विकास अधिकारी करणीराम जाट निवासी हेजमपुरा ने इस घोटाले की रिपोर्ट दर्ज कराई थी।

सिंगल ओटीपी से मंजूर किए ट्रांजैक्शन

रिपोर्ट के अनुसार ग्रामीण विकास व पंचायती राज विभाग, जयपुर की ओर से ई-पंचायत पोर्टल प्रभारी से निर्देश प्राप्त होने के बाद एक जांच कमेटी का गठन किया गया। इस कमेटी की ओर से की गई जांच के आधार पर यह चौंकाने वाला मामला सामने आया। जांच रिपोर्ट में बताया गया कि ग्राम पंचायत इण्डाली के ग्राम विकास अधिकारी पीयूष भारद्वाज के कार्यालय से कुल 605 भुगतान फर्जी संविदा कर्मचारियों और वेंडर्स के नाम पर किए गए थे। ये सभी भुगतान एक ही मोबाइल नंबर के सिंगल ओटीपी से मंजूर किए गए थे, जिससे इस फर्जीवाड़े की पुष्टि होती है।

घोटाले में मिलीभगत आई सामने

जांच में सामने आया कि इन फर्जी भुगतानों के जरिए करीब 90 लाख 74 हजार रुपए अनधिकृत व्यक्तियों के खातों में ट्रांसफर किए गए। गौरतलब है कि पंचायत स्तर पर किए गए सभी भुगतानों में सरपंच और सचिव के संयुक्त हस्ताक्षर अनिवार्य होते हैं, जिससे यह साफ होता है कि इस घोटाले में दोनों की मिलीभगत रही है।

सरपंच को किया गिरफ्तार

पुलिस ने रिपोर्ट के आधार पर बैंक और पंचायत कार्यलय से संबंधित रिकॉर्ड जब्त किए। दस्तावेजों की छानबीन के बाद सरपंच नानची देवी को दोषी पाते हुए गिरफ्तार किया गया। इससे पहले इसी मामले में 26 मई को विकास अधिकारी पीयूष भारद्वाज पुत्र रमेशचंद्र शर्मा, निवासी सूर्यविहार कॉलोनी, वार्ड नंबर 22, झुंझुनूं को भी गिरफ्तार किया जा चुका है। एसएचओ चंद्रभानसिंह चौधरी ने बताया कि मामले की गहन जांच की जा रही है और इस घोटाले से जुड़े अन्य लोगों की भूमिका भी खंगाली जा रही है। यदि जांच में और नाम सामने आते हैं तो और गिरफ्तारियां भी संभव हैं।

स्वात्वाधिकारी, कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि., सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर में मुद्रित एवं सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर -302013 से प्रकाशित।
सम्पादक : नीतू चौधरी, सी-588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, जयपुर-302013 मो. : 7014217770, E-Mail : jaipurtimes2007@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर।